हिमालयकी गोदमें

गंगोत्री-यमुनोत्रीकी यात्राका सचित्र रोचक वर्णन

महावीरप्रसाद पोद्दार

●

१९५४

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार १९५४
मूल्य
दो रुपये

मुद्रक
जे० के० शर्मा
लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

प्राचीन कालसे हिमालय देश-विदेशोके आकर्षणका केद्र बना हुआ है, भारत तथा अन्य देशोके हजारो यात्री प्रतिवर्ष वहाके मुख्य-मुख्य स्थानोकी यात्रा करते है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गगोत्री, यमुनोत्री आदि तो इतने महान् तीर्थ माने जाते है कि इनके दर्शनके लिए बालक वृद्ध युवा नर-नारी, यहातक कि लगडे-लूलेतक, बडे उत्साहसे यात्रा करते है।

आजसे ६ साल पूर्व लेखकने गगोत्री और यमुनोत्रीकी यात्रा की थी। गगोत्री गगाका और यमुनोत्री यमुनाका उद्‌गम-स्थान है। वहा जानेका मार्ग बडा सुदर है, साथ ही बीहड भी। इस यात्राके सबधमे लेखकने अपनी पुत्र-वधूको कई पत्र लिखे थे। उन्हीको पुस्तकाकार प्रकाशित किया जा रहा है। इन पत्रोमे यात्राका क्रमबद्ध वर्णन है।

अपनी रोचक और प्रभावशाली लेखन-शैलीके लिए लेखक प्रसिद्ध है। शैलीका सुदर नमूना पाठकोको इस पुस्तकमे मिलेगा। यात्राके सजीव चित्रणके साथ उन्होने इसमे अन्य उपयोगी बाते भी दी है।

अनेक दुर्लभ चित्र देकर लेखकने पुस्तककी उपयोगितामे चार चाद लगा दिये है। इस पुस्तक से पाठकोको न केवल गगोत्री-यमुनोत्रीके विषयमे भौगोलिक जानकारी मिलेगी, अपितु विश्वके इस महान् गिरिराजके प्रति आकर्षण भी बढेगा और यात्राकी प्रेरणा मिलेगी।

अपने देशके गौरवको जाननेकी उत्सुकता देशवासियोमे बढने लगी है और शिक्षाके साथ-साथ यह उत्सुकता भविष्यमे और अधिक बढनेवाली है। आशा है, प्रकृतिप्रेमी तथा धर्म-परायण दोनो तरहके लोगोको यह पुस्तक रुचिकर होगी।

—मत्री

भूमिका

पहाडो और नदियोके प्रति मेरे मनमे सदैव एक विशेष आकर्षण रहा है। हरिद्वारकी पहली यात्रा मैने अकेले, आजसे पैतालीस साल पहले, की थी। फिर काश्मीर, मसूरी, दार्जिलिग, अल्मोडा, मिर्जापुर, नैपाल, चित्रकूट, मणिपुर, आदि कई स्थान देखनेका अवसर मिला। सन् १६२२मे मैने त्रियुगीनारायण, केदारनाथ और बद्रीनारायणकी यात्रा की, पर इन सबका वर्णन प्रकाशित करनेकी कभी मेरी इच्छा न हुई।

गगोत्री-यमुनोत्रीकी यात्राका वर्णन भी मैने प्रकाशित करनेको नही लिखा था। चलते समय अपनी भावी पुत्र-वधू कुमारी मृदुला (अब श्रीविजयादेवी)से मैने वादा किया था कि रास्तेसे पत्ररूपमें उसे इस यात्राका वर्णन लिखता रहूगा। वादेके अनुसार मै उसे पत्र लिखता रहा। वे पत्र बादको टाइप होकर एक कापीकी शक्लमे आ गये। कई मित्रोने उन्हे पढनेके बाद प्रकाशित करनेका अनुरोध किया। कुछ पत्र 'आरोग्य'मे निकले। उन्हे देखकर एक मित्र सब पत्रोको पुस्तकाकार निकालनेका आग्रह करने लगे। मै नीम राजी हुआ। अपनी पुत्रवधूसे पूछनेपर उसने मेरी मर्जीपर छोडा। इसी बीच, मेरे उक्त मित्रने, मुझे बिना सूचित किये ही, पत्रोकी पूरी कापी प्रेसमें दे दी। मुझे चुपचाप स्वीकृति देनी पडी। जिस प्रेम-भावनाने ये पत्र मुझसे लिखवाए थे, उसी प्रेमने इन्हे प्रकाशित करना भी स्वीकार कराया।

मेरी यात्राके समय भारत परतत्र था। कहते प्रसन्नता होती है कि उस यात्राका यह विवरण, पुस्तकरूपमे, आज स्वतत्र भारतमे प्रकाशित हो रहा है। पर स्वतत्रता-प्राप्तिके अनतर देशमे अनेक प्रकारके सुधार हो जानेपर भी, हिमालयके इन यात्रा-पथोमें सुधारका काम अभी बाकी ही पडा है।

आज भारतकी केंद्रीय या उत्तरप्रदेशकी सरकारके लिए यह कार्य अति सुगम है। कुछ ही लाखका खर्च है। थोडेसे श्रम और व्ययमे हिमालयके ये कई तीर्थ बहुत सुदर और सुखद बनाए जा सकते है। इससे सरकार बड़े यश और आशीर्वादकी भागी बन सकती है।

सरकार पहाडोपर मोटरोकी सडके बनानेकी अधिक कोशिश करती जान पडती है। अच्छी सडकोकी जरूरतसे इन्कार नही किया जा सकता, पर इन रास्तोमे मोटरोकी भरमार करना इन यात्राओका सारा महत्त्व और आनद खो देना है। मोटरे हो जानेके बाद उत्तरकाशी जैसे स्थानकी पवित्रता धूलमे मिल जायगी। रेल-किनारेकी काशी (बनारस) का जो हाल है, वही फिर उत्तरकाशीका हो जायगा। जिस ऋषिकेशमे पहले साधु झाडियोमे झोपडिया बनाकर भजनका आनद लेते थे वही आज सिनेमाहाउसमे बैठकर फिल्मी गानोका मजा लेते है। जहा तेज सवारी चलने लगती है वहासे पवित्रता उसी तेजीसे विदा होने लगती है।

मैने उस समय अपनी डायरीमे इन स्थानोके सुधारके सबधमे अपने कुछ विचार लिखे थे, उन्हे यहा उद्धृत करना कदाचित् अस्थानीय न होगा।

"यमुनोत्रीमे प्रवेश करते ही सर्वप्रथम गदगीके दर्शन हुए। उस तग सडकके किनारे इतना मैला पडा हुआ था कि मेरी नाक और आख दोनो भन्ना उठे। हिन्दुस्तानके इस महान् तीर्थकी यह दुर्दशा! इसका जिम्मेदार कौन है? सर्वप्रथम तो गदगी करनेवाले यात्रियोपर ही इसका दायित्व है, पर पडे-पुजारी भी इस मामलेमे कम दोषी नही है। वे यात्रियोसे सिर्फ पुजवानेके फिक्रमें ही रहते है, सफाई आदि दूसरी बातोकी कोई परवा नही करते। यमुनोत्रीसे नीचे चार मीलपर मेहतर बसता बताया गया, उसे दो महीनेके लिए यहा बसाया जा सकता है। यात्रियोसे-उसे पैसे मिल सकते है। कालीकमलीवालोको या अन्य पडोको मिलकर इसका प्रबध करना चाहिए। यदि यहा तथा मार्गके अन्य खास-खास स्थानोपर पाच-सात सेप्टिक-टैकके पाखाने बनवा दिये जाय तो लोग उसीमे पेशाब-पाखाना करेंगे, बाहर गदगी न फैलायगे।

"इन स्थानोको अति सुदर—रमणीय बनाना कठिन नही है। इन्हे सुदर और उपयोगी बनानेके लिए जनतासे लाखो रुपयेका चदा मिल सकता है।

"यमुनोत्रीकी धर्मशालाए बहुत मामूली है। यहा एक अच्छी पक्की धर्मशालाकी आवश्यकता है। उसमे १०-१२ सेप्टिक-टैकके पाखाने होने चाहिए। इससे बहुत गदगी दूर हो सकती है। २५-३० हजारकी लागतमे एक ऐसी धर्मशाला बन सकती है। गगोत्री और यमुनोत्रीके

सारे मार्गमें बीस-पचीस अच्छी धर्मशालाए बन जाय तो यात्रियोको काफी सुविधा हो सकती है। पहले नक्शे बनाकर, स्वास्थ्य और वहाके मौसम आदिका ख्याल करके ही यह काम होना चाहिए। धर्मशालाओंके अदर ही झरनोसे पानी लाया जा सकता है। सुविधाके साथ-साथ, इससे पूरी सफाई रहेगी। एक ही शहर या तीर्थमे धर्मशाला-पर-धर्मशाला बनवाते जानेवाले दानियोको इधर ध्यान देना चाहिए।

"यहा बनाई जानेवाली धर्मशालाके शहरी ढगकी होनेकी जरूरत नही है। सामान भी इनमे अधिकतर स्थानीय ही लगना चाहिए। यहा न लकडीका अकाल है, न पत्थरोका। दोनोका ही घर है हिमालय। मजदूर भी यहा काफी मिलते है। यहाके गरीब और सीधे पर्वत-निवासियोको काम मिलनेकी बडी आवश्यकता है।

"रास्तेके टूटे हुए पुलो और सडकोका सुधार भी होना आवश्यक है। आज तो सडके, धर्मशालाए और पुल सब उपेक्षित दशामें है।"

मुझे इस पुस्तककी तैयारीमे जिन मित्रोसे सहायता मिली, यहा उनके प्रति मै अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हू। खास तौरसे, कलकत्ताके श्री एन० एन० बनर्जी महाशयके प्रति कि जिन्होने इन दोनो यात्राओमे बडे परिश्रमसे लिये हुए अपने कुछ चित्रोका उपयोग इस पुस्तकमे करनेकी मुझे सहर्ष आज्ञा प्रदान की। दूसरे सज्जन, कलकत्ताके श्रीउमाप्रसाद मुखर्जी बार-ऐट-ला है, उन्होने भी चित्र देनेमे बडी उदारता दिखाई है। दोनो महानुभावोकी सदाशयताका मै अत करणसे कृतज्ञ हू। अन्य सहायक तो मेरे इतने निकटके है कि उन्हे धन्यवाद दू तो वे अपनेको पराया समझनेका दोष मुझपर लगा सकते है। हृदयसे तो मै उन सबका कृतज्ञ हू ही।

मै समझता हू कि गगोत्री-यमुनोत्रीकी यात्रा करना चाहनेवाले भाई घरसे निकलनेके पूर्व यदि इस पुस्तकको आद्यत पढ लेनेकी कृपा करेंगे तो उन्हे विशेष लाभ होगा। इससे उन्हे अनेक आवश्यक बातोकी जानकारी हो जायगी।

आरोग्य भवन
जमींडीह
दीपावली २०११

—महावीरप्रसाद पोद्दार

विषय-सूची

चित्र-सूची

●

हिमालयकी गोदमें

: १ :

यात्राकी योजना और साथी

इस बार कलकत्तामे श्री नर्वदाप्रसादजीने कहा, "कई सालसे गगोत्री चलनेकी बात चलती है, चलिए, इस बार हो आवे।" मैने बात मान ली।

यात्राके लिए हम दोका साथ तो निश्चित था ही, मै एककी आवश्यकता और अनुभव कर रहा था। भाई मोहनलाल गोयनकाको (बाकुडा) लिखा। वह तैयार हुए, पर ऐन वक्तपर जरूरी काममे फँस जानेके कारण साथ न दे सके।

श्रीनर्वदाप्रसादजी ५ जून सन् '४५ को सुबह गोरखपुर पहुच गये। साथ लेनेवाले सामानकी सूची बनने लगी। बिल्कुल काटे-तौल सामान लेना चाहते थे, न ज्यादा हो कि ढुलाई-मे मुफ्त पैसे लगे, खोए और खराब हो, न इतना कम कि अभावमे रास्तेमे तकलीफ उठानी पडे। वहा गये हुए एक भाईसे पूछा, कुछ अनुमान किया और यात्राकी पोथीमेसे देखकर सामानकी एक सूची बना ली और उसके अनुसार सब चीजे ले ली। सामानमे न कोताही की, न उदारता। हम दोनोका सब सामान लगभग डेढ मन हुआ। खाना बनाने तथा अन्य कामोके लिए

श्रीनर्वदाप्रसादजी लाठ

एक नौकर लिया। रामबली नाम था।
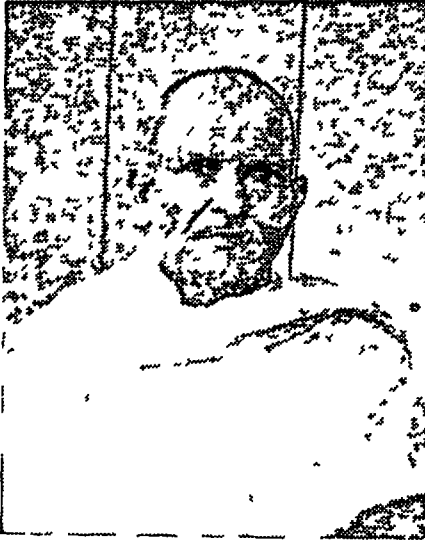
१९१८के आसपास 'हिन्दी पुस्तक-एजेंसी' के सिलसिलेमे मै कलकत्ता गया था। उसी समय वहा एक 'ज्ञान-वर्द्धिनी सभा' स्थापित हुई थी। हम सब वहा इकट्ठे होकर कुछ विषयोपर चर्चा और बहस किया करते थे। सवेरे कुछ लोग मैदानमें खेलने और व्यायाम करने भी जाते। श्रीनर्वदाप्रसादजी इन सब कामोमे बड़े उत्साहसे भाग लेते थे। तभीसे इनसे मेरी दोस्ती जमी। परिचय तो बहुतोसे हुआ उस समय, पर इनके उत्साह, साथ ही निष्कपट व्यवहारने मुझे विशेष आकर्षित किया।

हम दोनोने कई जगहोकी—राजपूताना, मद्रास, बिहार आदिकी—यात्राए साथ-साथ की। यह हिसाबी है, चौकस है, सफरमें कोई चीज भूलते-छोडते नही, बहुत सावधान रहते है। बातोमे बहुतेरे अपनेको ही प्रधानता देनेवाले होते है, पर यह ऐसे नही है। ऐसा साथी पाकर अपनेको कौन सौभाग्य-वान न समझेगा!

: २ :

प्रस्थान

८–६–४५

हम सेकड क्लासमे सीट रिजर्व कराकर लखनऊ आनेवाले थे, पर उसमे जगह न होनेसे सामान इटरमे रखाकर वहां नौकर-को विठाया और हमने थर्ड क्लासके एक डिव्वेमे जगह वनाई। लोग कहते थे, यह मिलिटरीवालोके लिए रिजर्व है, पर अंततक किसी मिलीटरीवालेके न आनेपर रेलवालोसे पूछकर हमने उसमें दखल जमा लिया। थर्डकी पटरी चौड़ाईमे कम होनेपर भी, हम लोग उसपर आरामसे लेट गये। सवेरे, वक्तसे लखनऊ पहुंच गये। सेकंड क्लासके वेटिंगरूममे डेरा डाला। शौच-स्नानसे मैं निवृत्त हुआ ही था कि श्रीगोपीनाथजी धावन आ गए। इन्हे पहले पत्र डाल दिया था। धावनजी लखनऊ यूनिवर्सिटीमे राजनीतिके प्रोफेसर है। गाधीजीकी फिलासफीपर निवध लिखकर 'डाक्टरेट' पाया है। अति सरल, निरभिमानी, गांधीवादी और वेहद प्रेम-परायण व्यक्ति है। मेरे कई घटे इनके साथ आनंदसे बीते।

हम लोगोने भोजन गोरखपुरवासी—अभी लखनऊ-प्रवासी—श्रीमोतीलाल श्यामसुंदर जालानके यहां किया। श्रीनर्वदाप्रसादजी 'पंच सरीखे कीजे काज' करके हरिद्वारतकके लिए सेकडकी दो सीटे रिजर्व करा लाये। निश्चितता हो गई। रेलमे आरामसे सोए।

गोरखपुर-लखनऊके बीच चार-पाच मुसलमान लडके हमारे डिब्बे मे चढे थे। मै तब अर्धनिद्रित-सा था। वे पानीवालेको पुकार रहे थे, पर कोई मिल नही रहा था। जान पडता था, बहुत ही प्यासे है। एकने कहा, "या अल्ला, कहीसे पानी मिल जाता!" अल्लाने मेरे मनमे प्रेरणा की, अल्ला खुद तो अकर्ता ही है, प्रेरणामात्र ही करता है। मैने कहा, "लो पानी।" बडा लोटा खाली किया। सुराहीमे जो थोडा पानी था, रहने दिया। थोडी देरके बाद मालूम हुआ कि उनमेसे एकको पानी पूरा नही पडा। तब मैने नर्वदाप्रसादजीसे पूछा कि सुराहीमेका पानी दे दू? बोले, "थोडा-सा रखकर दे दीजिए।" उन चार लडकोको पानी देकर मनको एक प्रकारका सतोष हुआ। लडके शब्दोमे तो नही बोले, पर मुखाकृतिसे उन्हे भी सतोष हुआ जान पडा।

ऐसी ही एक चीज कल शामको हुई। हम लोगोके डिब्बेमे एक परिवार मसूरीके लिए सफर कर रहा था। पति-पत्नी और उनके पाच बच्चे—१२ वर्षसे लेकर ४ वर्षतकके। एक बच्चा जो बडा तेज और निर्भय था, हम लोगोको, खाते समय, खडा-खडा देख रहा था, खरबूजेकी ओर इशारा करके बोला, "मै लूगा।" मैने एक दिया। फिर यह सोचकर कि भला एकमे पाचको क्या होगा, जो दो और थे, वे भी दे दिए और साथ काटनेको चाकू भी। इतनेसे ही, उस परिवारसे हमारी दोस्ती हो गई। थोडी देर बाद उस लडकेसे बडी लडकीने, जो हमारी सीटपर आकर बैठ गई थी, पूछा, "आम आपने क्या भाव लिये?" मैने कहा, "चार-चार पैसे। पर तुम लो तो हम एक-एक पैसा नफा

लेकर बेचनेको तैयार है!" फिर मैने पाच-छ आम निकालकर उसे दिये। बच्चोकी मा बोली, "आप लोग क्या खायँगे?" मैने कहा, "हम लोगोकी आवश्यकता तो पूरी हो चुकी है।" इसके बाद उनमेसे तीन बच्चे ऊपर मेरी सीटपर जा सोये। यह मुझे अखरा। मैने मनमे कहा कि दोस्तीका यह अच्छा फल मिला कि सीट भी हाथसे गई! मनमे द्विविधा-सी हुई कि हम तो दोस्ती करके ठगाए ही। साथीने कहा, "घटे दो घटे देखा जाय, फिर कहना होगा।" यह भी सोचा कि ऐसे गवार तो नही होने चाहिए। नौ बजेके लगभग मालूम हुआ कि सभ्य प्राणी है, हम लोग व्यर्थ सशयमे थे। उन्होने अपनी दो सीटोके बीच तथा इधर-उधरकी जगहमे अपनी बानर-सेनाको जचा दिया। बच्चोको ऊपरकी सीटसे ले लिया। मैने कहा, एक बच्चेको चाहे तो मेरी सीटपर रहने दे। वह तेज बच्चा ऊपर आ गया। तीन बजे तक मेरे पास सोता रहा। मेरी नीद खुलनेपर उसके पिताने कहा, "आपको तकलीफ होती होगी, नीचे दे दीजिए।" मैने देखा कि एक समयकी थोडी-सी सहायता भी अधिक लगती है। वैसे भी, रेल आदिमे, सफरमे किसीके साथ हृदयसे हम थोडा भी सद्व्यवहार करे तो वह अधिक कृतज्ञ होता है। कुछ करनेका दिखावा तो नकली काम है। मनसे करनेकी इच्छा रखे तो हमारे हाथसे कुछ-न-कुछ बन जाता है। हमे परके लिए हमेशा कुछ करनेकी भावना रखनी चाहिए, अपने लिए राम सोचेगा—अर्थात् दूसरोके अदर बैठा हुआ राम।

: ३ :

हरिद्वार

९-६-४५

गाड़ी एक घटा लेट होनेसे हरिद्वार सवेरे आठ वजे पहुंचे। घरसे चले तो हम समझते थे कि यात्राके लिए देर हो गई, गोरखपुरमे कोई-कोई यह कहता भी था। पर वद्रीनारायण जानेवाले पचासो यात्री रेलसे हमारे साथ उतरे। इससे पता चला कि हमे देर नही हुई थी।

यात्रियोमे मारवाडी काफी थे। सख्यामे मर्दोसे स्त्रिया अधिक थी। स्त्रियोमे तीर्थोकी भावना कुछ अधिक रहती है। उन्हे तीर्थके नामपर ही कुछ घूमने-फिरनेकी आजादी मिलती है। अधेड उम्रकी स्त्रियोकी सख्या अधिक दिखाई दी। पुरुष भी ५०-५५ की उम्रके लगभग। एकाध युवक भी दिखाई दिये। किसी-किसी दलमे नई वहू भी। यदि वह नही मानती तो मजवूरन साथ ली जाती है। कई विधवा युवतिया भी होती है।

श्रीसूरजमल शिवप्रसाद झूझनूवालाकी धर्मशाला, जहां हम ठहरे थे, मुसाफिरोसे ठसाठस भरी हुई थी। हरिद्वार-की वहार गर्मियोमे ही है।

मनमे खयाल हुआ कि इन दिनो हरिद्वारमे एक एजेसी हो, जो यहा आनेवालोका और यहासे वद्रीनारायण अथवा गगोत्री

वगैरह जानेवालोका, सब प्रबंध कर दे तो कितना अच्छा हो। पहले पत्र या तार पाकर, कुली, मार्ग-दर्शक, रुपया-पैसा, सवारी, खानपान आदिका बन्दोबस्त उसके मार्फत हो जाय तो यात्रीको वडी सहूलियत हो सकती है। ऐसी एजेसिया खुद कुछ पैसे कमाते हुए, लोगोको भी थोडा लाभ पहुचा सकती है। पर होगा यह एक प्रकारका केद्रीकरण ही।

श्रीनर्वदाप्रसादजीके गाव (मडेला) के नाईसे, जो धर्मशालामे रहता था, हजामत बनवाकर, गगा नहाने निकले। मै यहां चौबीस साल पहले आया था, तबसे तो हरिद्वार अब वहुत आवाद जान पडा। धर्मशालाओकी तो कतार-सी बन गई है। एक धर्मशाला—मुहल्ला-सा ही हो गया लगता है। और भी वहुत नए मकान बने जान पड़े। देखते-दिखाते हम हरकी पैड़ी पहुचे। वहां ज्योही गोता लगाया, मन, शरीर सब हरा हो गया और हरिद्वारमे गगा-स्नानका महत्त्व समझमे आ गया। गगामे खूब नहाए और तैरे। यहा घाटपर वैठ जाओ, भिन्न-भिन्न प्रातोके हजारो नर-नारी दिखाई देगे। कोई माला फेरते, कोई ध्यान लगाए, कोई अपने मृतक माता, पिता या पत्नीके फूल गगामे डालते और कोई उन्हे पैसेके लालचसे चुनते, दिखाई देगे। यहा श्रद्धाका एक वाजार-सा लगा दिखाई पडता है।

गगा नहाकर मुझे वड़ी प्रसन्नता हुई। मै तो इधर अच्छे ठडे पानीका मजा ही भूल गया था। मेरा खयाल है कि यहा एक अच्छा प्राकृतिक चिकित्सालय हो तो हफ्ते-दो-हफ्तेमे ही काफी रोगी आराम करके घर भेजे जा सकते है। जलका नाम
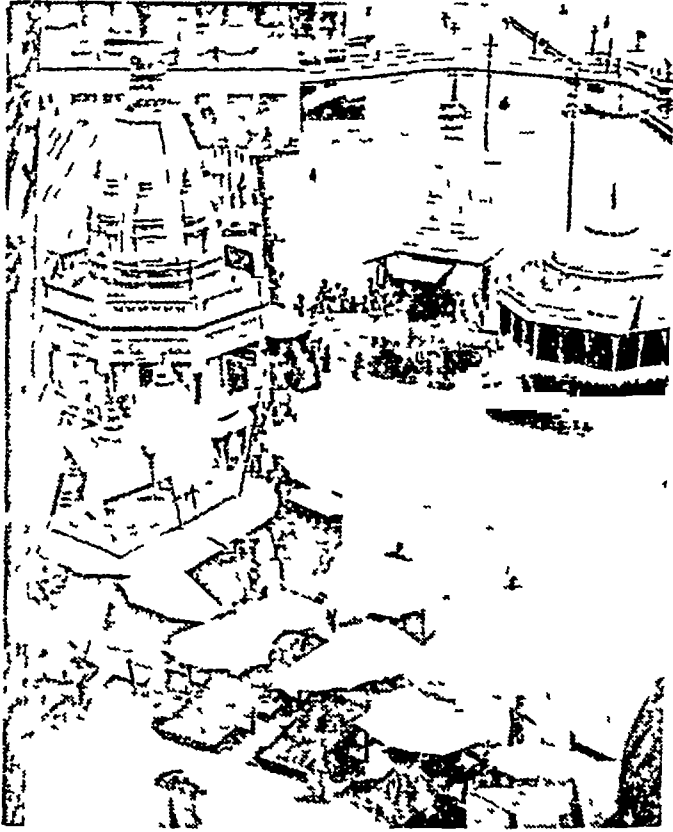
हरकी पैडी (हरिद्वार) का एक दृश्य

'जीवन' क्यो है, इसका पता यही चलता है । मेरे खयालमें, पहले जो फूल (मृतकके) चढाने आते रहे होगे, वे कुछ दिन यहा टिकते होगे, गगाके शीतल स्नानसे उनका शोक-दुख दूर हो जाता होगा । सचमुच ही गगा शोक-पाप-ताप-हारिणी है । जी नही चाहता था कि दो-चार घटे गगाके किनारेसे हटे । पर

नौकरको सामान वगैरह दिलवाना तथा भोजनका बदोबस्त करना था, इसलिए हमे जल्दी लौटना पडा। हरिद्वारका बाजार खूब लबा है। चीजे भी यहा बहुत तरहकी बिकती है। फल, तरकारियोकी तो इफरात है। कई बासे (भोजनालय) है। खाने-पीनेकी कोई दिक्कत नही है। उन बासोमे आठ आनेमे एक आदमीका पेट भर सकता है। जिन्हे फुरसत हो, साल-मे महीने दो महीने यहा रह जाना चाहिए। शुष्क पडे हुए हृदयमे बहाव आ सकता है—गगाका बहाव देखकर। यहा आकर पीडित और तना हुआ मस्तिष्क शात हो जा सकता है।

मै जब नहाकर चला, बाजारकी ओर, तो न मालूम क्यो मुझे एक हल्का नशा-सा मालूम हुआ। वह नशा मजेदार था। धर्मशालामे आकर बैठनेतक रहा। यह अधिक ठडे जलसे नहाने-का परिणाम हो सकता है।

मै पहले कई बार हरिद्वार आ चुका हू और यहाकी प्राय सस्थाए देख चुका हू। यहा दस-बीस दिन रहना हो तो अनेक यात्रियोके मजेदार वर्णन लिखे जा सकते है। धर्मशालामे तरह-तरहके यात्री है, यह तो ऊपर बतला ही चुका हू। हम लोगोको जल्दी निकलना है, इसलिए मन यात्रियोकी ओर ज्यादा ध्यान नही दे पाता।

रामबलीने इस यात्राका पहला भोजन इस समय बनाया। सब दुरुस्त, तृप्तिकर था।

हरिद्वारमे मैने तीन प्राकृतिक चिकित्सक होनेकी बात सुनी थी। सिर्फ कनखलमे श्रीटहलदासजीसे मिल पाया।

घटाभर बाते हुई । उनकी ज़बानी मालूम हुआ कि उनकी ७५ वर्षकी उम्र है। उम्रकी दृष्टिसे उनका स्वास्थ्य ठीक है। भोजन-सुधार,उपवास तथा कूनेकी जलचिकित्सा-पद्धतिपर इनका अधिक विश्वास है। आडबर-रहित है, पर ऊपरी व्यवस्थामे, इनके यहा थोडी शिथिलता दिखाई दी। यहा चिकित्सा छ महीने ही चलती है। जाडेके दिनोमे यह बाहर दिल्ली वगैरहकी ओर चले जाते है।

सध्याको सात बजे हम फिर हरकी पैडीपर पहुचे। रोशनी जगमगा रही थी। दृश्य बहुत सुदर था। स्नान किया, अढाई-तीन घटे बैठे। यहा खूब भीड़ रहती है। जितने पुरुप, उतनी स्त्रिया। घाटपर पचीसो चाटवाले बैठते है। खूब खाते है लोग, स्त्रिया-मर्द दोनो पत्ते चाटते मिलते है। बहुत मन चलनेपर कभी-कभी चटपटी चीजे खाना उतना बुरा नही है पर यो पत्ते चाटना तो निरी नादानी-सी लगती है। इद्रियोके स्वादके पीछे यो पागल होनेमे कोई शोभा नही है।

हरकी पैडीपर पचरगी दुनिया दिखाई देती है। एक ओर यह चटपटी चाट, दूसरी ओर मँगतोकी भीड़, तीसरी ओर कथा-भजनवाले अपनी-अपनी दूकाने लगाए यात्रियोसे कुछ वसूल करनेकी फिक्रमे रहते है। चौथी ओर पाठ करते और माला फेरते हुए अधेड पुरुष-स्त्रियोका समूह और इसीके साथ कुछ वास्तविक श्रद्धालु भी दिखाई दे जाते है। अधिकतर कृत्रिमता और मौजकी भावना है, वास्तविक भक्तिभाव तो कम ही नज़र आता है।

पर हमारी गगाको इनसे कोई मतलब नही। वह बिना बुरे-

हरकी पैड़ीका एक और दृश्य
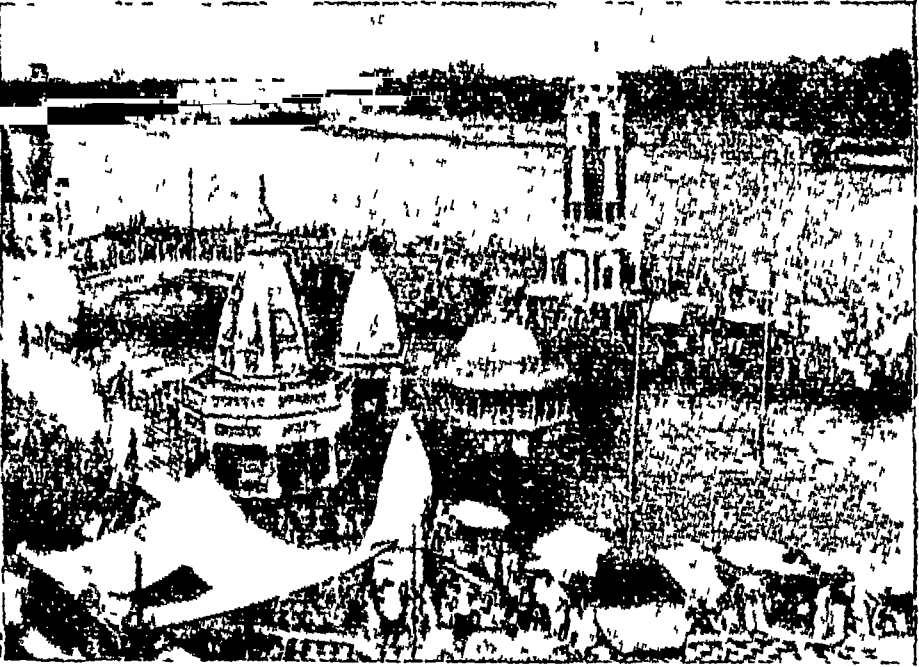
भलेका भेद किए सबको शीतलता प्रदान करती, सदा समान गतिसे कलकल-निनाद करती, बहती रहती है। मस्तोसे गगा कहती है, "चले चलो, इधर-उधर मत भटको, नही तो भटक जाओगे।"

हरिद्वारमे जगह-जगह बडे-बडे पक्के घर दिखाई देते है। यह अमुक अवधूतका बगला है, यह अमुक मडलेश्वरका आश्रम और यह अमुक साधुका धाम है। सख्यामे सैकडो ही है। रईस लोग कलकत्ता, बबईमे बगले बनाकर रहते है, साधु गगा किनारे। उनसे ये किसी बातमे कम नही है। ये धाम बनते कैसे है ? किसी माईको बता दिया, तेरे बेटा-पोता

होगा। हुआ सयोगसे, वन गया धाम—काम इनका। किसी सटोरिए भाईको सट्टेमे नफेकी वात वता दी, सयोगसे उसे कुछ मिल गया, इनकी कृपाका प्रसाद समझकर इन्हे भी उसने पूज दिया। कहते है कि यहाके कई अखाडे करोडोकी सपत्ति रखते है। हाथी-घोडे, मोटर सवकुछ है इनके पास। 'फाऊ'मे (घलुएमे) सुदर गेरुवा वस्त्र अलग! यहा और काशीमे गेरुए रगकी महान् दुर्दशा दिखाई देती है। गेरुए रगके मँगतोको देखकर तो उस रगसे जी ही हट जाता है।

जैसे यहा महतोने मोक्षधाम वना रखे है वैसे ही, कई राजा-रईसोने शाति-निवास वनवाए है। पर जिस प्रकार धामोमें मोक्ष नही, वधन है, वैसे ही निवासोमे शातिकी जगह कवूतर वसते है।

यहा अनेक रग देखनेको मिलते है। पर्दा तो यहा अपना मुँह छिपाए रहता है। कुछ हदतक तो यहा वेपर्दगीका राज्य है।

जहा यहा ढोगका राज्य है वहा श्रद्धाका साम्राज्य भी है। आज सुवह हम ऋषिकेश जानेवाली सडकपर चार मील घूमने गये थे। थोडेसे मामूली सामानकी गठरी लादे अधेड, वूढे, वूढिया वद्रीनारायणकी यात्राको चले जा रहे थे। कोई मुज-फ्फरपुर जिलेका था तो कोई दरभगा जिलेका और कोई गाजी-पुरका। इतना कम सामान देखकर ख्याल होता था मानो ये कही 'पिकनिक' (वनभोजन) पर जा रहे है! मारवाडियोकी सख्या भी वहुत है। पर इनमे सिरपर गठरी रखकर जानेवाले वहुत कम है। पास पैसे है न! इनमे भी श्रद्धा तो खूव है।

इस श्रद्धाको सौ-सौ बार नमस्कार ! जिस वस्तुके लिए श्रद्धा है—फिर वह श्रद्धा अधी हो या आखवाली—उसके कारण मनुष्य पूरा कष्ट हँसते-हँसते सहते है।

सुबह धर्मशालामे सोए-सोए कुछ मारवाडी स्त्रियोको सामूहिक रूपमे धीरे-धीरे भजन गाते सुन रहा था। शायद अपने शब्दोमे वे रामचरित्र गा रही थी। ऐसे गीत सुहावने लगते है, मुझे उस्तादी गाने नही भाते। उनके पीछे हृदय नही होता, इन भजनोके पीछे तो गायकका हृदय था और श्रद्धा थी। सुरतालके अभावमे भी इनमे कुछ प्राण रहता है।

चले, अब गगाके ठडे-ठडे पानीमे कुछ गोते लगाकर और थोडा तैरकर, तन-मनको शीतल कर ले। फिर ऋषिकेश चलेगे। एक ही जगह पडे रहनेसे यात्रीका काम नही चल सकता। अपनेको वह जगह देखनी है, जहा भागीरथने गगाको मृत्युलोकमे लानेको तप किया था। अभी तो हम वहा है, जहा गगा पहाडसे बाहर आई है। यह गगाकी ससुराल-यात्रा है—हम लोग तो उसके मायके चलेगे।

: ४ :

ऋषिकेश

१०–६–४५

हरिद्वारसे यह तेरह मील है। यहाके लिए बसोमे आदमी नियत सख्यासे ज्यादा नही लिये जाते। छूटती भी क्रमसे है। हरिद्वारमें मोटरवालोकी सहयोग-समिति है। सहयोगके कारण ही चढा-ऊपरी नही होती। सहयोगके अनेक लाभ है।

हरिद्वारसे ऋषिकेशतक सडक बिल्कुल ठीक है। इस रास्तेमे दो-तीन तीर्थ भी है। खास तो सत्यनारायणका मदिर
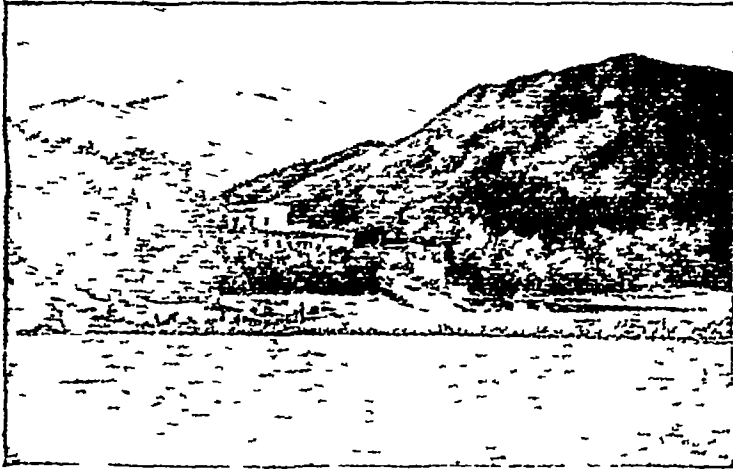
ऋषिकेश

है। पर मैं पहले देख गया हूं, इसलिए इस वार नहीं ठहरा।

मैं ऋषिकेश पहले कई वार आ चुका हूं। आजके और पहलेके ऋषिकेशमें वहुत फर्क पड़ गया है। तव यहां सादगी थी और शांति भी। अव तो ऋषिकेश धीरे-धीरे एक कस्वेकी शक्ल लेता जा रहा है। जहां देखो, पक्के मकान, मंदिर और धर्मशालाओंकी धूम है। पहले यहां झाड़ियां थीं, जहां कुछ त्यागी साधु रहा करते थे। पर मुझे तो उनमें तव भी त्यागी इने-गिने ही दिखाई देते थे और अव तो वात ही क्या है। इनमें अधिक तो मंगते मिलते हैं। इस भीड़में रहकर ईश्वर-चिंतनकी वात निरा ढोंग ही है।

यहां गंगा तटपर घूमने-फिरने, वैठनेका हरिद्वारका-सा
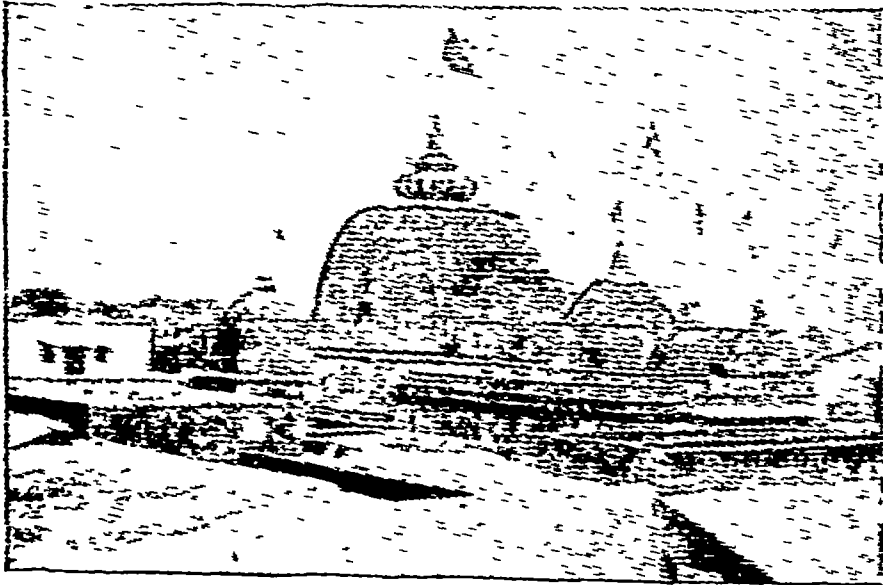
भरत मंदिर (ऋषिकेश)

सुभीता नही है। घाट भी नही है। फिर भी कई जगह गगा-स्नान-का आनद है। एक तरहसे यही गगा पहाडोसे बाहर आ गई है। इस जगहका नाम ऋषिकेश क्यो पडा, इसका पता नही। इधरसे ही बद्रीनारायण, केदारनाथ, गगोत्री, यमुनोत्री जानेका मार्ग होनेसे इस स्थानकी प्रसिद्धि जान पडती है। यहाके मदिरोमे 'भरत मदिर' प्रसिद्ध है। लछमनझूला यहासे तीन मील है। पहले बद्रीनारायण जानेवालोको गगा यहा पार करनी पडती थी। उसके लिए उस समय रस्सियोका झूला-पुल था। यात्री उसीपरसे गुजरते थे। उसमे कुछ खतरा था, इसलिए शायद इस यात्राका महत्त्व अधिक था। हरएकके लिए जाना उतना आसान नही था। कलकत्ताके श्रीसूरजमल झूझनूवालाने तारकी रस्सियोका पुल बनवा दिया। अब तो कोई बात ही
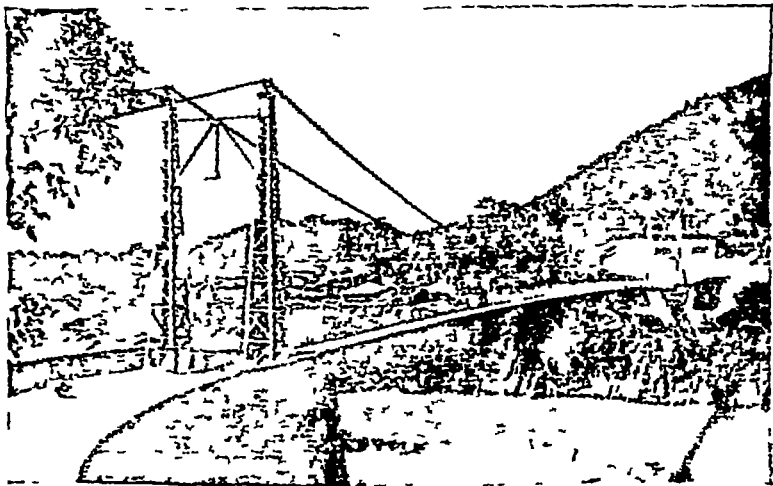
लछमन-झूला

नही है। खासी सड़क है। लेकिन अब यह पुल केवल पैदल यात्रियोके लिए रह गया है। यहासे बद्रीनारायणकी ओर दूर तक मोटर जाती है। इसके लिए सडक पुलके इसी पारसे बनी है। उसमे गगापार करनेकी जरूरत नही रह जाती।

साधु-महतोने जैसे हरिद्वारमे दूकाने, अखाड़े खोल रखे है वैसे ही यहा भी है। यहाके प्रधान क्षेत्र (साधुओको भोजन देनेके स्थान) दो है—एक कालीकमलीवालेका, दूसरा श्रीआत्म-प्रकाशका। यह अखाडा भी अपनेको कालीकमलीवाला ही मशहूर करता है। श्रीविशुद्धानदजी एक अच्छे साधु होगए है, जो प्राय काली कमली ओढते थे, इसलिए 'काली कमलीवाला' नाम पड गया। उन्हीकी प्रेरणासे झूझनूवालाने लछमन-झूले-का पुल बनवाया था। इसीलिए तथा कुछ अन्य कारणोसे इनका मान बढ गया। यहा रहनेवाले साधुओके लिए इन्होने क्षेत्र कायम किया, बद्रीनारायण, केदारनाथ तथा गगोत्री आदिकी यात्राओमे कठिनाइयां कम करनेका प्रयत्न किया। इन सब कामोके लिए अधिक पैसे कलकत्ता, बंबईसे आते थे। कहते है, इस क्षेत्रके आदि-सस्थापक क्षेत्रसे भोजन लेनेके पहले गगासे दो घडे पानी लाकर वहा रख देते थे, तब भिक्षा लेते थे। ठीक भी है, 'तैर्दत्तान प्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव स।' अर्थात्—"जो बदलेमे दिये बिना, यानी काम किये बिना खाता है, वह चोर है।" पर अव तो धारा उलट गई है। कामकी कौन कहे, क्षेत्रवाले कहते थे कि इनमे ऐसे-ऐसे वेश-धारी आते है कि यदि भिक्षाके वक्त रखवाली न की जाय तो वे घी-तेलके कनस्तर उठा ले जानेमे भी नही चूकते और जरा बात

बिगड जाय तो डडे वजानेसे बाज नही आते, गाली-गलौज तो मामूली-सी बात है। श्री विशुद्धानदजीके दो चेले थे। एकका नाम श्रीरामनाथ था, दूसरेका श्रीआत्मप्रकाश। श्रीविशुद्धानदजी-का देहात हो जानेपर दोनोने अपने अलग-अलग क्षेत्र चलाए। श्रीरामनाथका इस पार, दूसरेका गगाके उस पार। श्रीरामनाथके क्षेत्र आदिका ट्रस्ट वन गया है। रुपये-पैसेका इतजाम उसी ट्रस्टके अधीन है। यो कालीकमलीकी अलफी पहने क्षेत्रमे एक साधु भी वैठते है। श्रीआत्म-प्रकाश भी मर गए। अव उनके चेले श्रीसुदरदास है। वह अपने क्षेत्रको 'स्वर्गाश्रम' कहते हैं। गीताप्रेसके श्रीजयदयालजी
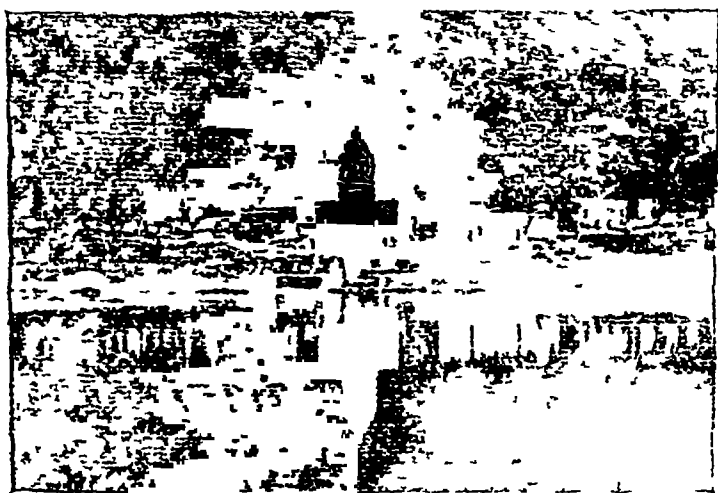
स्वर्गाश्रम

गोयनका आजकल उन्हीके पडोसमे अपना सत्सग-कार्यालय चलाते है। गरमीके दिनोमे कई महीने यहा उनका सत्सग जमता

है। दो-चार सौकी भीड़ हो जाती है। स्त्री-पुरुष दोनो होते है। गगाका तट है, मैदानकी अपेक्षा यहा कुछ ठडक रहती है। ज्ञान-ध्यानकी वाते जोरोसे होती है। आगतुक सत्सगियोके खाने-पीनेका, सीधे-साधे भोजनका, प्रबध ठीक रहता है। इन्होने स्वर्गाश्रमसे सटे हुए थोडी जमीन लेकर 'गीताभवन'-के नामसे चालीस-पचास कोठरिया बनवा दी है। सत्सगी लोग उन्हीमे रहते है।

ऋषिकेशसे हम लोग एक दिन गरुडचट्टी (बद्रीनारायण-के रास्तेमे पहली चट्टी) हो आए। साथ श्री मोहनलाल झुझनूवाला भी थे। मैने सुन रखा था कि उस चट्टीके ऊपर एक झरना है, जिसके पानीमे पडी हुई लकडिया और पत्तियां पत्थर हो जाती है। पहले बद्रीनारायण जाते समय मैं इस चट्टीसे गुजरा था। पर इस बातकी तस्दीकके लिए उस समय उस झरने तक नही गया था। इस बार गया। बहते पानीमे तो यह बात नही मिली, पर जहा पानी सूख गया था, वहा ऐसी पत्तिया और लकडिया मिली जो पत्थरकी तरह हो गई थी। जान पडता है, उस झरनेके पानीके साथ पत्थरके अधिक कण बहते है—इतने अधिक, कि जो लकडी-पत्ते वहा पडे होते है उनके चारो ओर वे कण जमा हो-होकर उन्हे उसी शक्लमे पत्थर बना देते है। और भी एकाध झरनोके बारेमे मैने ऐसा देखा-सुना है। यो तो सब झरनोमे पत्थरके कुछ कण मिले हो सकते है, इसीलिए झरनोके पानीको पीनेके पहले सघन बुने कपडेसे छानकर साफ कर लेना आवश्यक होता है।

शामको हम लोग ऋषिकेश, अपने स्थानपर—बुर्जे-

वालोकी धर्मशालामे, जो बिल्कुल गगातटपर बहुत अच्छी जगह है, पहुच गए। दूसरा दिन पत्र लिखने, यहा काली कमलीवालेके क्षेत्रमे रुपये जमा करके उत्तरकाशीमे और गगोत्रीमे पानेकी चिट्ठी लेने, टेहरीके लिए बसकी सीट रिजर्व कराने और कुछ समय अखबार पढनेमे लगाया।

सुना कि उसी धर्मशालामे एक पजाबिन ठहरी थी। एक दिन दोपहरको वह दस-पाच स्त्रियोकी टोलीमे दर्शनोको निकली। उसका एक ६-७ वर्षका बच्चा था। पहले उसने ख्याल नही किया। सोचा, बच्चा पीछे-पीछे आ रहा है। थोडी देरके बाद खोजने लगी तो एक स्त्रीने कह दिया कि कुछ देर पहले तो देखा था। लडकेको बहुत खोजा, अतमे हैरान होकर निराश हो गई। हे राम! बच्चा गगामे डूब गया कि पहाडमे भटक गया! क्या हुआ? अब कहाका दर्शन और कहाका स्पर्शन! वह धर्मशालामे लौट आई। अपनी कोठरीका ताला खोलती है तो देखती क्या है कि बच्चा खाटपर पडा खर्राटे ले रहा है! दरअसल हुआ यह था कि वह भूल गई थी। ताला बद कर गई, देखा नही कि बच्चा सो रहा है। उसने समझा कि मेरे साथ चल रहा है। पर दूसरी स्त्रीने जो यह कह दिया कि थोडी देर पहले देखा था, उससे उसका ख्याल इस ओर गया ही नही कि मै उसे अदर छोड आ सकती हू। "गोदमे लडका शहरमे ढिढोरा" यह कहावत यहा सोलह आने ठीक उतरती है।

हम सब इसी तरह भ्रममे पडे है। आत्माके सारे प्रकाशको हमने अपने अदर बद कर रखा है, और उसे ढूढ मरते है बाहर।

जरा ताला खोलकर अदर देखे तो मनुष्यके अदर सपूर्ण सुख है, पर वह उसे भूलकर बाहर तलाशता फिरता है। स्वाद उसकी जीभमे है, कहता है, स्वाद खटाईमे है। जिनका स्वाद मर जाता है, उन्हे कोई वस्तु स्वादिष्ट नही लगती। खटाईमे स्वाद होता तो ऐसा क्यो होना चाहिए था ?

हरिद्वारसे ऋषिकेश तक अलग-अलग प्रातोके अनेक प्रकारके पहनावोवाली बहने दिखाई पडी। सादे कपड़ोमे ज्यादा थी। कुछ जरा शान-शौकतवाली भी थी। मुझे रग-बिरगी साड़ियां कम जचती है, विशेषत इन तीर्थोमे। विभिन्न अवसरोका पहनावा भी विभिन्न होता है। यहा सफेद वस्त्र पहने स्त्रिया देवी-सी लगती है। रग-बिरगे कपडोमे वही एक तमाशा जान पडती है। यहा तो आखोको श्वेत रंग ही भाता है। गगाका रग जो श्वेत ठहरा ! और इधर तो राज्य गगाका ही है।

महीन कपडोका पहनावा भी उचित नही कहा जा सकता, तीर्थोमे तो कतई नही। सूक्ष्म वस्त्र लज्जा खोते है, बचाते नही, जो कपडे पहननेका एक विशेष उद्देश्य है। कपड़ोके और भी उद्देश्य है, सर्दी-गर्मी, मक्खी-मच्छरसे बचाव तथा अपने देश, अपनी बिरादरीका परिचायक। कहावत है, "जैसा देस वैसा भेस।"

कपड़ेकी भाति ही हमे जीवनकी अन्य वस्तुओके बारेमे भी विचार करना सीखना चाहिए।

साढे ग्यारह बजे हम लोग साढे चार रुपया प्रति सीट किराया देकर बसमे टेहरीके लिए रवाना हुए।

: ५ :

टेहरी

१४-६-४५

११।। वजे दिनकी चली मोटर ७।। वजे गामको टेहरी पहुची। दूरी ४० मील है। रास्तेमे यत्र-तत्र तीन घटा ठहरी होगी। मार्गके दृश्य सुन्दर है। नीचे नदी, वीचमे हरे-भरे धानके खेत—सीढियोकी भाति, कोई चार चटाई लवे-चौडे, कोई इससे दूने, कोई चौगुने। ऊचे-ऊचे पर्वत, कोई वहुत हरा—सेठकी भाति, कोई खुश्क गरीव। रास्ते मे पानीके झरने। सडक इतनी तग और मोडे इतनी अधिक कि पूछो मत—मिनट-मिनटपर मोड। कलकत्ता-ववईका ड्राइवर तो क्षणभरमे मोटर को खड्डम, सैकडो हाथ नीचे, डाल देगा। यह इन्ही पहाडी ड्राइवरोका काम है जो इन तिरछे-वाके रास्तोसे गाडिया ले जाते है। ईश्वरके भरोसे न रहो तो डर लगा रहता है कि मोटर नीचे गई। रास्तेमे कई छोटे-छोटे मुकाम पडे। पर इन मुकामोका कुछ महत्त्व पैदल यात्रामे ही है, मोटरके सफरमे तो नहीके वरावर ही है। इन मुकामोवाले थोडा-घना खानेका सामान रखे रहते है। जानेवालोके लिए चाय तैयार कर देते है। साधारण झोपडी, सीधे-सादे लोग। रास्तेमे एक मुकाम पर खूवानीके कई पेड दिखाई दिए। दो लडके छवडोमे सडकके किनारे वेचने-

ऊंचे-ऊंचे पर्वत, पानीके झरने

को खडे थे। पर मोटर रुकी नही कि हम खरीद सके। आगे अनेक पेड़ोमे खूबानी खूब फली देखी, आड़ भी। खानेको मन चला। एक चट्टीपर रुके तो सयोगसे दो आदमी खूबानीकी बोरिया लिये आ गए। मागनेपर एकने सेर भरके लगभग खूबानी श्रीनर्वदाप्रसादजीके पल्लेमे डाल दी।

उसे कोई परवाह नही थी कि पैसे कितने देगे। पहले उसे दो आने दिए। उसीमे सतुप्ट था वह। फिर दो आने और दिए, तव भी उतना ही सतुष्ट रहा।

टेहरी पहुचकर हमने एक सिख गुरुद्वारेमे डेरा डाला। पकाया, खाया। सुबह गगाजीमे स्नान किया। घूमकर वाजार देखा। टेहरी छोटा कस्बा होते हुए भी गढवालके राजाकी राजधानी है।'

सुवह गगा-स्नानसे लौटते समय स्मरण हुआ कि टेहरीके निकट स्वामी रामतीर्थ वहुत दिनो रहे थे। उन स्थानोको देखनेकी इच्छा होना मेरे लिए स्वाभाविक था। पता लगा कि यहासे डेढ मीलपर गिमलासु स्थान है, जहा स्वामी राम अतिम समयमे थे। और सुना कि स्वामी रामके एक भक्त साधु श्रीहरिओम् दो-तीन दिनोसे वहा ठहरे है। उनसे भी मिलनेकी इच्छा हुई। जाकर स्वामी रामके सोनेका स्थान देखा। उसीमें वह साधु सोए थे। वगलकी कोठरीमे स्वामी रामके वैठनेकी जगह थी। उक्त साधुने कहा कि यह जगह उस समय भी ऐसी ही वतलाई जाती है। इस समय यह राज्यका अतिथि-निवास है। साधुसे और भी थोडी वाते हुई। उन्होने वह स्थान वतलाया, जहा स्वामी रामने जल-समाधि ली थी। इसमे हमारे कुल अढाई घटे लगे।

स्वामी रामके कुछ लेख पहले-पहल मैंने कानपुरसे निकलनेवाले 'जमाना' नामके एक उर्दू मासिक पत्रमे पढे थे। उन्हे पढकर

'अव टेहरी-गढवाल उत्तर प्रदेशमे मिल गया है।

ही स्वामी रामपर मेरी श्रद्धा हो गई। उसी समय मैंने मराठीमे स्वामी रामके सब लेखो और व्याख्यानोका बारह भागोमे निकला हुआ एक सग्रह पढा और उसके बाद सस्तु-साहित्य-वर्द्धक, अहमदाबादसे गुजरातीमे निकले हुए अनुवाद पढ़े। फिर तो स्वामी रामतीर्थकी चीजे बराबर पढता रहा और १९२० मे मैंने 'हिदी पुस्तक एजेसी', कलकत्तासे स्वामी रामकी दो पुस्तके 'राम बादशाहके छ हुक्मनामे' और 'उपासना' प्रकाशित की। जिन कई ग्रथकारोका मेरे मन पर असर पड़ा, उनमे स्वामी रामका खास स्थान है।

स्वामी रामके जीवनका बहुत अच्छा भाग हिमालयमे गगा-किनारे बीता और अत भी वही हुआ। उनके लेखोमे हिमालयके दृश्यो और गगाका जैसा मनोहर वर्णन है वैसा और कही कम पाया जाता है। वह हिमालय और गगापर फिदा थे। गगा और हिमालयपर गद्यमे लिखते-लिखते कविता करने लगते थे।

अब यहासे आगे हम लोग पैदल चलनेवाले है। शामको रवाना होनेकी बात है।

: ६ :

भलिडयाना

१५-६-४५

टेहरीके वाद हम लोग तीनसे पाच हो गए—दो वोभी श्रीसुरेशानद और श्रीगोविदराम। वोभी गौड़ ब्राह्मण है।

वोभकी ढुलाई तीन रुपये सेर तै पाई। इसमेमे सवा आना रुपया इनके राजा (टेहरी राज्य) टैक्सरूपमे लेते है। पहले ढुलाई इनसे आधी रही होगी। टेहरीने मजदूरोकी चिट्ठी करानी पड़ती है। राजाका एक मुशी छपी कापीपर मजदूरोका नाम-पता वगैरह और हमारा नाम-पता तथा जहा जाना और जो मजदूरी तै हुई है, सव लिख लेता है। एक पर्चा कुलीको देता है, एक हमे और एक अपने पास रख लेता है। हमारे और मजदूरके वीच हुए इकरारनामेकी यह एक रजिस्ट्रीही समभनी चाहिए।

वोभी महीनेभरके लिए हमारे साथ रवाना होगे, इसलिए उनका एक वार घरवालोसे मिल आना जरूरी था। शामको उनके घरसे वापस आ जानेकी वात तै पाई थी। हम लोग दोपहरको टेहरीसे चलकर रातको पाच मील दूर पीपल चट्टी-पर ठहरनेवाले थे। पर सुरेशानदके आनेमे देर हो जानेसे शामका भोजन टेहरीमे ही हुआ और वहासे निकलते-निकलते हमे रातके दस वज गए। एक घटा चलकर सुनारोकी धर्म-शालामे पहुचकर वहा रात विताई।

वडे आरामसे सोए। २०-२५ यात्री वहा और ठहरे हुए थे। अधिकतर स्त्रियां थी। एकने रातको ३॥ वजे ही अपनी साथिन स्त्रीको जगाना शुरू किया और इसीके साथ अपने कुटुवकी एक स्त्रीको डाटने भी लगी, "यह विगाडा, वह विगाड़ा, कपडे खराव कर दिए।" इत्यादि। मुझे लगा कि डाट सुननेवाली स्त्री उस लानत-मलामत करनेवाली स्त्रीसे खुश नही थी, शायद वह वहू रही हो।

मनुष्यको दूसरेकी लानत-मलामत करनेमे न मालूम क्यो, एक मजा आता है। हम उस समय अपने मनमे वड़े वन जाते है। सोचते भी नही कि पहले हम इससे भयकर अपराध कर आए है, और आगेका क्या पता कि क्या-क्या और करेगे। दूसरोको समझानेकी प्रथाको कोई अनुचित नही कह सकता। हमे अपने अनुभवका लाभ अगली पीढीको जरूर देना चाहिए। पर किसीकी लानत-मलामत करना या दूसरोमे उसे हेठा करनेकी वृत्ति रखना तो हद दर्जेका ओछापन ही है। मुझे यदि किसीको किसी वातके लिए समझाना ही हो, तो क्यो न उसे एकातमे समझाऊ? सवके सामने उसे जलील करनेसे क्या फायदा है? इस तरह मै किसीको सही रास्तेपर नहीं लगा सकता, भीतरसे अपना विरोधी चाहे वना लूं। समझानेका काम वडी मुहव्वतसे होना चाहिए। पर यह काम है वड़ा मुश्किल। ये विचार प्रकट करते-करते मै अपनेको तौलता हू तो मालूम होता है कि इसे जानते और अनुभव करते हुए भी मै प्राय इसका पालन नही कर पाता। लेकिन जिसका पूरा पालन मै नही कर पाता उसे दूसरा भी नही कर सकेगा, ऐसी तो कोई वात नही है।

उस औरतका शोरगुल सुनकर इच्छा हुई कि उसे समझाऊ कि बहन, दूसरोका खयाल रखकर किसीको जगाया, पुकारा करो, यो सबके आराममे खलल डालना कहाका न्याय है ?

इस बहन-जैसी प्रकृतिके भाई-बहनोकी हमारे यहा कहा कमी है ? सैकडे नव्वे आदमी कमोबेश इसी प्रकृतिके मिलेगे। इसे स्वार्थी वृत्ति कहे या अज्ञान ? स्वार्थी तो इसलिए नही कहना चाहता हू कि दूसरोको तकलीफ पहुचानेमे सिर्फ स्वार्थकी ही बात तो नही रहती है। न हम सँभलकर थूकते है, न कुल्ला करते है, न नहाते है, दरवाजे जोरसे बद करते है, बिजली जलती छोड देते है, कूडा लोगोके रास्तेमे डाल देते है, कुर्सी उठाकर नही धरते—खीचनेकी आदत रखते है, सामानको बिखेर देते है, पेशाब-पाखाना दूर जाकर नही करते, बोलनेमे अपना थूक दूसरेके ऊपर न पडनेका खयाल नही रखते, सिगरेट पीनेवाले धुआ दूसरोके मुहपर छोडते नही सकुचाते, चलते या बैठते हुए दूसरोको हमारा धक्का न लगे, सोते समय पैर दूसरोको न लगे, इत्यादि बातोका अर्थात् दूसरोके आरामका हम कहा विचार रखते है ? कहो, इन बातोमे असावधान रहकर हम अपना कौन-सा स्वार्थ सिद्ध करते है ?

वह औरत भी जोरसे बोलकर अपना कोई फायदा नही कर रही थी। उसकी वृत्ति अज्ञानी ही मानी जायगी—अशिष्टता—अभद्रता भी कह सकते है। मनुष्यको शिष्ट व्यवहारके बारेमे बराबर सोचते-विचारते रहना चाहिए। महाभारतमे कहा है

यदन्यैर्विहितं नच्छेदात्मनः कर्म पूरुषः
न तत्परेषु कुर्वीत जानन्नप्रियमात्मनः

मनुष्य जिस क्रियाको अपने लिए पसद नही करता है, उसे अप्रिय समझकर, दूसरोके लिए उसे वैसा करनेसे बाज आना चाहिए ।

उस औरतके शोरगुलके बाद मुझे नीद न आई । पर सोनेमे देर हुई थी, इसलिए बिस्तरेपर पडा रहा ।

थोड़ी देर बाद, कई औरते मिलकर, गीत गाने लगी । वे धीरे-धीरे बडे मजेसे गा रही थी । जान पड़ रहा था कि उनमे एक औरत सबको गवा रही थी । पर एक और थी जो खुद लीडर बननेको उसकी कड़ियोमे जब-तब दखल देती थी । उसमे कुछ फेर-फारकी कोशिश करके वह अपना रग जमाना चाहती थी । दुनियामे कुछ लोग इस टाइपके होते है कि जिन्हे अगर अगुआ न बनाओ तो कामके मार्गमे हमेशा रोड़ा अटकाते रहेगे । ऐसे ही लोगोको सभा-सोसाइटियोमे प्राय उपसभापति या सहकारी मत्री चुन दिया जाता है ।

थोड़ी देरमे गीत बद हुए । मै भी उठा । मुह-हाथ धोकर हम रवाना हुए । हम लोगोकी पैदल-यात्रा आजसे शुरू समझनी चाहिए । आजका पहला दोपहरका पडाव भल्डियानामे करना तै पाया था । नौकर और बोझियोको वहां आनेको कहकर हम दोनो चल पडे । कुछ यात्री हम लोगोसे आध घंटा पहले चले थे । हम लोग एक-एक करके सबको पीछे छोड़ते गए । ठडमे चलाई अच्छी हुई । कई चढाई-उतराई मिली, पर कोई अखरनेवाली न थी । मार्गके दृश्य मनोरम थे ।

घटाभर अढाई-तीन मील चलकर सामने एक टेकडी दिखाई दी, मदिरके गुवजकी शक्लकी, तीन ओर गगाजीसे घिरी, एक ओर दूसरी पर्वतमालासे जुडी हुई। उसकी तलहटीमे कुछ घर और सुदर हरे-भरे खेत थे। देखकर मन भरता ही न था। जी चाहता था कि वहा कुछ समय रहे। यो तो रास्तेमे अनेक सुदर दृश्य थे, पर आजकी चलाईमे टेकडीवाला दृश्य सबसे अच्छा लगा। साथ कोई फोटोवाला न हुआ, नही तो जरूर उससे दो-तीन फोटो लिवाते। गगाजी अबतक हम लोगोके साथ चल रही थी, पर यहा भल्डियानामे गगाजी जरा ज्यादा नीचे है। एक घडा पानी मगवानेमे आठ आने पैसे देने पडे। इस चट्टीमे पानीका कुछ कसाला-सा ही है।

ज्यो-ज्यो हम लोग आगे बढते है, चीजोके भाव[1] भी बढते जाते है। आटा रुपयेका ›१॥। सेर, आलू ›२ सेर, चावल ›१ सेर। दूध—"आधे पानी न्याव", यानी न्यायत आधा पानी—॥=) सेर, घी ४) सेर। मेरे लिए दूध-दहीका सुभीता नही हुआ। आगे होनेकी भी उम्मीद कम ही है। मैने सोचा है कि यहा अन्नसे ही शरीर-पोषणका पूरा-पूरा काम लेना होगा। चलनेमे अच्छी मेहनत पडेगी, इस खयालसे दाल कुछ अधिक खानी शुरू की है। स्वास्थ्यपर इसका प्रभाव देखना है। आज दस मीलकी पहली मजिल तै करनेमे तो कोई दिक्कत नही मालूम हुई। घरसे निकले हमे हफ्तेभरसे ज्यादा हो गया, अभी तक वजन कुछ घटा नही जान पडता है। और सब

---

[1]ये भाव सन् १९४५के है।

ठीक रहते हुए वजन दस-बारह पौड घट भी जाय तो क्या हर्ज है ? घर जाकर महीने-आध महीनेमे उतना पूरा हो जायगा ।

मै आज चलते-चलते सोच रहा था कि 'पहला सुख निरोगी काया' या 'धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्य मूलमुत्तमम्' अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्षका मूल जो आरोग्यको कहा गया है, वह विल्कुल ठीक है । स्वास्थ्य ठीक न होता तो हम इस यात्राका आनद कैसे उठा सकते ? और इसी एक यात्राकी क्या बात है, जीवनकी सपूर्ण यात्रा ही अस्वस्थ रहनेसे बेमजा हो जाती है । कौनसा काम है जो खराब स्वास्थ्यको लेकर ठीक हो सकता है ?

रास्ता यहा कुछ पथरीला है । राज्यवाले यात्रियोके आराम-की विशेष परवा करते नही जान पडते । कुलियोकी मजदूरीसे सिर्फ कर लेना मात्र जानते हैं, और चट्टीवाले-दूकानदारोसे टैक्स ! वे चाहे तो पानी, सफाई, टूटे हुए पुलोका तथा अन्य कई प्रकारका सुधार करा सकते हैं, जिसमे ज्यादा खर्चका काम नही है । पर राजाको लोगोकी सुख-सुविधाकी परवा हो तो वह राजा ही क्या ? आज राजाके मानी है सबसे बड़ा स्वार्थी, सबसे अधिक खर्च करनेवाला और निकम्मा ।

मेरे मस्त साथीने यहां रास्ता चलनेपर एक वाक्य कहा, "मुखमे राम रहे, पगपर ध्यान रहे" अर्थात् चलो तो मुखसे राम-राम कहते रहो, पगपर ध्यान रहनेके मानो हैं देखकर चलो । यहा देखकर न चलो तो ठोकरका वडा डर है । यह रास्ता हमे सदा सावधान रहनेकी शिक्षा देता है ।

रामवलीने खवर दी कि टेहरीमे कल रातको पेड़के

नीचे सोते हुए एक बुढियाकी सीधेकी गठरी गायब हो गई, वह बुढिया गठरीके शोकमे आज कुछ खाती-पीती नही है। उसके साथी उसे खानेको दे रहे थे, पर गठरीके अफसोसमे उसने कुछ न खाया। बुलवाकर पूछा गया तो मालूम हुआ कि उसमे सिर्फ पाच-सात सेर सीधा था । लेकिन गरीवके लिए तो वही वहुत था। मैने अपने साथीसे कहा, "आपको एक सौदा करा दू ? इस बुढियाका दु ख खरीद लीजिए। यह सौदा घाटेका न रहेगा।" सिर्फ दस रुपएमे यह सुदर सौदा पट गया। "चोरोने गठरी ली, बेगारीसे छुट्टी मिली।" अब 'अटी' मे एक 'लोट' दावे रहेगी और आवश्यकतानुसार खरीदकर खाती जायगी। इसका साथी कहता था, "बडी भजनीक है यह।" पर गठरी जानेसे इसकी भजनकी सुधि भी जाती रही। ठीक है, "भूखे भजन न होय गोपाला"। पेटमे बिना कुछ पडे भजन भी नही सूझता! "दो कौर भित्तर तब आतमा और पित्तर।"

हम लोग भल्डियानासे शामको पाच बजे रवाना हुए। रातको छामगाव रहे। पानी यहा भी कुछ दूरसे मगवाना पडा।

छामकी धर्मशालामे दस बजेके लगभग हैजेके टीकेवाला डाक्टर यात्रियोसे पूछताछ करने लगा। जिन्होने लछमनझूला-से चलते समय टीका लिया था उनकी रसीदे देखी। मैने उसे वताया कि मैने अपने होशमे अबतक कभी टीका नही लिया है। साथ ही उसे यह भी समझाया कि टीका तो सिर्फ एक वहम मात्र है। पास विठाकर डाक्टरको दो-चार मिनट टीकेके बारेमे अपने विचार सुनाए। सब सुनकर वह चुपचाप चला गया।

भल्डियानासे छामगावके मार्गमे चढाई-उतराई नही है।

पर पानी इस बीच बहुत कम मिला । मेरे साथी पानी-पानी पुकारते ही रहे । उन्हे प्यास अधिक लगती है, भूख भी । चलनेमे मुझसे अधिक मजबूतीका परिचय तो नही देते वैसे कमजोरीभी नही दिखाते । पर इनका शरीर विश्राम अधिक चाहता है और मेरी वजहसे इन्हे लगातार चलना पड़ जाता है । घर इन्हे चलनेकी आदत बहुत कम है, वैसे और कसरते तो करते है । मालूम होता है चलनेकी भी एक आदत ही होती है ।

बहुत बार मै अनेक बूढी-बूढी औरतोंको देखता हूं कि इन कठिन रास्तोको ये ज्यो-त्यो पार कर ही जाती है । न कोई मरती है, न कोई रास्तेसे लौटकर आती है । पर जो ज्यादा बूढे है उनके लिए यह मार्ग है कष्टकर । अच्छा हो, ये तीर्थ पचीसी-तीसीमे कर लिए जायं । आना चाहिए अपने साथीके साथ ही । दो-चार साथी और भी रहे तो वेहतर है ।

इधरके दृश्य मानव-दृष्टिको उदार करनेमे बड़े सहायक है । उधरके नगरोमे भाति-भातिके नाटक, सिनेमा, चाटके खोचे होते है, और भी बहुत-सी वुराइयां होती है, पर यहा इन सबका अभाव है । जैसे ऊंचे पर्वतकी चोटीसे नीचेकी वस्तुएं छोटी लगती है वैसे ही, यहांके मुकाबिलेमे शहरोका वातावरण बहुत तुच्छ जान पड़ता है । यहाके मनुष्योसे नही, हम यहाके पर्वत और यहांकी गंगासे वहांकी तुलना करे । वहा दिनभर ट्राम और लारियोकी घड़घड़ाहट है, यहा २४ घटे गगाका निनाद और सुखदायी हवाके झोके, ऊचे पर्वतोपर हरित वृक्षावली । उच्च पर्वतशिखर हमारे हृदयको ऊचा करते है । वहा हम दिनभर मेरा-तेरा करते रहते है, हमारा

अधिक समय इसीमे जाता है—मेरा घर, मरे पिता, मेरी माता, मेरी स्त्री, मेरे पति, मेरे बच्चे, मेरे कपडे, मेरे गहने। और उस 'मेरे' के पीछे सारी लडाई और झगडा—ईर्ष्या-द्वेष। इन सबके पीछे रोजाना कितने सिर फूटते है!

यहा २०-२५ गजकी दूरीपर, गगा बडे ज़ोरोसे नीचेकी ओर सरपट भागी जा रही है, रुकनेका नाम ही नही ले रही है। कहा जा रही है यह गगा? इतनी उतावली क्यो है इसे? इसे समुद्रमे मिलना है। फिर समुद्रके लिए ऐसी पागल क्यो? इसलिए कि वही इसका वास्तविक उद्‌गमस्थल है। बादलोने समुद्रसे जल भरा, पहाडोपर बरसाया। पहाड तो इसके लिए परदेश-से है, प्रीतम देश तो इसका समुद्र ही है। पहाडी लोग नीचेके हिस्सेको देश कहते है। अपने उद्‌गममे जा मिलनेको ही गगा इतनी उतावली है। दिन-रात चलती है, क्षणभरको भी नही ठहरती। लगता है कि इसकी बूद-बूद आगे बढनेको परस्पर झगडती रहती है। हर बूद चाहती है कि मै पहले। गगासागर बडा तीर्थ क्यो है? वहा गगा और समुद्र दो, प्रियका मिलन-स्थल है। गगा वहा अपनी सफेदी तज देती है, यह सोच-कर कि मजा तो अपने देवतामे मिल जानेमे ही है। अलग अस्तित्व क्यो रखे? और अलग अस्तित्व है कहा? पहले समुद्रकी बूदोसे गगा बनी और फिर समुद्रमे मिलकर समुद्र बन गई। हम सभी, इसी भाति कर्ताके साथ अपनेको एक क्यो न करे? सारा पानी जैसे एक है, वैसे सारे प्राणी एकही है। पर दुनियाकी बुनियाद तो भेद है, भेद गया तो दुनिया गई समझो। जो हो, हमे हरदम अपने गंतव्य स्थानकी सुधि

रखनी चाहिए, जिसमे वीचमे अधिक अटक न हो। गतव्यकी ओर गतिका नाम ही प्रगति है। अपने करतारकी ओर वढना ही तरक्की है। उस ओर अग्रसर होनेमे जो कार्य सहायक हो, वे तरक्कीके समझे जाने चाहिए, जो वाधक हो वे अवनतिके। महाभारत-रामायण सव उसी ओर अगुलिनिर्देश करते है।

प्रात काल छामगावसे चले। वीचमे नगुन चट्टी पड़ी। रास्तेमे स्त्रियोकी तानेतिश्नेकी वृत्तिपर वाते होने लगी कि आजकलकी लडकिया तानेतिश्नोमे, वोली-ठोलीमे पुरानी औरतों जितनी कुशल नही होती। मर्द भी ताने तिश्ने न करते हो यह नही है, पर औरतोको इसकी शायद अधिक आदत होती है। भीमने दुर्योधनको मयदानवके रचित महलमें पानीके भ्रममे कपडे ऊचे करते देखकर कहा, "अंधे हो क्या ?" द्रौपदीने ऊपरसे ताना कसा, "अधोके अधे ही होते है"—यानी यह तो अधा है ही, इसका वाप भी अंधा है ! सोचो, इसीके लिए द्रौपदीको क्या-क्या नही सहना पडा ? यह सारा जीभपर कब्जा न रखनेका परिणाम था। दुर्योधन उस अपमान-को अततक न भूल सका। सचमुच उसने अधे होकर—आखें मूदकर वदला लेनेपर कमर कसी थी।

द्रौपदीका सतियोकी श्रेणीमे उल्लेख है। और थी भी वह सती, यानी पतिमे उसकी एकात भक्ति खूव थी, दुःखमे, सुखमे कभी उसने सग न त्यागा—भौहे न सिकोडी। पर उसकी ताना देनेवाली वात प्रकट करके व्यासजीने वतला दिया कि वाणी-सयम उसमे नही था और इसी वहाने इसका भयंकर परिणाम हमे व्यासजीने दिखलाया है।

: ७ :

धरासू

१६–६–४५

धरासू चट्टी पिछली चट्टियोसे अधिक अच्छी है। चट्टीके मानी है स्टेशन। इनमे, दो-तीन आटा-सीधा, सिगरेट-साबुन वगैरह बेचनेवाली मामूली छोटी-छोटी दूकाने होती है और पास ठहरनेकी थोडी जगह––पानीका सुपास। कही-कही साथमे काली कमलीवालेकी ओरसे, लोगोसे रुपये लेकर बनवाई हुई, धर्मशाला भी है। धर्मशालासे मतलब कोई वड़ी पक्की इमारत नही, हजार-दो हजारकी लागतसे बनी हुई साधारण जगह। यात्री भी यहा बाबू सम्प्रदायके नही आते कि वडी जगह खोजे। कुछ पैसेवाले आते जरूर है, पर प्राय सादगीपसद और कष्टसहिष्णु। धर्मशालामे एक चौकीदार होता है, चार-पाच रुपया महीना वेतन पानेवाला।

इस धर्मशालामे एक सत्तर सालका बूढा चौकीदार है। उससे मेरी थोडी बाते हुई। उसने गाधीजीका नाम सुना है, जवाहरलालजीका नही। यह भी सुना है कि गाधी महात्मा है। गाधीजीकी शिक्षाके बारमे उसे कुछ मालूम नही है। उसने मुझसे गाधीजीकी उम्रके बारेमे पूछा।

उसने यहाके रिवाजोके बारेमे वतलाया कि साधारणत यहा विवाहमे लडकीवाले कुछ रुपये लेते है। विधवा-विवाह

जायज है। शायद उन्नत समाजने ही उपर्युक्त दोनो बातोको नाजायज करार दिया है। प्राय लोगोके पास खेती है। अपने खेतमे उसने आठ-दस मन गेहू और इतने ही या उससे कुछ अधिक चावल हो जाते बतलाए। तरकारियोमे आलू, प्याज होते है। बकरीका मांस खाते है, कोई-कोई मछली भी। पढाई-लिखाईका प्राय रिवाज नही है। सब खेतीमे लगे रहते है। गाय, भैस, बैल पालते है। बैल खेतीमे सहायक होते है। दूध इधरकी गायोको थोडा ही होता है।

उद्योग करनेपर यहा पहाडोमे फलोके अच्छे बाग लग सकते है। अनेक स्थानोपर केलेके पेड़ लगे दिखाई देते है। ऋषिकेशसे टेहरीतकके रास्तेमे आडू, खूबानी, अजीरके पेड दिखाई दिए, आमके भी। टेहरीमे तो कई तरहके फल—लीची, आम, केले, बेल वगैरह खूब सरसब्ज दिखाई दिए। सर्द आबहवामे पनपनेवाले फलोके होनेकी यहा खूब सभावना है, जैसे सेव वगैरह। खपत स्थानीय और बाहर दोनो जगह हो सकती है। बाहर भेजनेके लिए सडके अच्छी करनेकी जरूरत होगी। यहा शहदका, मधुमक्खी-पालनका, काम भी खूब चल सकता है।

पहाडी सूती, ऊनी दोनो तरहके कपडे पहनते है। रुई यहा पैदा हो सकती है। यहा रुई और ऊनके उद्योग चलाए जा सकते है। अबतक भारतके किसी प्रातके लिए कभी कोई ठोस उन्नतिकी योजना नही बनी तो इस प्रदेशके लिए तो बनती ही कैसे ? यह तो लोगोकी दृष्टिसे बिलकुल ओझल प्रदेश है।

चौकीदारने बतलाया कि वह हरिद्वारसे आगे नही गया

है। इधरके प्राय आदमी बाहर कम ही निकलते है। नई सभ्यताकी हवा बडे शहरोतक ही सीमित मिलती है। इस

एक पहाडी गाव

प्रदेशमे नई सभ्यताके कदम अभी कम ही पडे है। इधरके कुछ आदमी फौजमे भरती होते है। उनके मारफत यहा कुछ

ख़ुराफात पहुंच सकती है। टेहरीके उधर पहाड़मे कुछको देखा कि अपने गांवमें भी फौजी वर्दी पहने फिरते है, जिस वस्तु-पर शर्म आनी चाहिए उसीमे शान समझते है।

यहांके लड़के-लड़कियोके चेहरोपर स्वास्थ्यकी सुर्खी दिखाई देती है। तगडे तो नही है, न ज्यादा कमजोर ही। रंग प्राय गोरा है। कपड़े फटे दिखाई देते है, महँगीकी वजहसे। पहाडी गावमे घर इकट्ठे बहुत कम है। मुश्किलसे बीस घर इकट्ठे दिखाई देते है। दो-दो चार-चारकी संख्यामे दूर-दूर है। सब प्राय. एक ही ढगके, बिना आंगनके। नीचे कोठरिया और ऊपर भी। छाजन प्राय: पत्थरकी छोटी-छोटी अनगढ़ पटियोंका होता है। मालूम नही, काली कमलीवालोने क्यो धर्मशालाओमे टीनका छाजन लगाया है। यह वैसी ही बात है जैसे देहातोके अनेक गंवार शौकीनीके मारे बूट जूते खरीद लेते है, भले ही वे 'चमौधेसे' पैर ज्यादा काटे। समय-समयपर इन धर्मशाला-ओमे टूट-फूटकी मरम्मत होनेकी आवश्यकता जान पड़ती है। इधरके रास्तेके पुलो वगैरहकी भी देखरेख होनी जरूरी है। कई पुल तो ऐसी जर्जर अवस्थामे है कि उनपर बूढे तो गुजर ही नही सकते। राज्य चाहे तो भले ही कुछ यात्री-कर ले, पर ये सब उसे ठीक दशामे रखने चाहिए। मुसलमान यहां नही दिखाई देते। टेहरीमे सिर्फ दो-चार दिखाई दिए थे।

: ८ :

देवार-सिलक्यारी

१७–६–४५

घरासूमे दिन मौजसे कटा था और रात भी। पर आगे राडीकी चढाई सुबह ही पार करनेकी आसानीके खयालसे आज कम चले थे।

न मालूम क्यो, कई दिनसे मुझे भोजन कम पचता है। जब-तब मुहमे कुछ 'धुआँइन'-सी आती है। शायद दाल कुछ अधिक खाने या एक वक्तमे कुछ अधिक खा लेनेके कारण ऐसा होता है। अब मैने तै किया है कि एक बारमे अधिक भोजन न करके दो वक्तमे ही थोडा-थोडा करके खाना अच्छा होगा। आज तो ठीक है। धरासूमे नारियलकी गरी और चीनी मिलवाकर बर्फी बनवा ली, जिसमे चिकनाईका काम चल जाय। धरासूमे गरी दो रुपये सेर और चीनी बारह आने सेर मिली।

मेरा अनुमान था कि इधर पहाडियोको तरकारी नही मिलती, इससे उनके भोजनमे विटामिनका अभाव रहता होगा। पर उनके चेहरोसे तो यह नही प्रतीत होता था। देखनेसे मालूम हुआ कि कई जगली फल आदि—फालसेकी किस्मके झरबेर वगैरह—ऐसे मिलते है कि जिनमे विटामिन यथेष्ट मात्रामे हो सकते है। और भी कई तरहके फल मिलते है।

गावोमे तथा कई जगह रास्तेके किनारे-किनारे आड़ू, खूबानी, अजीर आदि दिखाई दिए । पहाडी ये वस्तुए कुछ-कुछ खात रहते हैं। इससे कुछ कमी पूरी हो जानी चाहिए। पर यहाके कुछ बच्चोको जोरकी खुजली दिखाई दी।

आज सवेरे वजाय यमुनोत्रीके रास्तेके, गलतीसे हम गगोत्रीकी राह चल पड़े थे । धरासू चट्टीसे एक डेढ़ फर्लागके वाद ही यमुनोत्रीका रास्ता बदलता है। पर उस रास्तेपर कोई तख्ती नही थी और जो सीधा रास्ता था वह गंगोत्री जा रहा था। हम उसीपर हो लिये । साथीने एक मील चलनेके वाद ही अपने सावधान और तर्कशील स्वभावके कारण शका शुरू की, पर मै कहता रहा, ठीक है, चले चलिए। उन्होने अपनी शंका जारी रखी। इसपर हम एक जगह बैठकर किसीके आनेकी वाट देखने लगे । तबतक उधरसे तीन मजदूर स्त्रिया गुजरी । पूछनेपर पता चला कि हम भटक गए—अढाई-तीन मील। चाहा कि, लौटना न पड़े और वहींसे कोई सीधा रास्ता मिल जाय। पर यह संभव न था। हम लोगोके पीछे एक पटनिहा भाई और भटके थे और एक वोझी भी । वदलनेवाले रास्तेपर बोर्ड होनेकी वडी आवश्यकता है। हमे अढाई मील जाना और उतना ही लौटना पडा। देवार (कल्याणी) चट्टीपर हम दो घटे देरसे पहुचे। हमारे साथ चलनेवालोमे खलवली-सी पड़ गई थी। हमारे वोझी और नौकर चिंतित हो गए थे।

इधर पहाड़ोपर ठेठ यमुनोत्रीके पासतक खूब खेती दिखाई देती है। कही-कही तो काफी चौड़े खेत है। एकाध
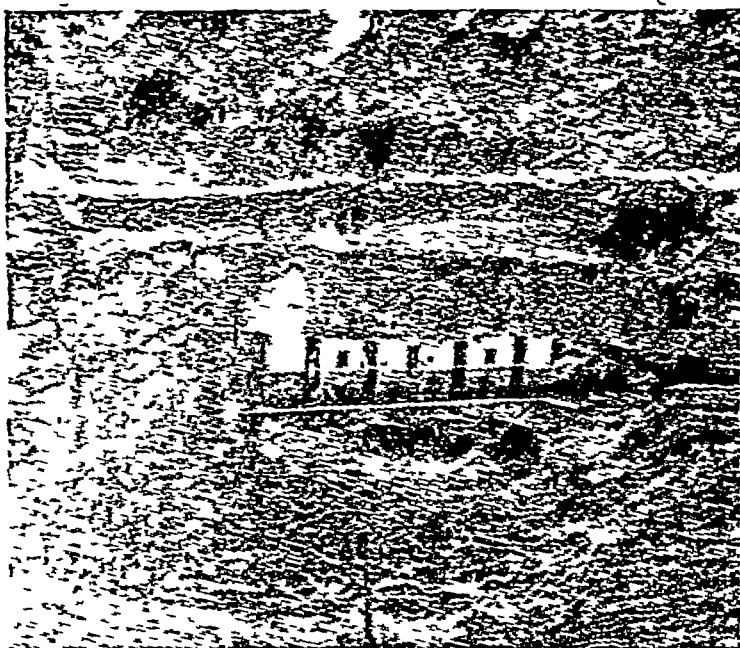
कल्याणी चट्टी

भूरे-भूरे खेतोमे गज-आध गजका हरा टुकड़ा ऐसा लगता है मानो किसीने भूरे रगकी साडीमे हरे कपड़ेकी सुदर चकती लगा दी हो। यहां यमुनोत्रीके पास खेतोमे गेहूं ग्यारह महीने रहते है, आश्विनसे सावन तक। जाडेमे अंकुर वर्फके नीचे दवे पडे रहते है। वर्फ गल जानेपर पौधे वढ़ते है। इधर ठडकके कारण नाज वर्षो घुनता, सड़ता नही है।

धरासूने देवारके वीचमें एक आदमीको पेडपर चढे कुछ फल तोडकर खाते देखा। हमने उसे पुकारा कि कुछ फल हो तो लाओ, हमे भी दो। वह सात वडे-वड़े अधपके अजीर लाया।

दाम चार आने वतलाए। मोल-मोलाई करनेसे कदाचित् कम ले लेता। लेकिन जब-तब मुहमागे दामो सौदा खरीदना अच्छा लगता है, खासकर जहा थोड़े-सेका ही सवाल हो और सामानवाला देहाती हो। थोड़ी दूर जानेपर एक और पहाड़ी, गठरीमे कुछ बाधे, आता मिला। क्या है, पूछनेपर बोला, चूला (खूबानी)। मैंने कहा, "मुझे दो।" मैंने अंगोछा बढा दिया कि उसमे बाध दे। आधेके लगभग देने लगा। मैंने सबकी मांग की। जान पडा, दे तो देगा दबानेसे, पर सब देनेकी उसकी इच्छा न मालूम हुई, इसलिए कि वह मुफ्त ही देना चाहता था। उसकी यह इच्छा जानकर मैंने आधीही देनेको कहा। उसने बड़ी खुशीसे आधी दे दी और बोला, "बाकी मैं चटनीके लिए रखता हू।" मैंने कहा, "बहुत अच्छा।" मानों वही मुझसे मांगकर ले रहा हो! मैंने पैसे पूछे। वह बोला, "नही महाराज, इसके पैसे क्या ?" मैंने उसे दो आने दिये। उसने ले तो लिये, पर पैसोंसे वह प्रसन्न नही जान पड़ा। तब मैंने कहा, "मुझे खूबानी मागनेके लिए क्षमा करना।" इसपर झुककर उसने पाव छूनेको हाथ वढाया। क्षमाकी बात कहनेपर तो वह गद्गद् ही हो गया।

इसी मार्गमें घरके छाजनपर बीज निकालकर खूबानी सुखाई जाती देखी। इधर खूबानी वैसे समझो जैसे उधर इमली। यह अधिकतर चटनीके काम आती है। इसके बीजो (बादाम) से निकला हुआ तेल खानेके उपयोगमे आता है।

देवारमे रोटी-दाल तरकारी और खूबानी तथा एक जातिके साधारण अंगूरके स्वादकी रसभरीसे चटनी बनाई गई।

इस चट्टीमे पानीका तोडा तो नही है, पर वडे झरनका किनारा यात्रियोने शौचसे गदा कर रखा था। इसलिए उसका पानी पीनेके योग्य न रह गया था। हम लोग दूसरे छोटे झरनेका पानी नहाने तथा पीनेके काममे लाये।

वादल छाए देखकर सिलक्यारी जल्द पहुच जानेके खयालसे हम खूब तेजीसे चले। कुभराणा चट्टीको छोडते गये। मार्गमे एक स्थानका दृश्य इतना लुभावना था कि देखकर मन भर नही रहा था, पर वर्षा आ जानेके डरसे दृश्य देखनेमें मन नही लगा। जल्दी करते-करते भी चट्टीसे तीन फर्लांग पहले ही पानी आ गया। हम भीगते-भीगते एक किसानकी कुटियामे पहुचे। वहा सिर्फ दो औरते थी। पूछा, जगह मिलेगी ? बोली, "नही।" सोचा, स्त्रिया-ही-स्त्रिया है, इसलिए अनजान व्यक्तिको जगह न देना चाहती होगी। दूसरी कुटियामें गए। उसमे एक पुरुष और दो स्त्रिया थी। वहा भी इन्कार हुआ। सोचा होगा, मालूम नही, कैसे आदमी हो। तीसरी झोपडीमे जानेपर यह कहावत सिद्ध निकली कि "आदमी-आदमी अतर, कोई हीरा कोई ककर।" पूछते ही कुटियाके मालिकने कहा, "आइए महाराज।" तीन थे हम, बैठ गये। वाते होने लगी। अनेक प्रकारकी चर्चा हुई। उन लोगोने चर्चामे वडा उत्साह दिखाया। अकृत्रिम उत्साह था वह। झोपडीमे कई स्त्रिया थी, और कई मर्द। यहा इनकी 'पाही' (घरसे दूरकी खेती) थी। स्त्रिया भोजन बनानेके काममें जुटी थी। जो तीन-चार पुरुष थे वे हमलोगोकी वाते सुन रहे थे। उनमेसे एक नवयुवकने गाधी और जवाहरलालजीका

नाम सुना था। वातो-वातोमे एकने पूछा, "गांधीजी नही रहेगे तो उनकी जगह कौन लेगा ?" मैंने जवाहरलालजीका नाम लिया। वादमे कहा, "भगवान जिसको दिलावेगे वह लेगा।" देर तक मजेदार चर्चा होती रही। वीच-बीचमे मै उनकी वात पूछता और अपनी भी वताता रहा।

कौन कहता है कि देहाती राजनैतिक वाते नही समझते ? उसने इतनी जल्दी मेरी वाते ग्रहण की और इस ढंगसे उनका समर्थन किया मानों वह वातकी तहतक पहुंच रहा हो। कहने लगा, "देखिये, क्या राज्य हैं यह कि जगलसे लकड़ी नही लेने देता, घास-पातके लिए मना करता है, पशु नही चराने देता, जंगलमे कुलियोसे टैक्स लेता है और हम लोगोको हमेशा भयभीत किए रहता है।" शिक्षाके सवधमे भी थोड़ी वाते हुई। यहां कपड़ेका वडा अकाल वतलाया। यह शिकायत तो सर्वत्र ही सुनी, देखी। रुई यहां होती वतलाई, पर चर्खा नही।

मुझे पहाड़ी आदमी वहुत अच्छे जचते है—सरल, साधु स्वभाव। कई जगह कइयोसे वाते की, सव सभ्य जान पडे। इन्हे अच्छे कपडे पहना दो तो अच्छे रईस लगने लगेंगे। गोरा रग, पूरी लंवाई, वढिया गठन। यहाकी स्त्रियोमे कुछ तो ऐसे रूप-रगकी लडकिया देखी कि नीचे शायद ही कोई ऐसी लड़की दिखाई दे। ये लोग होशियार है, पर दगावाज नही।

आध पौन घटा वैठकर, पानी रुकनेपर, सिलक्यार चट्टी पहुंचे। पानीकी हल्की फुहारे तो जारी ही थी। थकानके कारण हम लेटे रहे। रातको ११ वजेके लगभग भोजन तैयार हुआ तव खा-पीकर हम सोए।

: ६ :

गंगानी

१८–६–४५

सुवह शौच आदिसे निवृत्त होकर गगानीको रवाना हुए। साढे तीन मीलकी कडी चढाई मिली। फिर छ मील गगानीतक उतराई-ही-उतराई। इस कडी चढाईको भी साथके वृद्ध और वृद्धाओने सानद पार किया। हमारे अबतक पार किए हुए मार्गमे यह कडा है। रास्तेभर बादल रहे और मजेदार ठडक।

डडोल गावके नीचे, चट्टीके पहले, झरनेपर जलपान किया। वही एक बूढेने आकर पूछा, "दूध लेगे ?" मेरे साथीने उससे तीन पाव दूध आठ आने सेरमे लेकर पिया। इस चट्टीमे खूवानीके पचासो पेड देखे। अखरोटके पेड भी थे। एक लडकेने कहा कि बादामके भी है। उसने वतलाया कि हमारे गावमे, जो थोडी ही दूर—ऊपर है, वादाम और अखरोट मिल सकते है। हम लोग उसके साथ डडोल गावमे गए। उसने मुझे गायका आधा सेर ताजा दूध पिलाया। आध सेरके लगभग वादाम भी दिए, शायद वह शिरोल नामक किसी फलके बीज थे। मीठे होने पर भी वास्तविक वादामसे बहुत हल्की जातिके थे। 'गुली' हूवहू छोटे वादामके शक्लकी थी। मेरे कीमत पूछनेपर उसके भाई ने (गुलावसिंह) कहा कि जो जी चाहे दे

दे। हमने दो रुपये दिए, जानते हुए भी कि माल दो रुपयेका नही है। उसने कहा कि एक रुपया ही दीजिए, दो नही। मैंने कहा कि हमसे कम मत लेना, तो वह बोला, "माल तो सिर्फ चार आने कीमतका ही है।"

गाधीजीके सबंधमे तथा पार्वतीय जीवनके बारेमे उनसे बातें होती रही। कपास यहा कुछ होती है। गुलाबसिंहने अपने यहाकी बनी पूनिया दिखलाई। पूनिया ठीक नही थी। तकली बासकी थी, जैसी ऊन कातनेकी होती है। सूत ६ नबरके लगभगका था। यहा चर्खेका प्रचार हो सकता है। यहां 'टाक' नामक एक खट्टा और मजेदार फल चखनेको मिला। इनकी बातोंमे अति सरलता तथा ईमानदारी पाकर बडी खुशी हुई।

कपड़े सबके इस बुरी हालतमे थे कि जोड़ गिने न जा सकते थे। एक बुढियाका कपड़ा तो इतना फटा और चिथड़े-चिथड़े था कि उसकी ओर देखते न बनता था।

रास्तेमे इधरका डाकिया मिल गया। उन्नीस वर्षका युवक, जरा होशियार। पहले जो युवक हमे गांव ले गया था उसने बतलाया कि इसके लिए लडकी लानेमें १०००) लगे। डाकियेने कहा कि इनसे कहा सो कहा, फिर ऐसा मत कहना। कानून नही जानते हो? वह बोला कि लड़कीवाले जो रुपये लेते है, लड़कीके मोलके नही, बल्कि गरीब होनेके कारण शादीमे लगानेके खयालसे लेते है और शायद उसका पूरा हिसाब देते है। अपनी शादीमे तो उसे लडकीके साथ एक गाय और कुछ रुपये भी मिले थे। गहना लडकीके ससुराल आ जानेपर

वनवानेका रिवाज बतलाया। अपनी स्त्रीके पास उसने तीन-चार सौके गहने बतलाए। आधे चादीके, आधे सोनेके। शादीके समय लडकीकी उम्र सोलह और लडकेकी बीस हो तो ठीक समझी जाती है। कभी-कभी दस-ग्यारह वर्षके लडकेकी भी शादी हो जाती है और एक-दो साल बडी उम्रकी लडकीसे। घरमे और कोई न हो, तो काम-काज आदिके लिए चाहिए, इसलिए १० वर्षके लडकेके लिए एकाध साल बडी लडकी ले आते है। यहा लडकीवाला खोजने नही जाता, बल्कि लडकेवाला जाता है। उचित भी यही है। यहा स्त्रिया अधिक काम करती जान पडी।

उस डाकियेसे इधर-उधरकी बाते सुनते-करते गगानी पहुचे। वह हमे कुछ निकटके रास्तेसे ले आया। गगानीमे यमुनाकी शोभा देखकर दिल बाग-बाग हो गया। नीचेसे आने-वालोको पहले-पहल यमुनाके दर्शन यहा होते है। कितना स्वच्छ जल है—नीलाभ! यमुनाके जलकी नीलिमा प्रयाग तक चली गई है। वहा गगा और यमुनाके जलमे स्पष्ट भेद मालूम होता है। एक सफेद, एक नीला। यह फर्क आरभसे ही है। ऐसा होनेके कारणका पता नही।

यमुना गगाकी छोटी बहन है। गगा बडी होनेसे उसमे वेग भी बेहद है। यहा तो यमुना तेज है, पर आगे चलकर वह कुछ गभीर हो जाती है। गगा गहरी है, यमुना उथली। यमुनाने प्रयागतक तो अपनी स्वतत्रता कायम रखी, फिर अपनी बहनके साथ एकरूप हो गई। आखिर समुद्रमे एकरूप होना ही था, तो पहले ही सही।

गंगानीकी धर्मशालामे वडी भीड मिली—गदगी भी। काली कमलीवालोको चाहिए कि यात्रियोको ऋपिकेशसे ही सावधान करे कि पाखाने और पेशावसे चट्टियो और झरनोके आस-पासकी जगह गदी न करे। इसके लिए कुछ परचे बाटने चाहिए। पर इन धर्मशालाओके पास पाच-सात सेप्टिक पाखाने और पेशावघर बने हो तो शायद लोग बाहर गदा न करे। कूडा-कर्कट डालनेके लिए भी कुछ गढे वगैरह हो तो अच्छा।

सफाईका मापदड तो काली कमलीवालोके क्षेत्रके प्रधान कार्यालय—ऋपिकेशका भी ऐसा-सा ही है। वहा तो आदर्श सफाई रखनी ही चाहिए, जिसमे हजारो आने-जानेवाले वहासे सफाईका सवक ले सके। वहा एक अच्छा सफाई-पसद मैनेजर होनेकी जरूरत है। एक बार परपरा कायम हो जानेपर वह कुछ दिनो चल सकती है। अभीका युवक मैनेजर उत्साही तो है, पर कामको आगे, फिर पर, ढकेलनेवाला-सा जान पडा। वहा अधिक तत्पर और गभीर आदमीकी आवश्यकता है। कम-से-कम यात्राके चार मास। इधरका अधिक खेल चार महीनेका ही जान पडता है।

भीडसे घवडाकर हमने यहाके डाकवगलेमे जगह ली। यहा सफाई अच्छी थी। एक कोठरी खाली मिल गई, सोनेको दालान, पडोसमे रसोईघर। डेरा जचाकर यमुना-स्नानको गए। कई दिन वाद, सावुन से कपडे धोये गए। खूब मल-मलकर नहाए। तटपर वैठकर गीताका पाठ किया। यहा यमुनाकी शोभा देखते ही वनती है। कलकत्तावाले 'लेक' के दृश्यपर

फिदा रहते है, पर इस दृश्यके सामने तो वह नितात तुच्छ है—निष्प्राण वस्तु। यहां नहाकर हमारी सारी थकान दूर हो गई।

वडे शहरोके कोलाहलसे यहाकी तुलना की जाय तो नरक और स्वर्गका अतर मिलेगा। मेरे खयालमे नरकमे भी शहर ही आवाद होगे। शहरवालोको अपनी तरक्कीका, वडा अभिमान होता है, जैसे किसी कलवारको अपनी भट्टीका। चौवीस मील दायरेका कलकत्ता एक वडी चीज समभी जाती है। पर यहा चौवीस मील तो एक चोटीपर खडे होकर आखोके सामने देखे जा सकते है। हम शहरी अपनेको वहुत उन्नत मानते है। किन वातोमे ? स्वार्थमे, ईर्ष्या और द्वेषमे, काम और क्रोधमे, मोह और लोभमे ? उन्नत देखना हो तो हिमालयके शिखरोको देखो। शहरोमे हम वर्फ पीकर तृप्त होते है—ठडक पाते है, पर यहाके तो साधारण जलपर वैसी वर्फके ढेर न्यौछावर किये जा सकते है। वहा कच्ची और वेकार वर्फ है, ठडा पानी पीनेका शौक तो यही पूरा हो सकता है। इसके बाद तो कुछ दिनो तक दूसरा पानी मुह ही न लगेगा। न इस हवाके सामने दूसरी हवा 'दाय' (पसद) आवेगी। शुद्ध हवाका नमूना यही मिल सकता है। वडे नगरोमे अपनी सारी दौलत देकर भी वह शुद्ध हवा नही पाई जा सकती। जव-तव नगर निवासियोको शुद्ध हवा, पवित्र जल और विशाल पर्वत देखनेको उत्तराखडकी यात्रा करनी चाहिए। समुद्र तथा इन पर्वतोको देखकर हम प्रभुके विशाल, रूपका आकलन कर सकते है। इन यात्राओको प्रोत्साहन देनेवालोने हमपर खास उपकार किया है, नही तो

महीने-आध-महीनेके लिए भी हम शहरी गदगीसे कैसे छुटकारा पाते ? शहरोके तग गली-कूचोमे रहते-रहते हमारे दिल-दिमाग तग हो जाते है । यहा पहाडी लोग दस-बीस कोस चलना एक साधारण-सी बात मानते है। और वहा ? दो मील चलनेमे ही माथेपर बल पडने लगते है । यहाके पहाड़ी बच्चे इतनी दूर तो ऊपरसे नीचे गेदकी तरह लुढक जाते है ।

आजका सभ्य पुरुष बजाय यहा आनेके यूरोप घूमने जाता है । यह चीज बताती है कि हमारे दिलोपर अंग्रेजी सभ्यताने कैसा राज्य जमा रखा है । हम आगे-पीछे, अगल-बगल सब ओरसे अग्रेज बनना चाहते है । हमे शहर पसद है, शहरी सभ्यता पसद है, कल-कारखाने पसद है । हमारे कुछ दोस्त जोरोसे कहते है कि मुल्कको 'इडस्ट्रियलाइज'—कल-कारखानोसे भरपूर—करनेसे ही तरक्की होगी । हमारी तग अक्ल और खयाल कल-कारखानोसे आगे जाते ही नही । शहरी दिमागमें इजन और कलोने मानो घर कर लिया है । हमारे दिलोमे कलोकी बडी महत्ता है । एक कथा है सुनाऊ किसी अमीरके एक लडका था । बबईमे उसके बापके एक-दो मिले थी । लडकेको वडा 'नाज' था उनका । हमेशा उसीकी चर्चा । उसका अध्यापक समझदार था । उससे भी जव-तव वह अपने बापकी मिलोका वखान करता । अध्यापकने उसके दिमागसे मिलका कीड़ा निकालनेकी वात सोची । एक दिन जब उसने मिल-चर्चा चलाई तो अध्यापकने कहा, "जरा दुनियाका नकशा लाओ तो ।" "अच्छा, इसमे एशिया निकालो ।" "यह है मास्टर-साहव ।" "अच्छा, इसमे हिदुस्तान वतलाओ ।" "यह है ।"

आज एक रामानदी तिलकवाला साधु मेरे पास आकर वैठा। चिकनी-चुपडी वाते करने लगा। वीचमे ही बोला, "ओह, मै माला भूल आया।" झटसे उठा, और मोटे-मोटे दानो-की तुलसीकी एक माला लाकर फेरने लगा। फिर अपना सवाल शुरू किया, "एक रामायण चाहिए। सब पैसे मै आपसे नही मागता। थोडा-थोडा करके जुटा लूगा और एक रामायण ले लूगा। दो-चार आना, जो श्रद्धा हो, दीजिए।" साफ जान पडा कि उसने रामायणके नामको पैसे इकट्ठे करनेका एक बहाना वना लिया है, वर्ना दो-चार आने पैसे देना कठिन नही था, न एक रामायण ही ले देना। पर उसके सवालमे दभकी गध थी। माला लाकर फेरते हुए सवाल करनेमे उसने अपनी ओरसे चालाकी तो काफी लगाई थी। मै उस वक्त कजूसी कर गया। पीछे सोचा कि मुझे उसकी चालाकीकी दाद देनी चाहिए थी, एक रामायण खरीद देता तो क्या था।

: १० :

हनुमान चट्टी

१९–६–४५

सवेरे ६ वजे गगानीसे चलकर ६।। मीलपर जमुना चट्टीपर ठहरे । धर्मशालामे गदगी और साथ ही मक्खियोकी भरमार थी । इन दोनोका 'गठजोडा' ही रहता है। हमने चट्टीके बजाय जमुना तटपर ही डेरा डाला । नहाए-धोए, वही पत्थरोपर बैठकर भोजन किया और थोडा आराम । एक वजे चले । हनुमान-चट्टी आना था, जमुनाचट्टीसे आठ मील ।

यह मार्ग कडी चढाईका माना जाता है । चढाई जितनी कडी है, दृश्य उतने ही सुदर है । नीचे देवदारके (देवोकी लकडी) पेड कम है, पर यहा तो वहुतायत है । देवदारका वृक्ष वडा सुदर होता है। नीचेसे चौडा, ऊपरसे सकरा, महीन-महीन पत्तिया । देखकर मन खुश हो जाता है । पेडपर ऊपर 'गूगे' की तरह बैठे हुए—गुवजदार फल वहुत ही खुशनुमा लगते है । एक ओर सडकके किनारे-किनारे देवदारकी कतार, दूसरी ओर गजवकी हरियाली । इतनी तरहकी लताए, वृक्ष और पुष्पावलि है कि मस्तिष्क एक साथ सबको ग्रहण भी नही कर सकता । रईसोके वाग-बगीचोमे ऐसी पत्तिया बडे शौकसे गमलो और क्यारियोमे लगाई जाती है, पहाडके दृश्य वहा वडे खर्चसे कृत्रिम रूपसे बनाए जाते है । पर यहा तो ये सब प्रकृतिकी
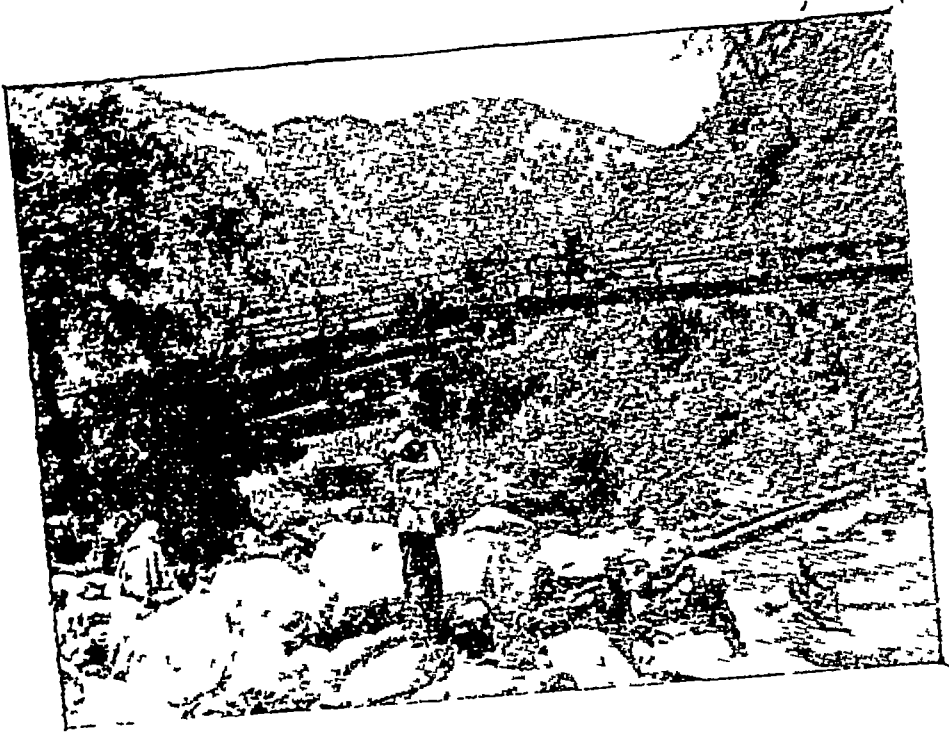
यमुना-चट्टी

लीलाके रूपमे है। यमुनाके उस पार नगे विशाल पर्वतकी कतार-की-कतार है। उसपर वहुत ही कम वृक्ष है। सामने देखो, वर्फकी पहाड़ी यहा पहले-पहल दिखाई दी है। बादल छाए रहनेसे शिखर पूरा दिखाई न देने पर भी-पिघली हुई वर्फ दिखाई देती है। जान पडता है मानो किसीने मनो चादी पिघलाकर वहा दी है। ये सुहावने दृश्य पथिककी सारी थकावट दूर कर देते है।

हर साल हजारो दुवले-पतले स्त्री-पुरुष इतनी तकलीफ उठाकर इन स्थानोमे क्यो आते है? मूर्खतावश? यह कहना तो सही न होगा। काम, यश, मोह, नाटक, सिनेमा,

खटाई-मिठाई, सिगरेट और शराबके पीछे जो ये लाखो-करोडो हैरान-परेशान है, क्या ये ज्ञानी है? हम अपनी बेवकूफीपर पर्दा डालनेके लिए दुनियाको बेवकूफ कहना सीख गए है। बुद्धिमानीका दावा करनेवालोकी श्रद्धा आज किस चीजमें है? ईश्वरमे नही है, धर्ममे नही है, फिर किसमे है? अपने शारीरिक सुखमे अथवा जिन्हे हम अपना मान बैठे है उनके वैसे ही सुखमे या पैसे कमानेमे। अपने शारीरिक सुख या पैसोके प्रति हमारी जो श्रद्धा है उसकी इन यात्रियोकी श्रद्धाके साथ कोई तुलना नही की जा सकती। इसमे भी सुधारकी गुजाइश है, पर लोगोंम मौजूद श्रद्धाको हमे खो नही देना चाहिए। हमे गगाके प्रवाहको लुप्त करने का यत्न कर उसे मोड देकर सूखे मैदानोको हरा-भरा करना चाहिए। पर आजका उतावला और उथला सुधारक, अपनी बुद्धिमत्ताके मदमे मतवाला, श्रद्धाके मूलपर ही कुठाराघात करता देखा जाता है। मनुष्यमे श्रद्धा रहने दी जाय तो उसके बलपर उससे तीर्थ कराया जा सकता है और काम पडनेपर देशके लिए फाँसीपर भी चढवाया जा सकता है। पर श्रद्धाका लोप करके क्या बनेगा? केवल भौतिक सुख उसका ध्येय रह जायगा, जैसा कि आज अधिकाशका हो रहा है।

मै पहले सन् १९२२ मे बद्रीनारायण, केदारनाथ गया था तो अपना सामान पीठपर ले गया था। इसको उस समय मैने अपने मनमे बडी चीज समझा था, पर देखता हू, यहा आनेवालोमे सैकडे पचानवे बिना कुलीके ही आते है और बहुत थोडा-सा सामान लेकर, सो भी अपने सिरपर। देखकर

ताज्जुब होता है। एकाध कबल, एक लोटा, एक धोती---बस। कुछ साधु तो बिल्कुल नगे देखे जाते है। कष्ट-सहिष्णुतामे हमारा देश शायद दुनियामे सबसे बढा हुआ है। यह असाधारण गुण है। मनुष्यत्वके विकासमे इसका बडा उपयोग किया जा सकता है।

शामको हम लोग ओजरी चट्टी छोड़ते हुए हनुमानचट्टी पहुच गए। अब यमुनोत्री सिर्फ आठ मील रह गई है। कल गगादशहराको यमुनोत्रीमे हमारा गोता लगेगा।

हनुमानचट्टीमे भी गदगीकी पहलेकी चट्टियो जैसी ही हालत थी। यहा धर्मशालामे एक तख्त मिल गया और उसीके बगलमे थोडी जगह। ज्यो-त्यो रात कट गई।

: ११ :

यमुनोत्री

२०-६-४५

हनुमानचट्टीसे सुवह ही रवाना हुए। जानकीचट्टीतक, जो चार मील है, चढाई साधारण थी, उसके आगे कुछ कठिन। यहा पैदल, बिना कष्ट अनुभव किए, वही चल सकते है जिन्हे पैदल चलनेकी आदत हो, जिनके पैरोमे, कमरमे और फेफडोमे शक्ति हो। वेसे चलती तो वे स्त्रिया भी मिली जो एक टल्ला लग जानेसे गिर पडे। कडी और डाडीवालोको भी धन्य कहना चाहिए कि इन कठिन रास्तोमे कमजोर आदमियोको अपने ऊपर लादकर चलते है।

हम लोग दिनके डेढ वजे यमुनोत्री पहुच गए। वस, यहा इधरका रास्ता खतम हो जाता है। आगे वर्फकी चोटी-वाला पहाड है। यहा यमुना ऊपरसे उतरी है। पता नही, कितनी दूरसे यह जल आता है। और भी ऐसे कई स्रोत है, पर सडक खतम होनेका अतिम स्रोत यही है। यही एक खूब गरम पानीका, इतने गरमका कि जिसमे आलू उवल सकते है, स्रोत है। उसके चारो ओर भाप निकलती है। जो कुड पूरा गरम है और ऊपरी हिस्सेमे है, वह तो नहानेके लिए बरदाश्तके बाहर है। उसीके नीचे एक, नौ-दस फीट लबा और इतना ही चौडा कुड और है, जिसमे ऊपरका पानी

यमुनोत्री

आकर बरदाश्तके काबिल हो जाता है। सब उसीमें नहाते हैं। घुसते ही कुछ अधिक गरम लगता है फिर गले तक बैठ जानेसे सुहाने लगता है। इसमें सिर नहीं डुबोना चाहिए, अन्यथा गरमी ज्यादा लग सकती है, चक्कर आ सकता है। इस कुंडके पानीमें कोयलेका कुछ चूरा-सा मिला लगता है। कमरतक पानी है। इसमें देरतक नहानेको तबीयत होती है। मैंने नहाते-नहाते, थोड़ी देरके बाद, यमुनामेसे एक बाल्टी ठंडा पानी

मगवाकर वदनपर डाला और फिर गरम पानीमे बैठ गया। सारी थकान दूर हो गई। वैसे पानी काफी गरम था। अतमे एक बाल्टी ठडे बर्फीले पानीको, वदनपर डालकर स्नान समाप्त किया। उसके बाद ऊपर चढकर पूर्ण उष्ण स्रोत देखा। एक और फुहारा निकलता हुआ स्थान दिखलाया गया, जिसे 'गोमुख' कहते है। उसीके पास नाली मे पानी सड रहा था।

डाडी

पडेने मुझसे पूजा करनेको कहा। पर ऐसी गंदगीमें मुझे पूजा क्या करनी थी! मेरे बदले भी मेरे साथीने ही पूजा की। मैं तो वहां आस-पासकी गंदगी देखकर हैरान हो गया।

यहां लोगोंको जब मैंने यह कहते सुना कि नजदीक गंदगी फैलानेमें स्त्रियोंका भाग अधिक है तो मुझे एक चोट-सी लगी। स्त्रियां अधिक आती हैं, इसलिए लोगोंको स्त्रियां दिखाई देती होंगी। दूर शौच जानेमें स्त्रियां डरती होंगी, यह भी संभव है, वरना पुरुषोंसे स्त्रियां अधिक गंदगी फैलानेवाली होती हैं, यह मेरा मन कबूल नहीं करता। लोग स्त्रियोंको जैसे स्वाभाविक मूर्ख करार देते हैं, वैसे ही स्वाभाविक गंदी भी कहनेके आदी हैं। इस धारणामें कितना अन्याय है, इसका हमें पता नहीं! स्त्रियोंको स्वाभाविक मूर्ख कहनेके मानी होते हैं मैं मूर्ख मांका होशियार फर्जंद हूं! कई कवियोंने स्त्रियोंमें अनेक स्वाभाविक अवगुण कायम किए हैं, यह शर्मनाक बात है। पर यदि कुछ कम-समझ लोगोंने स्त्रियोंको स्वाभाविक दोषी ठहराया है तो उसके बदले स्त्रियां सब पुरुषोंको दोषी ठहराएं, यह भी अनुचित ही होगा। मानवके नाते क्या स्त्री क्या पुरुष, हम सभी अपूर्ण हैं। मैं तो ऐसी स्त्रीकी कल्पना करता हूं कि बड़े-से-बड़ा स्त्री-जातिका दोषदर्शी भी उसकी गंभीरता और गुणोंको शीश नवाए। मैं देखता हूं कि पुरुषोंकी अपेक्षा लोग स्त्रियोंसे अधिक सभ्यता और शिष्टाचारकी आशा करते हैं। इसमें स्त्री-जातिकी कोई हानि नहीं है। स्त्री पुरुषोंसे किसी गुणमें घटकर क्यों रहे? बल, विद्या, बुद्धि आदि गुणोंमें उसे श्रेष्ठ ही होना चाहिए। प्रतिद्वंद्विताके

लिए नही, वल्कि अधिक सेवाके लिए ।

२१–६–४५

यहा कल शामको थोडा पानी वरसनेसे, वातावरण धूमिल हो गया । ठड वढी । यह स्थान ९५०० फुटकी उचाईपर है ।

मैने देखा, वर्षाके कारण यात्री वुरी तरह भीगे-भागे आए, पर किसीने तकलीफोपर चू तक न की । कुली उनके घटेभर वाद पहुचे, तव कपडे वदल-वदला, पका-खाकर सोए । हम आराम-तलव, पढे-लिखे कहलानेवाले इस तरह भीगे होते तो न मालूम कवतक तकलीफोका रोना रोते रहते !

आज रात तारादत्त नामके एक पडेसे मैने यहाकी गदगी मिटानेके वारेमे बात की तो उसने वतलाया कि उन लोगोसे कुछ होना कठिन है । उसने कहा कि यहा मेहतर नही मिलते । पास ही मार्गमे चारो ओर पाखानेकी गदगीको अनुभव तो वह भी करता है । उसने धर्मशालासे रसोईघर अलग रखनेकी वात भी रखी । वह कहता था कि धर्मशालामे ऊपर रहनेवाले यात्रियोकी आखे धुएसे भर जाती है । हनुमान चट्टी और यमुनोत्रीका हम लोगोका भी यही अनुभव है।

आज गरम कुडमे नहा-धोकर थोडा आराम करके भोजन किया । रातको नौ वजेके करीब मालूम हुआ कि किसी पहाडी लडकेको कै-दस्त हो रहे है । एकने आकर कहा, "महाराज, कोई दवा हो तो दीजिए ।" मेरे मित्रके पास एक किस्मके अर्ककी शीशी थी, उसीमेसे मैने पाच बूदे दिला दी । इतनेमे दूसरा आया । बोला, "मेरे पेटमे ऐठन है, आव गिरता है ।" उसे भी वही दवा दे दी । इसके वाद गगोत्रीवाला पडा, जो यहा

यात्री लेने आया था, आकर बोला, "मेरे एक रिश्तेदारके दातमे दर्द है, कोई दवा हो तो दीजिए।" एक टिंचरका फाहा बनाकर उसे दिलवा दिया। सुबह ही, रातके कै-दस्तवाला लडका सामने लाकर बिठाया गया, "नाडी देख लीजिए।" नाडी देखकर उसे मैंने दिनभरके उपवासकी व्यवस्था दी। एक नवयुवक आया, "मेरी भी नाडी देखिए।" नाडी तथा चेहरा देखकर मैंने उसके रोगके हाल बतलाए। एक मारवाडिन आई, "बुखार है, देखिए।" एक पहाडी औरत आई, "नाडी देखकर दवा बतलाइए, जडैया आता है।" तारादत्त पडा बोला, "मेरी भी नाडी देखकर दवा बतलाइए।" मनमे मैंने कहा कि यह अच्छी आफत मोल ली। उन सबसे कहा, "अब बस, यहा मै नाडी देखने नही, यमुनोत्रीका दृश्य देखने आया हू।" अपने साथीसे मैंने कहा, देखते है आप कि डाक्टर, वैद्य बनना कितना आसान काम है? इन सबको, जो चाहे सो दीजिए या न दीजिए, आराम ये सब होनेवाले है, कुछ भी ऊल-जलूल दे दें तो यश, दुआए आपको मुफ्तमे मिल जायगी!

इस झगडेसे निपटकर हमने आज यमुनाकी धारामे, जहा गरम पानीके स्रोतका पानी भी मिलता है, नहानेकी ठहराई। वहा दो पत्थरोके बीचसे भाप निकल रही थी, उन्हीपर मै ऊनी चादर ओढकर बैठा। पहले एक गिलास गरम जल पीया और सिरपर गीला गमछा रखा। थोडी देरमे पसीना आनेपर गीले गमछेसे देह पोछी। शरीर हल्का हो गया। यमुनोत्रीमे एक रात और ठहरते, पर गदगी, भीड़ तथा वर्षाके कारण निकल भागनेकी इच्छा होने लगी।

एक मजेकी बात है कि अधिकाश फूलोमे दूसरी जगह लगाये जानेपर वह सुगध तो नही रह जाती, केवल रग बच रह जाता है।

पश्चिमी शिक्षासे चौंधियाये हुए हमारे युवक यूरोपीय अध्यापकोके लिखे ग्रथोमे वेदातकी प्रतिध्वनिमात्र पाते हैं और इसे पाश्चात्य सपत्ति समझकर उसपर लट्टू हो जाते है। पर उन बेचारोको यह पता नही कि वे कल्पना-कुसुम, जिनपर वे इतने मोहित है, उन्हीकी मातृभूमिसे ले जाकर वहा लगाये गये है। अतर केवल इतना होता है कि यूरोपीय अध्यापकोके हाथोमे जाकर इन दिव्य पुष्पोमेसे त्याग-रूपी वैराग्यकी गध चली जाती है। यूरोपियनो द्वारा प्रतिपादित वेदातमें तत्त्वज्ञानका बाहरी रग और आकार तो जरूर बना रहता है, पर अनुभव-रूपी सुगध गायब हो जाती है।

"अक्से गुलमें रग है गुलका वह, लेकिन बू नहीं।"

इस ऊचे, ठडे और नगे पर्वतपर वनस्पतिका नाम न था। रामके आनेके जरा देर पहले वहापर नई बर्फ गिरी थी।

रामके बैठनेको एक बडी शिलापर एक लाल कबल बिछाया गया और रातके उबाले हुए आलू उन्हे खानेको दिये गए। साथियोने भी अपना सादा भोजन प्रेमपूर्वक खाया। बर्फके चमचमाते हल्के-हल्के टुकडोने पानीका अच्छा काम दिया। वे लोग फिर आगे धीरे-धीरे बढते और ऊपर चढते गए। उनमेसे एकका दम फूलने लगा और उसके पावोने आगे बढनेसे जवाब दे दिया। उसे चक्कर आने लगा था। उसे वही छोडा गया। कुछ दूर आगे बढनेपर एक साथी और मूर्छित हो गया। कहने

: १३ :

यमुनोत्रीसे वापस

२२–६–४५

सबेरे दस बजे रवाना होकर चार बजते-बजते हम हनुमानचट्टी पहुच गए। आज उतराई-ही-उतराई थी। फिर भी कुछ श्रम पडा। एकादशीके कारण हमने थोडी नारियलकी गरी और गरम कुडमे उबालकर साथ लिए हुए आलू खाकर गुजारा किया। थकानके कारण मै चार बजे ही पड रहा। दो घटे आराम करनेपर थकान कुछ घटी तो हम घूमने निकले। आकर बैठे ही थे कि वह कै-दस्तवाला पहाड़ी लड़का सामने मौजूद था। उसकी नाडी देखकर थोड़ा दूध लेनेको कहा। प्यासके लिए पानी उवालकर पीनेको बतलाया। दूध लेते ही उसे कै हो गई। उसकी मा दौडी आई, "महाराज, कै बद नहीं हुई, दूध निकल गया।" मैने बतलाया कि अच्छा हुआ, पेटको दूधकी जरूरत नही थी, अब इसे आज सिर्फ पानी पिलाना। आववाला आदमी भी दवा ले गया। उसे कलसे कुछ आराम था। अपनी औरतको लाया, "सिरमे दर्द है, बदन दुखता है।" उसे चार छोटी हर्रे देकर टाला। उसे कडा कब्ज था। हर्रेके सिवा यहा दूसरा हो भी क्या सकता था?

रास्तेमे पडोके गाव 'खरसाली' होते हुए आए। वहा सुस्ताने वैठे। इतनेमे एक रोगी आया। वोला, "दस-पद्रह

दिनोसे दस्त नही होता ।" उसे कुछ साग-पात खाना बतलाकर सतोष कराया। लोग समझते है कि हर परदेशीके पास जादूका-सा असर करनेवाली कोई जडी-बूटी होनी ही चाहिए। रास्तेमे एक आदमीको एक छोटा पौधा उखाडते देखा, जिसका ऊपरी हिस्सा सापके फन-जैसा था। उसमे धारिया भी थी। उस आदमीसे पूछा तो बोला, "साप और बिच्छूकी दवा है।" सापकी तो इसलिए कि शक्ल फनसे मिलती है! इतना होनेके बाद और चाहिए भी क्या? साप फनवाला जीव है, उसपर दवा भी वह जरूर लगेगी जो फनवाली हो! और जो दवा सापपर असर करेगी उसे बिच्छूपर भी करना ही चाहिए, क्योकि जहर तो उसमे भी होता ही है! शायद मेरे साथीका मन भी चला कि हम लोग भी ले, पर मेरे ध्यान न देनेकी वजहसे उन्होने खयाल छोड दिया। पर रामवलीने तो ली ही।

आज हम लोगोने ९ मील जमुना चट्टी और फिर ६॥ मील और तै करके गगानी आकर डेरा किया। आज कडी चलाई हुई। मेरे साथी इस चलाईसे चूर हो गए, पर स्वभावत सज्जन होनेके कारण कोई शिकायत नही की। मजाकमे तो 'शिकवा-शिकायत' चलता ही रहता है।

इधर नाई बहुत कम दिखाई देते है, पर आज सयोगसे चट्टीपर एक नाई बैठा मिल गया। उससे हजामत बनवाई। जाते समय बोझियोको हल्का रखनेके खयालसे धर्मशालाके चौकीदारके पास कुछ सामान छोड गए थे। वह लिया। सब ठीक था। आज रास्तेमे गायका अच्छा दूध मिल गया था। एक सेर मैने पिया, डेढ सेर साथीने। ४ बजेतकका वक्त उसी

दूधपर कटा। डाकबगलेमे डेरा डाला। यमुनापर जाकर मैले कपडे थे जितने सब साबुन लगाकर धोए। खूब नहाए और बैठकर गीताका पाठ किया। यहा ओढने-बिछानेके सब कपडे धूपमे डलवाए। यमुनोत्रीमे वर्षा-बादलोके कारण कपड़े सील गए थे, और वैसे भी, कपडोमे धूप लगाना जरूरी था। ४।। बजेके लगभग भोजन किया, थोडा लिखा और सो गए। रातको नीद अच्छी आई। यहा डाकबगला बिल्कुल एकात जगहमे है। सामने नीचेसे ऊपरतक चीड़की सुंदर वृक्षावलि है, पीछे कुछ खेत और यमुनाका कलकल निनाद।

: १४ :

सिंगोट चट्टी

२३-६-४५

गगानीसे सुबह ६ बजे निकले। मील सवा-मील आते-आते आज भी दूधका 'बद' बैठ गया। मैंने डेढ और सार्थीने एक सेर पीया। गगानीसे यह सिगोटचट्टी ९ मील है। चार मीलके ऊचे रास्तेमे दो मील साधारण और दो मील करारी चढाई और पाच मीलकी सख्त उतराई है, जिसमे जरा जोर आता है। ११॥ बजते-बजते हम सिगोट आ पहुचे। यहा पहुचकर एक सेर गायका दूध मिल गया गरमागरम। आध-आध सेर हम दोनोने पीया। जान पडता है कि आज हम लोग दुग्धमुहूर्तमे चले थे। यदि नित्य इसी तरह दूधकी तजवीज बैठती जाय तो स्वास्थ्य बहुत दुरुस्त रहे। पर नित्य ऐसा भाग्य होता कहा है?

आज रास्तेमे मैं सोच रहा था कि स्त्रिया एक बार हिमालय-की सैर कर जायं तो फिर फूल-पत्तीदार किनारोकी साड़ियोपर उनका मन बिल्कुल न चले। यहा इतनी तरहकी पत्तिया और पुष्प है कि कहातक कोई कपडोपर उसकी नकल करेगा? काश्मीर भी इस मानीमे प्रकृतिकी लीलास्थली है, इसीलिए वहावाले शाल-दुशालोपर तरह-तरहकी फूल-पत्तियोकी बढिया कारीगरी कर पाते हैं। यहा कई पहाडी बच्चोको मैंने कान,
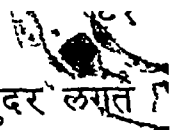
सिर, गले वगैरहमे फूलोके गुच्छे लटकाए देखा। सुदर लगते है गुच्छे। गहने पहनकर ही सुदरता वढानी हो तो हमे फूलोके गहने बनाने चाहिए। सुनारके बने गहने पहननेमें हमारी क्या कला है? हलवाईकी दूकानकी मिठाई और सुनारके गहने समान ही हैं। गहने पहननेमे तो नही, पर बनानेमें अवश्य कला है। हम कलावान नही, केवल कलाके उपभोक्ता होना चाहते है। तारीफ तो गढनेवाले कलाकारकी होनी चाहिए। आभूषण धारण करनेवालेकी क्या प्रशंसा है? गढियेने तो गढनेमे अपना श्रम और हुनर खर्च किया है, हमारा पहननेमे क्या खर्च होता है? हर कोई गढ नही सकता, पहन तो हर कोई सकता है।

रातभर सिगोट रहे। कलकी चढाई-उतराईमे दरभगाके पासके एक दलका, जिसमे १५—२० स्त्री-पुरुप है, एक वृद्ध आदमी खो गया। आज प्रात कालतक उसका पता नही चला। वह आंवकी शिकायत हो जानेसे कमजोर हो गया था, इसलिए पीछे-पीछे आ रहा था। लोगोंने सोचा, धीरे-धीरे आ जायगा, पर जव शामतक न आया तो यह दल फिक्रमे पडा। दो कंडीवाले आदमी भेजे कि नजदीक आ गया हो तो लादकर ले आवे। पर मिला नही। दरियाफ्त करनेपर मालूम हुआ कि घरसे चला तो पटना स्टेशनपर कोई उसकी जमापूजीकी 'मुटरी' लेकर चपत हो गया। लोग उस आदमीको इतना भोला वतला रहे थे कि पटनेसे अकेला लौटकर दरभगा भी वापस न जा सकता था। लाचार सव लोगोने 'फँटवार' मे उसका खर्चा देनेकी बात तै

करके उसे साथ रखा। यहा यह हाल हुआ। उसका सगा भाई और भतीजा भी दलमे है। उस एक आदमीकी वजहसे सारे दल-के-दलको सिगोटमे रुकना पडा। अब देखना है कि वह मिलता भी है या नही। मेरी समझमे ऐसी यात्रामे कमजोरोको साथ लेनेमे तकलीफ है। पर इसीके साथ यह बात भी है कि दलके साथ तो यह कमजोर भी यात्रा कर जाते है, अकेले तो आनेसे रहे। सम्मिलित कुटुबका-सा हाल है दलका। लेकिन इस घटनासे एक बोध तो मिलता ही है कि कमजोरोको इस यात्रामे अकेले नही छोडना चाहिए, अन्यथा बादको कष्ट भोगना पडता है। इस दलकी और एक बूढी स्त्री बीमार पड गई है। वह आगे चलनेसे लाचार है। जैसे कुटुब बडा होनेमे कष्ट बढ जाते है वैसे ही दल बडा होनेमे भी। पर कितना छोटा हो, यह प्रश्न विचारणीय है।

: १५ :

उत्तर काशी

२४–६–४५

सिगोटसे ६ बजे सवेरे हम लोग उत्तरकाशीके लिए रवाना हुए। ३॥ मीलतक तो अलग रास्तेपर चले, उसके बाद धरासूसे गगोत्री जानेवाली सडकपर आ गए। यहासे गगाजीका साथ हो गया। यमुनोत्रीके मार्गके मुकाबलेमे यह सड़क बहुत अच्छी है। हम लोग इसके पहलेके रास्तेमे तो घटेमे दो-ढाई और चढाईमे कभी-कभी एक ही मील तै कर पाते थे, पर आज ६ बजेसे ९ बजेतकमे नौ मील पार किए, जिसमे आध घटा एक जगह दूध पीनेमे भी खर्च किया।

उत्तरकाशीमे बिडला धर्मशालामे डेरा डाला। पहले तो पहाडी मैनेजरने नीचे जगह बतलाई, फिर जब मैने श्रीघनश्यामदासजीसे अपना परिचय बतलाया तो उसने ऊपरका कमरा दिया। अबतक यात्रामे हमे जितनी धर्मशालाएं मिली, उनमे यह सबसे अच्छी है।

उत्तरकाशी बिल्कुल गगाके तटपर बहुत ही सुहावना स्थान है। इससे एक-दो मील ऊपरको कुछ साधुओके डेरे है, जहा रहकर वे 'भजन' करते है। यहाके विश्वनाथजीका, तथा दूसरे मदिर भी सादी बनावटके है। इनमे तड़क-भड़क और शानशौकतका काम नही है। कहते है, वास्तविक काशी यही है—इसी काशीमे मरनेसे मुक्ति होती है। अपने तो मुक्तिके मामलेमे
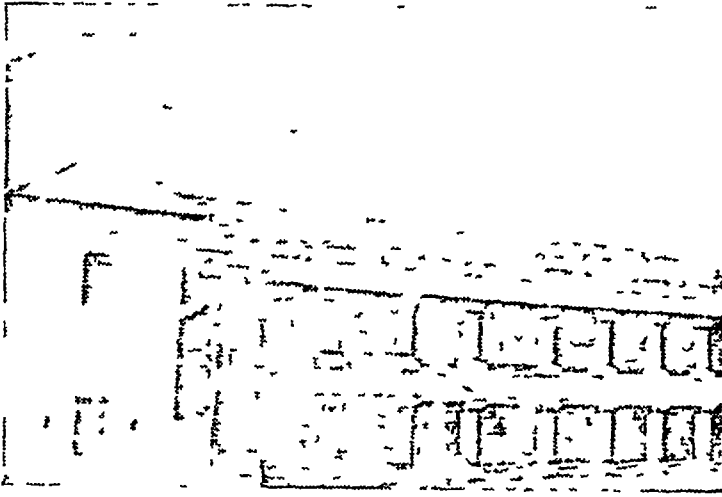
विडला धर्मशाला

दोनो ही काशियोसे किनारे है। यो प्रधानता आज काशी शहरको मिली हुई है। शहरी सभ्यताका युग जो ठहरा। उतने ही तीर्थ यहा भी है, जितने कि उस काशीमे।

आज बारह दिन बाद अखबार मिले। श्रीजवाहरलालजी वगैरहके छूटनेका समाचार पाकर खुशी हुई।

२५–६–४५

कल भोजन आदिसे निवृत्त होनेके बाद पडेसे पता चला कि श्रीघनश्यामानदजी सन्यासी (काशी मुमुक्षु-भवनके सस्थापक) इस समय यही है। अपने पिताजीके सुपरिचित होनेके कारण श्रीनर्वदाप्रसादजीको उनसे मिलना था। बातचीतसे व्यवहार-दक्ष जान पडे। सस्कृतज्ञ है, ब्राह्मणत्वाभिमानी।

वहासे लौटकर थकान मिटानेके खयालसे आज हल्की-सी

मालिश लेकर गगा-स्नान किया। फिर कालीकमलीवालेके क्षेत्रमे गए। यहा साढे दस बजेके करीब ५०-६० सन्यासी मधुकरी—सदावर्त—लेने आते है। हम लोग क्षेत्रमें बैठकर साधुओको देखते रहे। पर दर्शनमात्रसे मन किसीकी ओर आकर्षित न हुआ। अधिकतर तो मुरझाए चेहरेके और कुछ भिक्षुकवृत्तिके व्यक्ति जान पड़े। चेहरेपर सन्यासके कारण कोई ओज, तेज न दिखाई दिया। क्षेत्रके वैद्यने एक अच्छे साधुको बतलाया, जो बेचपर बैठे खा रहे थे। खा लेनेपर खडे-खडे हमने उनसे थोडी बाते की। उन्होने उजेलीमे (एक मीलपर) अपना स्थान बतलाया। नाम अपना 'ओकाराश्रम' बतलाया। शामको उनके यहा पहुंचे। आध घटेके सत्सगमे मालूम हुआ कि पुरानी चालके शास्त्रबद्ध साधु है।

इसके बाद श्रीचरणदासजीसे (वैश्य, वानप्रस्थी-से है) मिले। इनके कथनानुसार यहा प्राय साधु निष्प्राण है। इनमे कितने ही तो साधु होकर अब झीकते है। कहते है, हमसे गृहस्थ अच्छे है। कितने ही साधुओको बतलाया, जो मालदार विधवाओको ठगकर कुटी-मकानादि बनवा लेते है।

फिर श्रीचरणदासजीके साथ उपर्युक्त श्रीघनश्यामानदजीकी कुटियामे गए। उनसे कुछ शास्त्रीय, कुछ राजनैतिक चर्चा होती रही। राजनीतिमे उन्हे रस नही, पर वह पाखडके विरोधी जान पडे। सन्यासियोके बारेमे उनका अनुभव भी चरणदासजीसे मिलता-जुलता है। उन्होने अनेकको सन्यास दिलवाया है। कहने लगे कि कई तो घरवालोसे नाराज होकर सन्यास लेने आ जाते है—वैराग्यका तो उनमे नाम भी नही

होता। टोके तो उन्होंने नाम वतलाए जो उनके पास सन्यासी होने आए थे, पर उन्होंने दिलवाया नहीं। कुछ दिनो वाद घरवाले उन्हे मनाकर वापस ले गए।

श्रीघनश्यामानदजीके साथ राजनैतिक चर्चामे मैंने कहा कि शासकोने दुनियाको जोरसे लूटनेके लिए हिंदुस्तानके रोजगारियोको भी इस युद्धकालमे अपने हथियारके रूपमे वरता है। इसपर उन्होंने एक मजेदार कहावत और निम्न-लिखित किस्सा सुनाया "चार चोर एक राजाके खजानेमे चोरी करने घुसे। वहा उन्हे सोनेकी वहुत-सी ईंटे पडी दिखाई दी। पर उन्हे लेकर निकले कैसे? वहा पडे दो वासोको देखकर उनमेसे एकको एक वढिया युक्ति सूझ गई। वासोसे अर्थी वनाई और उसपर सोनेकी ईंटे सजाई। फिर जोरोसे "राम नाम सत्य है" की 'सदा' लगाते हुए निकल पडे। उस समय पहरेपर एक चालाक सिपाही था। वोला, "ई (इस) मुर्दका पीला पाव।" चोरोने ताडा कि यह भाप गया है। उनमेसे एकने, जो सरदार था, कहा, "माथो कूटतो तू वी आव।" मतलव (मुर्देके पीछे) सिर कूटते (रोते) तुम भी चले आओ, स्वाग पूरा हो जायगा, हिस्सा पा जाओगे।"

श्रीघनश्यामानदजीसे विदा मागकर धर्मशाला लौटे। यहा गीताप्रेसके उपनिषदोके अनुवादक श्रीमुनिलालजी मिले। उन्हे किसीसे हम लोगोके आनेकी खवर मिल गई थी। सुवह उनके यहा जानेकी वात तै हुई। वह गोस्वामी गणेशदत्तजीकी कुटियामे रहते है।

ग्रहण होनेकी वजहसे रातको नीचे वरामदेमे 'रघुपति राघव राजाराम' की ध्वनि जोरोमे चलती रही।

: १६ :

मनेरी

२६-६-४५

उत्तरकाशीसे सुबह रवाना हुए। बीचमें मुनिलालजीके पास आध घंटे ठहरे। उनकी कुटियाके पास, नीचे गंगाजीमें स्नान किया। साढ़े बारह बजेके करीब मनेरी चट्टी पहुंचे। मार्ग सुगम है। गंगा बराबर साथ है। इधर रास्तेमें पैसे मांगनेवाले लड़कोंका एक नया तरीका देखा। हम लोगोंको देखकर दो लड़के, एक लड़की और एक औरत रास्तेके किनारे कतारमें खड़े हो गए और तीनों बच्चे एक स्वरमें 'गंगालहरी' का पहला श्लोक, उच्च स्वरसे पाठ करने लगे, पैसे पानेके लिए।

समृद्धं सौभाग्यं सकल वसुधायाः किमपितत्
महैश्वर्यं लीलाजनित जगतः खण्डपरशोः।
श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथमूर्तं सुमनसां
सुधा सौन्दर्यन्ते सलिलमशिवं नः शमयतु॥

और भी कई लड़के इसी प्रकार गंगालहरीका यह श्लोक शुद्धतापूर्वक सुनाते मिले। उन गरीब लड़कोंके संस्कृत-उच्चारण-की शुद्धता देखकर मनको खुशी हुई।

मनेरीके पहले मार्गमें एक चट्टी मिली, पर अबतक सिर्फ चार ही मील चले थे, इसलिए वहां ठहरनेकी कोई जरूरत नहीं थी।

मनेरीमें भोजन-विश्राममें तीन बज गए। इरादा

हुआ कि तीन मील आगे सैंज चट्टीपर रातका पडाव हो। यद्यपि हमे शामको जाना चाहिए था माला चट्टी, लेकिन वर्षाके कारण सैंजका इरादा किया गया। मेरे साथी तटस्थ थे। सिरपर वादल उमडे आ रहे थे। हमने चलनेकी वात चलाई तो कई लोगोने मना किया, मत जाइए, वर्षा आ रही है, भीग जायगे। एकने कहा, "रास्तेमे वर्षाके कारण एक वडा पहाड गिरकर रास्ता वद हो गया है, रास्ता जोखिमका है।" मैंने सबका, अपने मनमे खडन किया और अर्थ लगाया कि कहनेवालोका कुछ-न-कुछ मतलव है। किसीका साथका, किसीका सौदा विकनेका, किसीका और कुछ। मनुष्य प्राय अपने मनके मुताबिक दूसरोके कथनका अर्थ लगाता है, कभी अनुकूल, कभी प्रतिकूल। सबकी अनसुनी करके हम लोग निकल पडे। चले ही थे कि पानी आ गया। कुछ ही दूर जाने-पर एक घर आया, पर वहा ठहरे नही। आगे एक वडी चट्टानके नीचे दो आदमी बैठे थे और जगलका एक जमादार खडा था। हम लोग भी पानीका जोर होनेकी वजहसे वहा खडे हो गए। उनमे एक सैंज (अगली चट्टी)का दूकानदार था। उसने वतलाया कि आगे पहाडका हिस्सा गिरनेके कारण मार्ग विकट हो गया है। वर्षा थमनेपर वह यह कहकर वही रुक गया कि मुझे कुछ स्त्रियोको उस रास्तेसे पार कराना है, आप चट्टीपर चलिए, मै थोडी देरमे आता हू। जमादारसे उसने कहा, इन लोगोको 'टपा' देना—यानी रास्ता पार करनेमे मदद देना। हम लोगोने पहाड गिरे स्थानपर पहुचकर देखा तो आधे फर्लांगका सारा रास्ता तहस-नहस हो गया था,

मानो पहाडकी अतडिया निकल पड़ी हो। मिट्टी-पत्थरोका अबार लगा हुआ था। उन्हीपरसे हमने सावधानीसे पाव रखते हुए जमादारके पीछे-पीछे रास्ता पार किया। विपत्तिसे भयभीत होनेवाले हृदयोके लिए तो मार्ग अवश्य भयकर था और विशेषत वर्षा और शामका समय, रास्ता अनजान, पर हम तो जान-बूझकर चले थे, इसलिए घबराना क्या था। भागते-दौडते सैंज चट्टी पहुचे। वहा पहलेसे दो परिचित यात्री डेरा लगाए हुए थे। हमारे सब कपडे भीगे देखकर उन्होने धोती देनेको कहा। पर हमने नही ली और अपने कपड़े उतार कर खूटीपर टाग दिए, सिर्फ लगोट लगाए बैठे रहे। तबतक दूकानदार भी आ पहुचा। उसने एक नया-सा कंबल दिया। पर वह कबल वदन छीलनेवाला था। थोडी देर वाद राम-वली आदि पहुच गए। तब हमने सूखे कपड़े पहने। उन दोनो यात्रियोसे बाते होती रही। भोजन वना। पर मैंने तो सेर भर दूधपर ही सतोष किया।

: १७ :

गंगनानी

२७-६-४५

प्रातःकाल भटवारी चट्टीको छोडते हुए गगनानी पहुंचे। यह दूसरी गगनानी है। भटवारी बडी चट्टी है। डाकबंगला भी है। सैंज से निकलकर कुम्हारटी चट्टीपर दूध पीया। थोडी ही दूर चले होंगे कि भागलपुरकी चार

भटवारी चट्टी

मारवाडी स्त्रियां मिली। हम लोग धरासूके वाद जैसे रास्ता भूले थे, वैसे ही ये बहने भी भटकी थी। जाना था केदारनाथ, लग गई उत्तरकाशीके रास्ते। किसीने इन्हे काठका पुल पार करनेको वताया था, रास्तेसे जरा हटकर होनेके कारण उसे यह पीछे छोड आई। इनका सघ पुल पार करते इन्हे नही दिखाई दिया। ये सघ और काठका पुल ढूढते आगे बढती गई। हमने इन्हे खबरदार किया। तव भी बेचारियोको चार मीलका चक्कर मुफ्तमे पड गया। ऐसी जगह भूल बहुत अखरती है। कभी-कभी तो जरा-सी भूलसे दिन-का-दिन मारा जाता है, साथवालोको भी बडी परेशानी होती है। इनके लिए साथी कितने हैरान हुए होगे ? यात्रियोको रास्ता दरियाफ्त करके ही चलना चाहिए।

आज हम लोगोको रामबली आदिके लिए पूरे दो घटे वाट देखनी पड़ी। हमारे पडोसकी कोठरीमे कई पजावी ठहरे थे। ये आदमी-से-आदमी थे—खूब लबे-चौड़े। मेरा खयाल है, लवे-चौड़े आदमियोका दिल भी वडा होता है। उनमेसे एक काग्रेसी थे, एक वेदाती। ये ऋषिकेशमे स्वर्गाश्रममे गीता-प्रेसवालोके सत्सगमे भी शामिल हुए थे। राय पूछनेपर काग्रेसीकी रायमे सत्सग अच्छा था, वेदातीकी दृष्टिसे 'न कुछ'। इनके साथ एक गुजराती संन्यासी भी थे, अग्रेजी जाननेवाले, नौ साल काशीमे रहे, सस्कृत, वेदात और न्याय पढे हुए। थकानसे चूर हो रहे थे, इसलिए यात्राको कोस रहे थे। पर साथ ही यह भी कहते थे कि बिना देखे जिज्ञासा तृप्त भी नही होती है। कई साधुओके वारेमे उन्होने अपनी राय जाहिर की।

: १८ :

हरसिल

२८-६-४५

सुबह रवाना हुए। रास्तेमे थोडी वर्षा आई। एक साधारण गाय-बैलोवाली चट्टीमे एक-डेढ घटे रुकना पडा। दूध एक-एक सेर पिया। यहा बासगाव तहसील (जिला गोरखपुर) के २०-२५ आदमी मिले। मैंने एकसे पूछा, "कुछ सहायताकी आवश्यकता है किसीको ?" किसीने जरूरत नही बतलाई। यही यवतमालकी माली जातिकी चार औरते मिली और एक मर्द, जिन्होने कहा कि वे छ महीनेसे पैदल चलते आ रहे है। इनके यहा बद्रीनारायणकी यात्राको निकले हुए यात्री जबतक दर्शन नही कर लेते तबतक रेलपर नही चढते। सच-झूठका पता नही। इन्होने कुछ मदद चाही।

११ बजेके लगभग सुक्की चट्टी पहुचे। यहासे बर्फके शृग दिखाई देने लगे। अन्य चट्टियोकी भाति यहा भी गदगी है। यहा तकके रास्तेने तो तीर्थोके प्रति कोई श्रद्धा नही बढाई। चट्टियोपर जिधर देखो, गदगी-ही-गदगी मिलेगी। यदि गंदगीकी ओरसे आख मूद लो तो ठीक, नही तो मन विचलित रहेगा।

इस दुनियाका भी कुछ ऐसा ही हाल मालूम होता है। यदि दुनियाकी गदगियो, पापो, पर हम निगाह डाले तो यह ससार बसने लायक न जान पडेगा। आंखे मूद करके

भोगे जाओ तो दुरुस्त, अन्यथा जिधर निगाह फेरो, स्वार्थ, छल, कपट, ईर्षा, द्वेष, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, सिर ऊंचा किए दिखाई देगे। इसलिए कुशल इसमे है कि ससारसे बहुत चिपको मत, नही तो अतमे निराश होना पडेगा। मक्खी दूरसे शहदको खाना चाहे तो मजेमे खा सकती है, पर उसपर एकबारगी टूटकर, उसपर चिपककर, खाना चाहे तो उसीमे फँसकर अपने प्राण खो देगी। किसीने सच कहा है, "मक्खी बैठी शहदपर, पख गये लिपटाय, हाथ मले अरु सिर धुने, लालच

हरसिलका एक दृश्य

बुरी बलाय।" ईशोपनिषदमें कहा है 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा', उसे (दुनियाको) त्यागकर (अनासक्त भावसे) भोगो।

हरसिलका दूसरा दृश्य

तीन मील वाद अनेक हिमश्रृग दिखाई देने लगे। यहां गगाका पाट चौडा है। इस यात्रामे ऐसा पाट और कही नही मिला था। इसीके साथ वढिया, मनको मस्त कर देनेवाली हवा। चलते-चलते हम लोग हरसिल चट्टी पहुचे। गगाके किनारे एक शिवमदिरसे सटे वरामदेमे डेरा डाला। चारों ओर पहाड, देवदारकी कतार-की-कतार, सेवोका वाग, श्याम-गगाकी चारो ओर विखरी धाराए, यह सव पाकर पिछली गदगीकी सारी शिकायत दिमागसे निकल गई। तवीयतमे ताजगी आ गई। हरसिल २५-३० घरोका गाव है। यहां

एक जाति रहती है जो तिब्वत आदिसे व्यापार करती है। उसकी वोली-वानी, आचार-विचार और आकार-प्रकार सब नीचे वसनेवालोसे भिन्न है।

शिवमदिरका एक ववड, वहरा पुजारी आकर श्रीनर्वदा-प्रसादजीसे वोला, "शिवजीकी आरतीके लिए कुछ सामान लानेको थोडे पैसे दीजिए।" उसे आठ आने पैसे दिये गए। शामका गया सुवहतक तो आरती उतारने लौटा नही! देखनेमे वेवकूफ था, पर वह हमे वेवकूफ वना गया। लेकिन सच पूछो तो वही वेवकूफ था, आरती करके दिखाता तो शायद रुपया-अधेली और ले लेता।

खा-पीकर हम आनदसे सोये। मजेदार ठडक होनेसे नीद खूव आई।

: १६ :

धराली, भैरोंचट्टी

२९–६–४५

प्रातःकाल शौचादिसे निवृत्त होकर रवाना हुए। अब मार्गमे सुदर-सुदर दृश्य मिलने लगे। अनेक बड़े-बडे जलस्रोत गगामे मिलते दिखाई दिये। कोई-कोई तो गगाके बराबर—कुछ ही कम होगे। इनमेसे किसीका जल गंगाके रगका ही, दूधिया भगकी भाति, और किसीका श्याम यमुनाकी भाति है। मालूम होता है, सारी बर्फका पानी बनकर गंगाके द्वारा नीचेकी जमीनको सरसब्ज करता हुआ समुद्रमे पहुचता है।

मार्गमे धराली चट्टी पड़ी। गाव और चट्टी दोनो साथ ही मालूम हुए। गगोत्रीके उस पार पडोका धराली गांव दिखाई दिया। इस पारसे उसका दृश्य बहुत सुदर है। धरालीसे कुछ आगे साधुओकी दो-चार गुफाए और कुटियाएं देखी। एकमे तो हम गए भी। सूनी पडी थी। जान पड़ता है, इसके निवासी गगोत्री चले गए। मालूम नही, यहा बैठकर ये लोग क्या तपस्या करते होगे।

मार्गमे जेगला चट्टीसे आगे बढकर पुलके पास एक मौनी जटाधारी साधु धूनी तापते मिले। पाच-सात यात्री उनके पास बैठे थे। चार-आठ आनेका चढावा भी सामने था। चिलमका
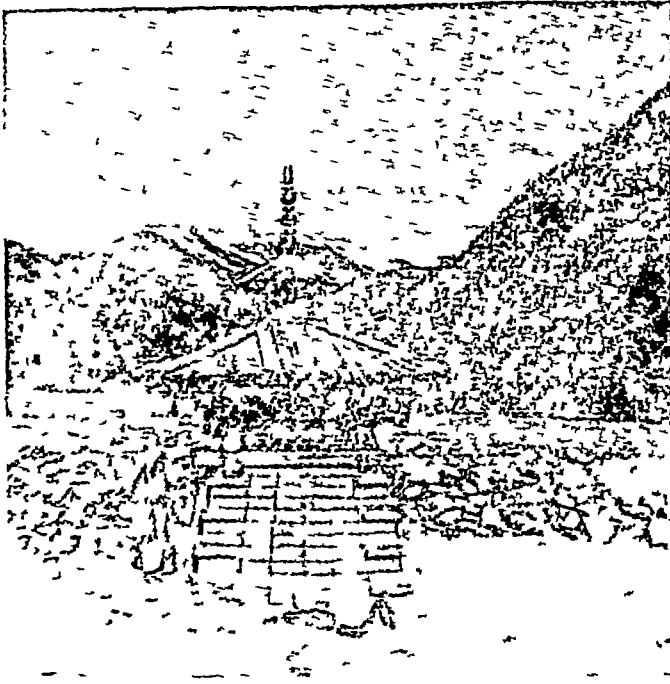
धराली चट्टीका मदिर

दम लग रहा था। मुझे तो साधु विल्कुल वेदम जचा। दम लगानेवाले साधुओपर मेरी श्रद्धा कभी नही जमी। यह आदमी तो चेहरे-मोहरेसे भी अति साधारण था। यात्रा करनेवाले भी अनेक साधु देखे, पर अधिकतर तेज-विहीन। गृहस्थ पहाडी स्त्री-पुरुपोमे उनसे कही अधिक ओज पाया।

भैरोचट्टी पहुचनेके कुछ पहले एक हल्की-सी—यमुनोत्रीकी चढाइयोके मुकावलेमे हल्की ही कही जायगी—चढाई पडी। रास्तेमे कई जगह गुलावके फूलोके पौधे मिले।

पर जैसे बागोमे रहते है, वैसे नही थे। ११ बजते-बजते हम भैरोचट्टी पहुच गए। स्थान विशेष साफ-सुथरा न होनेपर भी हवा ठडी चलती है और मक्खिया नही है। ज्यो-ज्यो ऊपर आते है, सामान महँगा होता जाता है और किस्मे कम। यहा आटा रुपएका एक सेर हो गया है, दाल दो रुपए सेर तक। घी पाच रुपए सेर।

रास्तेमे कुछ बकरिया और भेडे लौटती मिली, जिन पर कुछ लदा था। उनके साथ जो आदमी थे, उन्होने पूछनेपर बताया कि नमक लदा है। यहांसे एक महीनेके रास्तेपर भोटमे जौ, चावल ले जाते है और उधरसे उसी तौलका नमक बदलकर
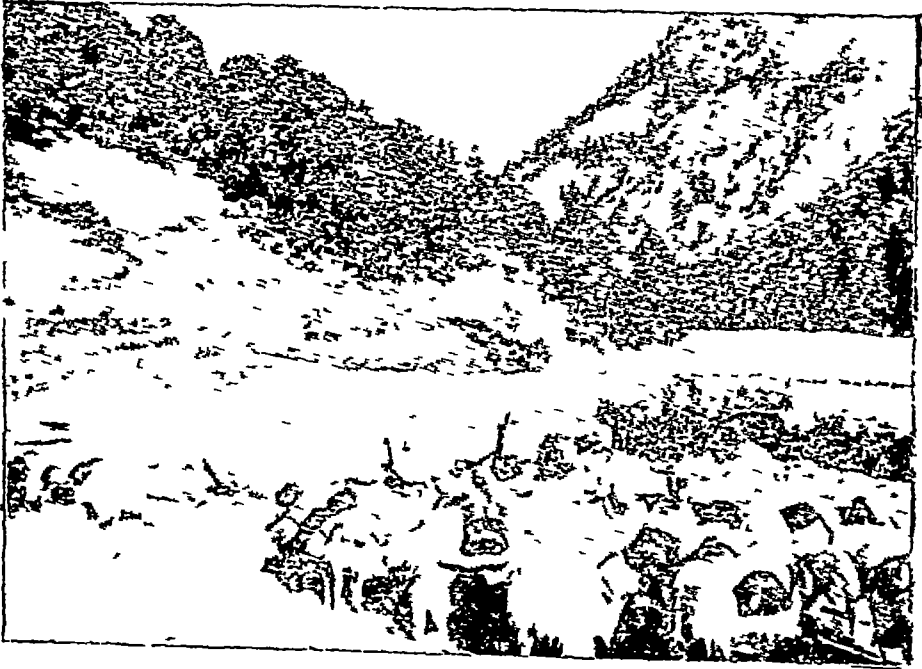
पहाडी रास्तोपर माल लादकर जाती हुई भेडें

ले आते हैं। उधर जौ-चावल नही होते, इधर नमक।

भैरोचट्टीमे पानी दूरसे लाया गया है, लकडीकी नालियो-पर। जेलमे पानीके लिए जैसी टकिया होती है, यहा वैसी ही टकी बनवाकर पानी इकट्ठा किया गया है। पानी ठडा था। इसलिए ठडक निकालनेभरको गरम कराके स्नान किया। यहाँ रोटी, दाल और सेवकी, जो हरसिलसे चुग लाए थे, चटनी खाई।

: २० :

गंगोत्री

३०-६-४५

भैरोचट्टीसे शामको तीन बजे चले सो ६ बजते-बजते गगोत्री पहुच गए। रास्ता ठीक है। कुछ चलाता तो ज्यादा है।
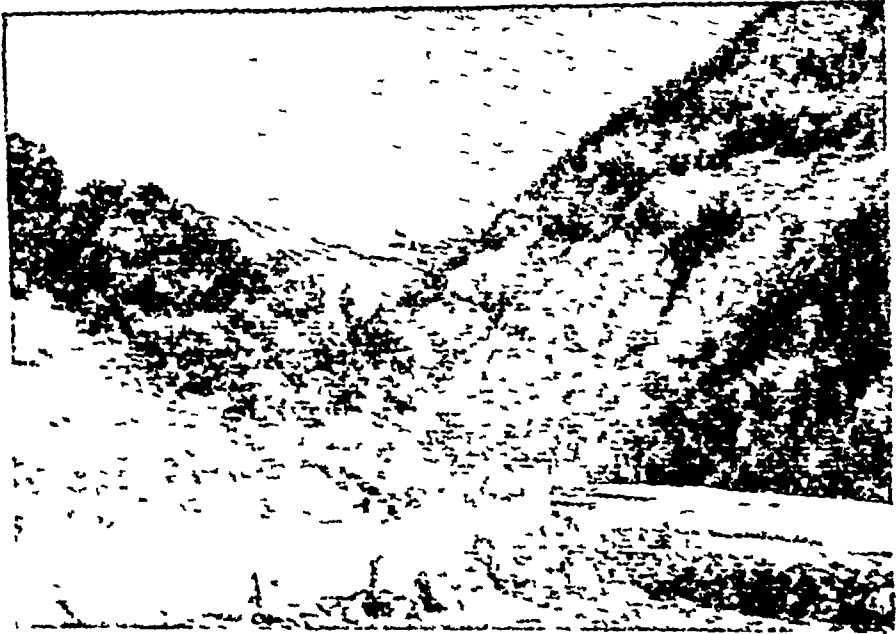
गगोत्रीके पहले

गगोत्रीमे कई धर्मशालाएं है। पडोकी और कालीकमलीवालेकी। मलके दर्शन तो यहा भी तीर्थदर्शनके पूर्व ही हो गए!

हमने कालीकमलीवालेकी धर्मशालामे डेरा किया। साधु मैनेजर अच्छा होशियार प्रबधकर्त्ता जान पडा। आदमी-उसके सधे-सधाये काम करनेवाले थे। हमारे उतरनेको एक स्थान वतलाया। हमे वह कम जचा। हमने दूसरा पसद किया तो उसने वेउज्र वह खोल दिया। हमारी आवश्यकताए जान ली। वर्तन दे दिए। हम लोगोसे कवलोके लिए उनका आदमी आग्रहपूर्वक कह गया। हमने तीन कवल लिये। अपने आप समयपर तेलकी 'ढेवरी' धर गया। इस सारे व्यवहारसे मनको वडा सतोप हुआ। यदि हम विना माग-तकाजेके स्वय विचार करके दूसरेकी आवश्यकता पूरी कर देते है तो दूसरेपर उसका एक खास असर पड़ता है। वही प्रभाव हमारे मनपर भी पडा।

पहुचते-पहुचते हमारे स्थानपर तीन-चार पडे जुट गए। श्रीनर्वदाप्रसादजीके पिताजी यहा पहले आए थे, उनके किए पडेका पता चल जाय तो उसीको मार्ग-दर्शक वेनानेकी इच्छा थी। पर उसका पता न चलनेके कारण ३०-३२ की उम्रवाले एक होशियार युवक जगतरामको सवेरे आनेको कह दिया। वातचीतसे वह नम्र, वोली-वातका होशियार, फुर्तीला और साथ ही गभीर भी, देशकी गतिविधिसे परिचित, जान पडा। पडोसे यहाकी गदगी तथा पडोकी और गढवालकी दशापर एक घटे विचार-विनिमय होता रहा। फिर दूध-पराठे खाकर सो रहे।

सवेरे सात वजेके लगभग उठे। डोल-डाल, दतौन आदिसे छुट्टी पाकर ९॥ वजेके लगभग गगाजीपर स्नान किया। गोतेकी सुविधा नही थी। इसलिए लोटेसे काम लिया। नहाते

गगोत्री मदिर

समय अपने सव इष्टमित्रोको स्मरण कर लिया कि सवके नामपर स्नान हो जाय। एक वार पाच-सात लोटे डालकर वदन मला, फिर पाच-सात लोटे डाले। इस वार सिरको पानी कुछ अधिक ठडा लगा। पर डरनेवाली ठडक नही थी। सर्दी वहुत ही साधारण थी। मै नहानेके वाद धोती वाधकर १०-१५ मिनट नंगा खडा रहा। फिर मदिरमे गये।

गनको जगतरामसे यहा रहनेवाले साधुओकी खूव आलोचना हुई थी। हमारा प्राय एकमत था। नहानेके वाद साधु-

दर्शनको चले। पुलके पार पहले कृष्णाश्रमजीके दर्शन किए। नग्न, ६० सालके लगभग उम्र, एक पहाडी चेली ३० के लगभग उम्रकी। वहुत साधारण पढी-लिखी, कृष्णाश्रमजीके इशारोको समझनेवाली। स्वय यह मौनी है। इसलिए लिखकर उत्तर देते है या कुछ आवाज-सी करते है, जिसे वह शिष्या समझाती है। उनका स्लेटपर लिखा तो हम लोग भी पढ सके। साधारण हिदी—वर्तनी कुछ अशुद्ध—लिखते है। वदनका चमडा काला और मोटा पड गया है। आकार भी विगडा-सा है। वैसे आदमी 'वाहोश' जान पडे। प्रश्नको झटपट ग्रहण कर लेते थे। दो-चार प्रश्न मैने किए, जिनके शास्त्रवद्ध उत्तर दिए। गाधीजीके सबधमे मेरे एक प्रश्नका उन्होने जो उत्तर दिया उससे जान पडा कि वह 'बेचारे' गाधीजीमे वह आत्मवल नही मानते। स्वयमे आत्मवलका क्या हाल है, यह तो वह खुद जाने या खुदा जाने। प्रश्नोके उत्तर जैसे वेदातकी छपी पोथियोमे मिलते है, वैसे ही थे। यो सरल जीव जान पडे। किसी समय वहुत तितिक्षा की थी। वर्फमे पडे रहते, कई-कई दिन खाते नही, लोगोसे दूर-दूर रहते, एक घरका खाते नही, वर्तनमे नही खाते, हाथमे लेकर या पत्थरपर धरकर खाते। ऐसे ही अनेक कारणोसे पुज गए थे। पर १०-१२ वर्षसे जवसे यह शिष्या साथ है तवसे इधर-उधर कुछ चर्चा होने लगी है। लोकदृष्टिमे यह चीज खटकती है। सव ओरसे विचार करके देखनेपर मुझे तो इनमे कोई खास वात नही जान पडी। इसके वाद श्रीप्रज्ञानाथजीसे मिले। यह वगाली है। गोरखपुरके गोरखनाथ मदिरके वर्त्तमान

महतके गुरुके गुरु बाबा गभीरनाथके चेले है। उन्होने बतलाया कि जब यह मैट्रिकमे पढते थे तब स्वप्नमे इन्हे दो व्यक्ति दिखाई दिए थे। एक बाबा गंभीरनाथ और एक दूसरा और। दूसरेने इनसे कहा कि तुम इन्हे अपना गुरु बना लो। ये कौन है, उस समय तक इसका इन्हे पता नही था। एक दोस्तके घर बाबा गभीरनाथका फोटो देखकर इन्होने पहचाना कि यही स्वप्नवाले बाबा है। फिर गोरखपुर आकर इनसे मिले। बी० ए० पास करनेके बाद तत्काल साधु हो गए। इनकी लिखी कई पुस्तके है। आठ-दस छप भी चुकी है। पाच-छ हम लोगोको दी। पढने-लिखनेके व्यसनी जान पडे। घुमक्कड भी रहे है। बातचीत करनेमे सरल स्वभाव है। कैलास हो आए है। कैलास-यात्रापर एक छोटी पुस्तक लिखी है। शास्त्रानुयायी है। ज्ञानके लिए योग—हठयोग—को शरीर-शुद्धिकी दृष्टिसे आवश्यक मानते है। अधिकतर उत्तरकाशीमे रहते है। इन दिनो कई माससे गगोत्रीमे है। 'कल्याण'मे कभी-कभी कुछ लिखा भी है। सस्कृतमे रचना करते है। सन्यास लेकर परेशान नही जान पड़े। कारण, लिखने-पढने, घूमने-फिरनेमे समय अधिक बिताया। मैंने पूछा तो बोले, "परेशानीकी वजह ही क्या है, आध सेर आहार ही तो चाहिए।" इस बातका किंचित् गर्वसे उल्लेख किया कि इस शरीरसे स्त्रीका स्पर्श नही हुआ है। इनकी दो बहने विधवा रही है, उनका दुःख भी इनके शादी न करनेमे कारण था।

यहासे चले तो इनकी कुटियाके पीछे एक मौनी नगा साधु, जो खासा तैयार था, लट्ठपर सहारा लिए खडा दिखाई दिया।

गगोत्री मदिरके आसपासका एक दृश्य

जगनरामने वताया कि यह उत्तरकाशीमे जाडेके दिनोमे गगामें कमरभर पानीमे खडा रहता है, जो जरा कठिन कार्य है। यह कभी किसी वस्त्र आदिका उपयोग नही करता। खाना क्षेत्रका खाता है, तथापि ऊपरसे स्वस्थ दिखाई देता है। पता नही, इसके स्वास्थ्यका रहस्य क्या है? वोलता नही तो मालूम भी कैसे हो? सुना, एक क्षेत्रवाले साधुने इससे लगोटी लगानेको कहा। न माननेपर दूसरे दो साधुओको लगाकर इसे वहुत पिटवाया। इसे तीन दिन खानेको कुछ नसीव न हुआ। तव मौन तोडकर जगतराम पडेसे अपने पिटनेकी वात कही, खाना मागा और रक्षा भी। पडेने कहा, "तो लगोटी क्यो नही

लगा लेते, कपडेकी न सही, भोजपत्रकी ही लगा लो।" बोला, "नही, मेरी नगे रहनेकी ही प्रतिज्ञा है।" हमने और भी एक-दो नगे साधु देखे। तगडे वह भी थे। मेरी समझमे सामाजिक दृष्टिसे इन साधुओके नगे रहनेपर विचार होना चाहिए। कभी गाधीजीने किसी जैनी साधुके नगे रहनेपर 'हरिजन' में कुछ विचार प्रकट किए थे। प्राकृतिक दृष्टिसे तो नगे रहनेमे मुझे कोई अडचन नही जान पडती, पर सामाजिक खयालसे नगे रहना उचित नही जचता। यहा व्यक्तिगत स्वतत्रताका सवाल उठ सकता है। पर ऐसे आदमी समाजसे बिल्कुल बाहर रहे तो भले ही नगे रहे। जो हो, यह विषय बहस-तलब है।

यहासे चलकर श्रीतपोवनजीके यहा पहुचे। ६० के लगभग इनकी उम्र होगी। खुशमिजाज आदमी है। तनिक स्थूल शरीर, रग गोरा। जरा 'मुलक' कर (उल्लसित होकर) बोलते है। सुना, एम० ए० है, सस्कृतज्ञ है। इनसे कई प्रकारकी चर्चाए हुई। अधिकतर मै इनकी सुनता रहा। बातको ठीक ढगसे समझाते है। उदार दृष्टि और व्यवहारी है। देशभक्तिको भी ईश्वराराधन ही मानते है। कहते थे कि अच्छी नीयतसे, ईश्वरार्पण बुद्धिसे किये गए सब कर्म मनुष्यको मुक्तिकी ओर ले जाते है। सन्यासी-वैरागी होनेमे कोई बडप्पन हो, यह मानते नही जान पडे। धर्म (जिसमे सयम और कुछ ऊचे उठनेकी बात हो) सब अच्छे है। इनसे चर्चा करके मनको सतोष रहा। गाधीजीपर इनकी श्रद्धा है। उन्हे यह महान् व्यक्ति मानते है। मैने कहा, "यदि गाधीजी सन्यासी होते तो कैसा होता?" बोले, "गाधीजीका सन्यासी होना संभव

नही था। वह ससारमे आये ही दूसरे मतलबके लिए है और उसे पूरा कर रहे है।" सुना, तपोवनजी मद्रासी है, पर अब तो हिदी मजेमे बोल-समझ लेते है। इनके यहाके बाद गौरीकुड देखते हुए पुल पार करके इधर आ गए। इधर भी कुटियामे एक श्वेत वस्त्रधारी भाई मिले। यह महाराष्ट्र थे। रामकृष्ण-मिशनमे मुनीमी करते रहे है। विश्रामके लिए यहा आए है। मैने धर्मशालामे आकर दूध पीकर थोडा आराम किया और फिर हम सवा मीलपर फलाहारी बाबाको देखने चले। वृद्ध आदमी, ८० वर्षके लगभग होगे। चार-पाच आदमी साथ और रहते है। कुट्टू (फाफड) और रामदानेके आटेकी रोटिया तथा एक तरहके 'बोडे' सरीखे लबे बीज, जो प्राय यहा होते है, उन्हे छौककर खाते है और जो कोई आ जाता है उसे भी विशेष आग्रहपूर्वक यही खिलाते है। बीच-बीचमें एकाध बार यह भी कह देते है, "हम कुछ जानत नाय है।" सचमुच जानकारी है भी कम ही। बाटना इन्हे पसद है, और अपने बाटनेका बखान भी! लोगोसे लेते और बाटते है, कमीशनमे कुछ बचाते है या नही, इसका पता नही। इनकी निजकी रहनेकी कोठरी देखी। बहुत गदी। शायद वर्षोंसे बिछावन बदला नही गया, काफी धुआ। जाडेमे भी, जब सब बर्फसे ढक जाता है, यह यही रहते है। चार वर्षोंमे यहासे गगोत्रीके मदिरतक भी नही गए। शायद पाच सालसे यहा आकर रहने लगे है। पहले लछमनझूलेके पास रहते थे। वहा कुछ मदिर वगैरह बनवाए थे। गोमुखीमे हाथ डालकर माला फेरते एक नवयुवक चेला भी इनके पास बैठकर माला सटका

और बातें बना रहा था। आंखें उसकी चौंधियाई हुई थीं। बेवकूफ और चंट दोनों साथ-साथ जान पड़ता था। अपनी समझमें चंट, पर मेरी दृष्टिमें बेवकूफ ही जंचा। हम थोड़ी देर बैठे, प्रसाद पल्ले बांधा, छीमीके दो-चार दाने साधुके आग्रह-से उन्हींके सामने खाकर थोड़ा पानी पिया। दो रुपए भेंट चढाए और चल दिए। दूसरे दो फलाहारी साधुओंको भी, जो गंगोत्री उस पार रहते हैं, देखना था पर रास्तेमें कुछ बूंदें पड़ने लगीं, इसलिए वह इरादा छोड़ना पड़ा।

गंगोत्रीमें इस समय कुल ३५ पंडे थे, सबको बुलवाकर मेरे साथीने कुछ-कुछ दक्षिणा दी। उनसे थोड़ी देर सफाई तथा शिक्षा आदिपर चर्चा की। उन्होंने यहां पाखाने बनवाने-की जरूरत बतलाई। यहांके पंडे सीधे और सज्जन जान पड़े।

जगतरामको सब पंडोंके अतिरिक्त चार रुपए और दिये। वह दस्तखतोंके लिए विशेष आग्रह करता था। पर उसे बतला दिया कि दस्तखत करनेकी हमारी इच्छा नहीं है। इससे वह कुछ निराश-सा रहा। उसे पैसोंकी अपेक्षा दस्तखतोंकी परवा ज्यादा थी।

श्रीतपोवनजीने चर्चामें एक सुंदर उपदेश-वाक्य कहा था—'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।' मुझे यह चरण बहुत रुचता है। दूसरोंके प्रति हमें कैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए या यों कहें कि कैसा करना चाहिए, यह इस चरणमें बड़ी खूबसूरतीसे और बहुत थोड़ेमें बतला दिया है। इसमें परस्पर व्यवहारकी एकमात्र कुंजी है। सब भाषाओं सब देशों और सब धर्मोंमें ऐसे उपदेश मिलते हैं। इस चरणका

अर्थ है कि "जो अपने लिए प्रतिकूल हो वैसा आचरण दूसरोंके लिए मत करो।" श्रीतपोवनजीने तो मुझे एक उदाहरण देकर समझाया था। तुम्हे यदि दूसरेके कडवे बोल अखरते है तो औरोंके प्रति कटुवाणीका प्रयोग मत करो। यदि दूसरोंकी तीखी निगाह नही सुहाती तो दूसरोंके प्रति मृदुदृष्टिसे देखो। यदि तुम्हे ताडना नापसद हैं तो दूसरोंकी ताडना—भर्त्सना मत करो। तुम्हे अपनी निंदा-चुगली नापसद हो तो तुम दूसरेकी निंदा-चुगलीसे बचो। किसीका अपनेपर हँसना न रुचता हो तो तुम दूसरेपर हँसनेसे बाज जाओ। इसी तरहका दूसरा उदाहरण है, "यद्यदात्मनि इच्छेत तत्परस्यापि चिन्तयेत्।" जो अपने लिए चाहते हो वही दूसरोंके लिए इच्छा करो। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हे प्यार किया जाय तो तुम अन्यको प्यार करो। अपने प्रति विश्वास चाहते हो तो दूसरोंपर विश्वास करो। एक कहावत है कि "राख पत, रखा पत" अर्थात्—दूसरोंकी इज्जत रखो तो अपनी इज्जत रखाओ, सुख चाहते हो तो सुख दो।

इन सब वचनोंका एक ही मतलब है। जब दूसरोंसे व्यवहारका अवसर आए, इन वचनोंको याद करो। जब कभी संदेह हो कि हमारे व्यवहारमे कही खामी है तो उसे कसौटीपर कसकर देख लो। कोई तुमसे कृपा, करुणा क्षमा मागे तो खयाल करो कि तुम्हे भी इनकी जरूरत हो सकती है। यदि अपने घर आए हुए मेहमानोंको तुम आदरसे बिठाते नही हो, बात नही पूछते हो तो सोचो कि कोई दूसरा अपने घरपर तुमसे वही व्यवहार करे तो तुम्हे रुचेगा क्या? यदि तुम किसीके

वारेमे कानाफूसी करते हो तो खयाल करो कि तुम्हे अपने वारेमे दूसरेका ऐसा करना भावेगा क्या ? यदि तुम बडोके सामने वेअदबीसे वोलते, वैठते, हँसते हो तो विचारो कि दूसरेके घर कोई छोटा वच्चा तुम्हारे सामने वैसा व्यवहार करे तो तुम्हे वह अच्छा लगेगा क्या ?

मनुष्य ससारमे अधिक काम मनसे ही लेता है। हम दूसरेके लिए जितना हाथसे नही कर सकते, उससे अधिक मनसे सोच डालते है। इसलिए "यद्यदात्मनि इच्छेत तत्पर-स्यापि चिन्तयेत्" सूत्रमे कहा है कि किसीके लिए वह वात नही सोचनी चाहिए जो हम चाहते हो कि दूसरा हमारे लिए न सोचे। हम कव चाहते है कि कोई मनसे हमारा बुरा चाहे या सोचे ? फिर हम कैसे दूसरेका बुरा चाह या सोच सकते है ?

मनके वाद दूसरी प्रभावशाली इद्रिय वाणी है। कहा है, वातन (वाणीद्वारा) हाथी पाइए वातन हाथीपावँ (हाथीके पावके नीचे)। और कहा है, "तलवारका घाव भर जाता है, वातका घाव नही भरता।" इसीलिए हमे वाणीका वहुत सभालकर उपयोग करना चाहिए। यदि हमे ठीक बोलना न आए तो उससे मौन रहना कही अच्छा। कहा भी है, "मौन सर्वार्थ साधनम्" "सवसे भली चुप।" हम वोलकर किसीके हृदयको ठेस पहुचाए, इससे चुप हजार दर्जे अच्छी। मौनके प्रगसकको यह मालूम था कि "सत्य ब्रूयात् (वोलो) प्रिय ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्"—मत्य वोलना, साथ ही प्रिय वोलना, कठिन अति कठिन कार्य है। हमे इस कलामे कुशलता प्राप्त करनी चाहिए। पग-पगपर असफलता होगी, पर तव भी प्रयत्न करते रहना चाहिए।

: २१ :

छाया-पथ

हम लोग यमुनोत्रीसे २२-६-४५को चलकर ३० तारीखको गंगोत्री पहुंचे थे, यानी ८ दिनमें और स्वामी राम १६ सितम्बर १९०१को यमुनोत्रीसे नीचे खरसाली गांवसे चलकर छाया-पथ द्वारा १८ सितम्बरको गंगोत्रीके नीचे १२ मील इधर धराली गांव पहुंच गये थे। उस मार्गका वर्णन उनके लेखसे नीचे दिया जा रहा है।

पवित्र गंगा रामका विरह सह न सकी। महीना बीतते-बीतते उसने रामको अपने पास फिर बुला लिया। सारा सन्तोष-संयम छोड़कर वह उनपर सहर्ष अश्रुकण बरसाने लगी। प्यारी गंगे! गंगोत्रीमें तुम्हारी दिन-दिन बढ़ती छवि और पल-पलकी चंचल कलकलका वर्णन कौन कर सकता है? गोरे-गोरे गिरि और भोले-भाले देवदार तुम्हारे पड़ोसी हैं। ये कितने सच्चे और सीधे हैं। उनकी अपूर्व और मधुर भीनी-भीनी सुवास मनको प्रफुल्लित और मस्त कर देती है।

परमात्मा यहां पत्थरोंमें सोता, लताओंमें श्वास लेता, पशुओंमें चलता-फिरता और मनुष्योंमें जीता-जागता प्रतीत होता है।

यात्री यमुनोत्रीसे गंगोत्री दस दिनसे कममें नहीं पहुंचते, राम तो तीसरे दिन ही पहुंच गया। इस रास्तेपर अभी तक किसी

मैदानमे रहनेवालेने पैर भी न रखा था। रामने लगातार तीन राते सुनसान जगली गुफाओमे बिताई। उसे कही कोई कुटिया, झोपडी न मिली। रास्तेभरमे कोई दो पैरवाला जीव भी दिखाई न दिया।

"पहाडी लोग इस मार्गको 'छायामार्ग' कहते है। प्राय. वारहो मास उसमे छाया-ही-छाया रहती है। वृक्षोकी छाया? नही-नही। भला इतनी अधिक ऊचाई और ऐसी ठडी हवामे वृक्षोका क्या काम? यह मार्ग प्राय मेघोसे ढका रहता है। यमुनोत्री और गगोत्रीके पडोसी गांवोके चरवाहे हर साल दो-तीन महीने यहा अपने पशु चराते रहते है। रामको वे बर्फसे ढके हुए बडे-बड़े गिरि-शिखरोके पास अकस्मात् मिल गये। उन्हीसे उसे इस मार्गका पता मिला। बदरपुच्छ और हनुमानमुखके निकट उनसे भेट हुई। ये दोनो गिरिश्रृग दोनो सरिता स्वसाओके स्रोतोको मिलाते है।

"फूलोकी वहा वह भरमार है कि समूचे मार्गमे मानो जरदोजी[1] की खेती ही की गई है। नीले, पीले, बैंगनी—भाति-भातिके फूलोसे जगल भरे पडे है। ढेर-के-ढेर कमल, और बनफ्शा, गुललाला और गुलबहार सौ-सौ वर्णके एक-एक फूल, गूगलधूप, ममीरा, मीठा तेलिया, सालिम मिश्री आदि अनेक रुचिर रगीन लताये, केसर आदि अपार मधुर सुगधसे भरे पौधे तथा तुहिन सीकरोसे भरे गर्भवाले गर्बीले ब्रह्मकमल, इन सबने गिरिराजको मानो स्वर्ग और मृत्युलोकके स्वामीका

---

[1] कपडोपर सलमे-सितारे का काम।

प्रमोदवन बना दिया है ।

"गोल चादका यौवन फूट-फूटकर बाहर निकल रहा है। चारो ओर सुदरता वरस रही है। पवन चारो दिशाओमे निर्भय विचर रहा है। जो सामने पडता है उसीको चूमता है। चटकीले, चमकीले फूलोको तो बार-बार चुवन करता है। इन विराट् पर्वतोकी चोटियोपर सुदर-सुदर खेत कामदार कालीनोकी भाति विछे हुए है । देवगण ! कहो, भला ये तुम्हारी भोजनकी मेजे है या नृत्य-भूमि ? कल-कल करते हुए नाले और दरारो और करारो पर शोर मचाती हुई नदी, दोनो यहा मौजूद है। किन्ही-किन्ही चोटियोपर तो दृष्टि चारो ओर वेखटके दूर तक जाती है। न उसकी राहमे कोई वडा पर्वत आडे आता है, न उसकी राहको कोई स्पष्ट मेघ ही रोकता है। किसी-किसी गिरि-शिखरको तो गगनभेदी और घनच्छेदी होनेका इतना अधिक उत्साह है कि ठहरना भूल ही गया है, मानो आकाशमे पहुचकर ही दम लेगा।

"मानी महीधरोकी महान् महिमाका वर्णन करते-करते मार्गकी सुषमामे असामान्य वृद्धि करनेवाली उस मणिमय अरुणोदयकी ओसको भी भूल जाना उचित न होगा। अहा ! देखो, वह कमलदलमे लगा छोटा-सा चचल, चपल सलिल ओसकण मनुष्यके मनका कैसा अच्छा नमूना है। छोटा है, चपल है परन्तु अहा ! कितना पवित्र है ! कैसा स्वच्छ और चमकीला है। वह सत्यका सूर्य वह अनादि दीप्तिका प्रभाव मानो उसीके हृदयमे स्थित है। मानव ! क्या तू वही छोटा-सा जलकण वही जरा-सी बूद है ? सचमुच तू वह तनिक-सी

' बूंद नही है, तू 'ज्योतिषा ज्योति' प्रकाशोका भी प्रकाश है। सब वेद यही कहते है। राम यही कहता है। निस्सदेह यह तेरा ही तेज और तेरा ही प्रकाश है जो ऐसे दिव्य स्थलोको ज्योति और जीवनसे पूर्ण कर देता है।"

: २२ :

गंगोत्रीसे वापसी

१-७-४५

प्रात काल छ बजे ही हमारा डेरा कूच हो गया। बारह बजते-बजते हरसिल (१५ मीलपर) पहुच गए। हरसिलसे गगोत्री जानेमे जो श्रम हुआ था, लौटनेमे, आज उससे रुपयेमे बारह आना पडा होगा। पाच घटेमे पद्रह मील चले। सुना, हरसिलसे आगे जानेका पुल टूट गया है।

खा-पीकर देखने गए कि पुल बना या नही। पुलके दो बल्लोमे एक टूट गया था। यो नदीका पाट सिर्फ चार-पाच गज ही चौडा होगा और पुलके नीचे गहराई भी शायद तीन-चार फुटसे अधिक न हो, अन्यत्र तो इससे भी कम हो सकती है। पर वहाव इतना तेज था कि मजाल क्या कि कोई पैरोसे पार करनेका साहस भी कर सके। पानीका उछाल देखकर दिल दहलता था। प्राय पहाडी नदियोमे भारी वेग होता है। पानी अधिक आता है, वहावकी जगह तग होती है, ऊचाईसे अधिक निचाईकी ओर गिरता है, इसीलिए पानीमे वहुत जोर रहता है। लोगोने वतलाया कि कलतक पुल वन सकता है। लौट आए। पद्रह मील जोरसे चलनेके कारण थके थे, हवा खूव थी, खूव सोए।

सुवह उठकर शौचादिसे निवृत्त हुए। नहाए, खाया-

पीया और फिर पुलकी ओर चले । सुना, मदद लगी ह, बन रहा है। कोई वोला, आज बन जायगा, कोई बोला कलतक। जाकर देखा, पचासो आदमी लगे है, पर कामके बजाय सलाह अधिक कर रहे है। कोई मुखिया—सेनापति—नही जान पडा कि जो सवको चलावे। लेकिन जो एक चीज सवको चलानेवाली वहा थी, वह स्वार्थ था। सवका स्वार्थ इसमे था कि पुल बने, नही तो कई काम रुके रहेगे। यही एक वात सवको ठीक दिगामे कुछ करनेको मजवूर कर रही थी। हम लोग यही बैठे तमाशा देखते रहे। अन्य यात्री भी, इस पार, उस पार बैठे हुए थे, इस धुनमे कि कव पुल तैयार हो और पार करके नीचे या ऊपर जायं। सब परेशान थे कि आज तैयार होगा या नही। यात्रामे एक दिनका विघ्न पड़ जानेसे दिक्कत, मानसिक दिक्कत, वहुत वढ जाती है। हम लोगोके अदाजमे पुल दो घटेमे तैयार हो जाता जान पड़ा। इससे बोझियोको विस्तरे वगैरह वाध लानेको कह दिया। पर पुलपर रखनेको जो बल्ला (लट्ठा) आया था, वह छोटा निकल गया। फिर एक आया, वह टेढ़ा निकल गया। दो घटे इसीमे निकल गए, पर पुल पार न पड़ा। तब उन दोनो बल्लोपर लकडिया विछानी शुरू हुई, पर वे ठीक जमी नही। हम लोग तो चाहते थे कि जैसा-तैसा बनाकर एक वार हम लोगोको पार कर दे, पर वनानेवाले तो मजवूत ही वनाना चाहते थे। दोके बल्ले तीन बल्ले लगानेसे मजबूती अधिक आती थी। इसलिए एक और लगाया। इनपर लकड़ियां बिछाई गईं। अधिक दूर तक बिछानेके पहले ही लोग पार करने लगे। हमने भी आधा

विछनेपर ही पार किया। पुलकी तैयारीमे पाच वज गए थे। आसमानमे वादल भी छा गए थे। इसलिए हम जोरोसे चले। अढाई घटे साढे छ मील चलकर सूक्की चट्टी पहुचे। यहा दूध और परॉवठे खाए और सो गए।

सवेरे छ वजे फिर चले। साढे नौ वजेतक नौ मील चलकर गगनानी पहुचे। रास्ते भर पानी टपटपाना रहा। जोरसे यहा पानी कम ही वरसता है। पर हमारे कपडे भिगोनेको तो इतना काफी था। एक घटे वाद वोझी आए। हम कुछ ठडे हो रहे थे, सो तीन-तीन पाव गरम दूध पीया।

गगनानीसे खा-पीकर १२ वजे रवाना हुए। रास्तेसे दो फर्लांग चढनेके वाद ऋषिकुड (व्यास और वशिष्ठ कुड)—गरमकुड—मे स्नान किया। पानी ठीक गरम था। नहाने-धोने आदिमे आध घटा लगा होगा। थकावट उतर गई। शामको साढे छ के लगभग भटवारी पहुचे। खाया-पीया, रातभर सोए।

प्रात काल भटवारीसे चलकर साढे दस वजेके लगभग मनेरी पहुचे। रास्तेमे सैजके वाद वह पहाड गिरा हुआ स्थान तो आज विल्कुल ही विकट न जान पडा। जान पडता है, जव कई विपत्तिया साथ हो जाती है तो छोटी विपत्ति भी भारी लगती है, जैसे "कोढके साथ खाज।' मनेरीमे खाया-पीया, आराम किया और छ वजते-वजते उत्तरकाशी पहुच गए। डाकखानेसे पत्र लिए । रामकृष्ण मिशनके एक ब्रह्मचारीसे अवतककी सारी राजनैतिक परिस्थिति जानी और उसके वाद एक दूकानपर श्रीआनदस्वामीजी, जो सात मास स्वामी

रामके साथ रहे, मिल गए। उनसे घटे-डेढ-घटे बाते हुई। उनके नाम अग्रेजी और हिन्दी दो पत्र आते है। वे दोनो उनसे लेकर पढे। उन्होने स्वामी रामके बारेमे बतलाया कि मैने अपने २५ वर्षके भ्रमण-कालमे ऐसा साधु नही देखा। जो पढे-लिखे ज्ञानवाले है उनमे मस्ती नही है और जिनमे मस्ती है उनमे पढाई-लिखाई—ज्ञानका अभाव है। श्रीआनदस्वामी सरल-सज्जन जान पडे। १४-१५ वर्षसे उत्तरकाशीमे ही रहते है। कलकत्ताके बहुतसे मारवाडियोको जानते है। कई जगह कई सस्थाओमे काम कर चुके है। उनसे मिलकर सतोष हुआ।

फिर बिडला धर्मशालामे आकर खाया-पीया, सो गए।

आज एकादशी थी। रोटी नही खानी थी, इसलिए उत्तरकाशीमे ही शौच-स्नानादिसे निवृत्त हो गए। गरम पानीसे नहाकर ठडे गगाजलसे स्नान किया। इससे कलकी थकान जाती रही और ताजगी आ गई। इधर कई दिन तक अट्ठारह-अट्ठारह मीलकी मजिल होनेसे कुछ थकान आ जाती है, पर रातको सोए कि प्रातकाल ताजे।

उत्तरकाशीके चले डुडुम चट्टीमे विश्राम किया। उत्तरकाशीमे रास्तेसे साथ लिया हुआ एक पाव खोवा, थोडे बादाम और किशमिश खाकर जलपान किया। यहा थोडी मिश्री लेकर जल पीया। धरासूमे रातको एक सेर दूध मिल गया। रातभर मजेमे सोए। प्रातकाल अच्छा पानी बरसा। ५॥ बजे रवाना हुए।

नगुन चट्टीसे कुछ पहले एक नालेपर स्नान-जलपान किया

और ११ वजते-वजते छाम पहुच गए। छाममे खा-पीकर दो घटा आराम किया। वहा एक व्यक्ति रोगी-सा पडा था, उससे वाते की तो मालूम हुआ कि यमुनोत्रीसे इधर, जानकी चट्टीपर उसे जोरका बुखार आ गया। पैर भी फूले हुए दिखलाता था। इससे अशक्त हो गया, लौट पडा। साथी भी कोई अच्छा नही था, न पैसोका जोर था। जो कुछ पासमे था वह कडी-खच्चरवालोको देकर किसी तरह यहातक पहुचा है। उसकी दशा दयनीय जान पडी। दो-चार सौ यात्रियोमे विना यात्रा पूरी किए, इसीको वापस होते देखा था और एक दरभगेवालेको देखा था। यह मुगेर जिलेका था, सीधा सादा आदमी था। इसे दस रुपये दिए। रुपए देनेके वाद कहने लगा, मुझे घोडा या कडी करके टेहरी पहुचानेका प्रवध कर दीजिए। हम लोग जितनी तेजीसे यात्रा कर रहे थे, उसमे यह सभव नही था, न ज्यादा झगडेमे फँसना ही हमे अभीष्ट था—रुपए देना तो आसान था। ढाढस दिलाया, "निराश मत हो, भगवानका भरोसा करो और साहससे काम लो।" ऐसा जान पडा कि डूवतेको वचाने जानेमे जैसे वह घवराकर वचानेवालेको पकड लेता है, वैसे ही किसीकी थोडी मदद करो तो वह अधिकका अभिलाषी हो जाता है। ऐसा होना प्राय स्वाभाविक है।

छामसे ४ वजे रवाना होकर सात वजते-वजते भल्डियाना पहुच गए। इस रास्तेमे सिर्फ एक ही झरना है और वह भी पुलके नीचे, वाकी पानीका अभाव है। जिन्हे प्यास अधिक लगती हो, उन्हे पानी साथ लेना चाहिए। भल्डियाना धर्म-

शालामें पहुंचकर खाया-पीया। रातभर सोए। कुछ रात गए दो गुजराती स्त्रियां और एक पुरुष वहां और आए। पर उनका बोझी शायद अंधेरा पड़ जानेसे न आ सका था। बोझी न आनेसे गुजराती लोग सवेरे रवाना न हो सके।

रातको सोते समय सुरेश (बोझी) ने कहा, मसूरीका पैसा अलग तै कीजिए। यद्यपि सब तै होकर रसीदमें पहले लिखा जा चुका था। पर उसके मनमें शायद हमसे कुछ अधिक वसूल करनेकी बात आई होगी। मैंने उसे बताया कि ऐसी गलत बात नहीं करनी चाहिए। दस-पांच मिनट बात करके वह चुप रह गया।

रातको पिस्सू, खटमल या चीलर, न जाने क्या, काटते रहे बहुत थोड़ी नींद आई। दिनमें दो घंटा सो लेना भी नींद न आनेकी वजह हो सकती थी। प्रातःकाल थोड़ी नींद आई। आज कुछ जल्दी उठे।

हम आते समय ऋषिकेशसे टेहरी होते हुए आए थे, लेकिन अब लौटते हुए मसूरी होकर जानेको थे। इसलिए कि एक नया रास्ता देख लेंगे और दूरीमें कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता था।

थोड़ी दूर टेहरी जानेवाली सड़कपर चलनेके बाद मसूरी-की सड़क पकड़ी। सड़क तो जैसी-तैसी ठीक है, पर चढ़ाई खड़ी जैसी है, सात मीलतक बराबर ऊंची होती गई है। कहीं-कहीं सड़क ऊबड़-खाबड़ भी है। रास्तेमें पानीका अभाव है। चार मीलपर एक चट्टी है, पर पानी नहीं। कोई ठहरे तो पानी डेढ़ मीलसे लाना पड़ेगा। यह रास्ता मसूरीसे आनेके

लिए अच्छा है। उतराई-ही-उतराई पडेगी। हम लोगोने दस बजेतक किसी तरह रास्ता पार कर लिया। वर्षा भी जारी थी। थालधार और ठा चट्टी छोडते हुए भीगते-भागते किसी तरह काणाताल पहुचे। यहा पानी है, स्थान साधारण है। भीगनेसे जाडा लग रहा था। चट्टीमे एक जगह आग जलती मिल गई। दो घटे तापता रहा, तब बोझी पहुचे। थोडा कसार खाया, दूध पीया। तीन बजे रवाना होकर छ बजे शामके लगभग आठ मीलपर धनोल्टी पहुचे। यह जगह ठीक है। धर्मशाला तो काणातालमे भी थी, पर यहाकी उससे ज्यादा अच्छी है। कुछ दूकाने है। सेबोके बाग है। तरकारी वगैरह भी मिल जाती है। एक रुपयेके सेरभर सेव खरीदे। खटमिट्ठे थे। डेढ पाव खाए होगे। घटे-सवा-घटे बाद रामबली वगैरह पहुचे। रास्तेके दृश्य और रास्ता काणातालसे धनोल्टी तक प्राय सुदर है। बर्फके शृग कही-कही दिखाई देते है। काणाताल तो काफी उचाईपर है।

धनोल्टीसे सवेरे ६ बजे रवाना होकर झालकी चट्टी छोडते हुए १२ बजते-बजते मसूरी पहुचे। रास्ता अच्छा है। मसूरीसे ४-५ मील पहले तो बहुत अच्छा है। दूरी बचानेके खयालसे कुछ पहाडियोके साथ, हम लोग एक बीहड रास्तेसे चढे। कुछ चलाई तो बची, पर चढाई अधिक पड गई। कम-जोर लोगोको तो ऐसे लालचमे पडना ही नही चाहिए। बादको पछताना पडता है।

मार्गके दृश्य सुदर है। धनोल्टीसे रातको बिजलीकी रोशनी देखकर हम समझ रहे थे कि रोशनी मसूरीकी है, पर
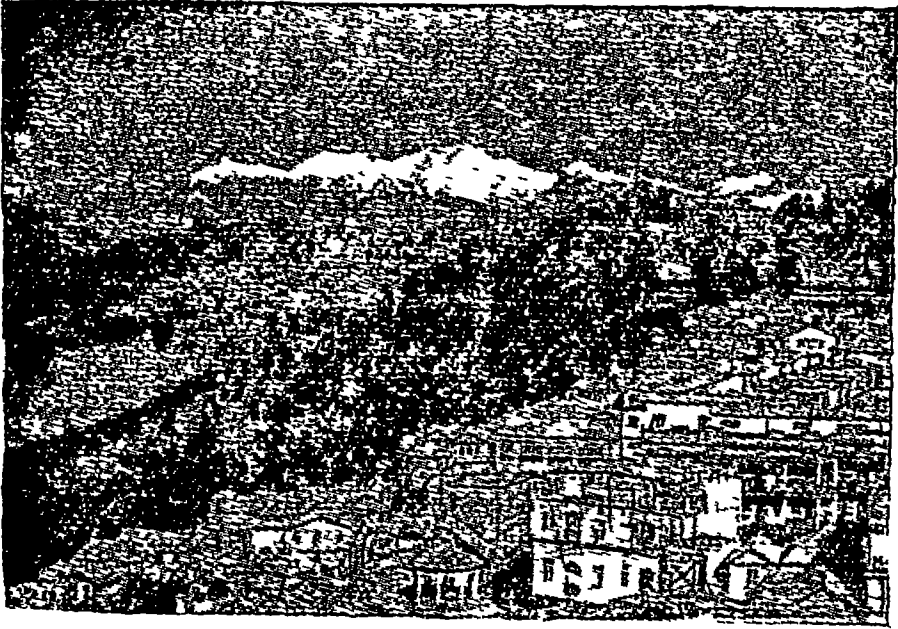
मसूरी

सवेरे मालूम हुआ कि वह देहरादूनकी थी। २४ मील दूरीकी रोशनी मील दो मील जान पड रही थी। धनोल्टीसे जिन्हें मसूरी न जाकर सीधे देहरादून जाना हो, उनके लिए पैदलका बीचसे एक रास्ता और है, उससे ५-६ मीलकी दूरी बच जाती है।

मैं सन् १९११-१२ मे अर्थात् तैंतीस साल पहले मसूरी, देहरादून आया था। उस समयकी मसूरीका पूरा स्मरण मुझे आज नही रहा। इसलिए अनुमान न कर सका कि मसूरीमे अब कितना अतर पड गया है। तबसे बाजार और कोठिया बहुत बढ गई है, यह तो प्रत्यक्ष ही है। हम महीने भरसे बिना आबादीवाले मुकामोकी यात्रा करते आरहे थे, उसके मुकाबलेमे मसूरी

अधिक आवाद जान पडी—विल्कुल शहरी, नकली वातावरण, लोगोकी पोशाक और चाल-ढाल वनावटी-सी। कलकत्ता, ववईमे इस निरालेपनकी ओर निगाह इतनी नही खिचती जितनी यहा। आदमियो द्वारा खीचेजानेवाले रिक्शोमे औरते और मर्द इधर-से-उधर व्यर्थ फिरते और बहुतेरे तो वाजारका चक्कर काटते दिखाई दिये—मानो तेलीके बैलकी भाति उनके घूमनेका खास स्थान वाजार ही है। बडे शहरोके मुकावलेमे दूकाने यहा अति साधारण है। गगोत्री आदिके स्थानोको देखते मुझे मसूरी पसद नही आई। डेढ दो मील लबे वाजारमे एक चक्कर लगाकर मै धर्मशालामे आ गया।

शामको ६॥ वजे मसूरीसे रवाना होकर ७॥ मे देहरादून पहुचे। देहरादूनमे भी ठहरनेकी इच्छा न हुई। बाजार-से गुजरते-गुजरते देहरादूनको झाक लिया। वाजार काफी गदा लगा।

ऐसा लगता है कि एक महीनेके गगा और पर्वतोके ससर्गके कारण मेरी निगाहमे ही फर्क पड गया। थोडी गदगी भी वहुत लगने लगी।

देहरादूनसे हम लोग जिस गाडीसे रवाना होना चाहते थे, वह छूट गई थी, इसलिए उसके वाद दस वजे रातको रवाना होनेवाली गाडी पकडकर दो वजे दिनको लखनऊ स्टेशन पहुचे। यहासे हम दोनो साथी अलग हुए।

श्रीनर्वदाप्रसादजी उसी गाडीसे काशी चले गये और मै रातकी गाडीसे गोरखपुर। जाते समय मेरे साथीने गीताके ग्यारहवे अध्यायका निम्न श्लोक कहकर विदा मागी

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥

अर्थात्---मजाकमें, सोते, बैठते या खाते-पीते यानी इस साथमें तुम्हारा जो कुछ अपमान मुझसे हुआ हो, उसे माफ करना।

मैंने कहा, "भाई, मुझे भी यही कहनेकी इजाजत दीजिए।"

कितनी अच्छी यात्रा थी और कितना अच्छा साथ! अच्छा साथी मनुष्यको बडे भाग्यसे मिलता है।

●

: २३ :

यात्रीके लिए कुछ हिदायतें

स्वास्थ्य

बहुत लोग यात्रामे आरभमे बहुत परेशान रहते है, पूछते रहते है, पढते रहते है क्या सामान ले, कुली कैसे होगे, क्या खर्च होगा, कहा ठहरेगे, क्या खायगे, वीमार पड गये तो क्या होगा, मालूम नही रास्तेमे कैसा साथ मिलेगा। ऐसे लोगोको मै कहना चाहता हू कि इस किताबमें काफी वाते इस सवधमे वतला दी गई है और ऊपरसे इतना और कहना चाहता हू कि यात्राके लिए चल पडनेके वाद सव समस्याए अपने आप हल हो जाती है।

मेरे ख्यालसे इधर यात्रियोको डायरिया (दस्तोकी वीमारी) के पूर्व अजीर्ण होता होगा, फिर कब्ज और तव दस्त। खाने-पीनेकी वनी चीजे दूकानोपर आगे चलकर कम ही मिलती है। पर जो मिलती है, बहुत ही खराव होती है। चलनेके कारण आदमीको जोरसे भूख-प्यास लगती है। आलूकी पकौडिया तथा भुजिया वगैरह खाता है, जव-तव वासी भोजन करता है, साथ ही खूब पानी पीता है। परिणाम-स्वरूप उसका पेट चलने लगता है। इससे आदमी टूट जाता है। मुख्य कारण यह जान पडता है कि घर तो इस दशामे

वह आराम कर लेता है, पर यात्रामे तो डायरिया हो या पायरिया, चले बिना निस्तार नही—रुक सकता नही। घर जाकर भी कुछ लोग पहाडी पेचिश (हिल-डायरिया) बहुत दिनो तक भोगते रहते है। उसकी वजह यह जान पडती है कि इधर तो चाट वगैरह या पोषक पदार्थ कुछ खानेको नही मिलता, पर घर जाकर ऐसी चीजे जोरसे खाते-पीते है, इसलिए अतिसार कुछ दिनो तक उनका पिड नही छोडता। आदमी घर पहुचकर एक-दो दिनका उपवास करनेके बाद कुछ दिनो सिर्फ मट्ठेपर रह जाय तो डायरियासे शीघ्र ही मुक्त हो सकता है।

चलनेमे कठ सूखनेके कारण पानी बहुत पीना पडता है। अधिकतर पानी झरनोका मिलता है। साफ दिखाई देनेपर भी उसमे गदगी मिली रहती है। खूब सघन बुने कपडे से छान-कर और फिटकिरीसे साफ करके, मैल नीचे जम जानेके बाद तब ऊपरका पानी पीना चाहिए। सावधान रहनेपर डायरियाकी सभावना नही रहती। अजीर्ण और कब्जसे बच जाय तो डायरियाकी नौबत न आवे।

रास्तेमे पेट साफ रखनेके लिए दोनो भोजनोके बाद दो-तीन छोटी जौ-हर्रे खा लेना अच्छा रहता है। मुझे तो हर्रेकी आदत नही थी, लेकिन मेरे साथी खाते थे और इसे उन्होने लाभदायक पाया।

सामान

रास्तेके लिए सामान कम, हल्का, दुरुस्त और मजबूत

लेना चाहिए । लोग अक्सर चीजे बिना देखे डाल लेते है और काम पडनेपर वह रद्दी—टूटी-फूटी निकली तो वडा पछतावा होता है । पैसेवाले व्यर्थ वस्तुए भरते है, आवश्यकताका खयाल नही रखते । छाता, छडी, जूते वगैरह अच्छे लेने चाहिए । यहा मिल सकनेवाली वस्तुए वहासे बिल्कुल नही लानी चाहिए । चीजोके मामलेमे वहुत-कुछ एकता रहनेपर भी हर आदमीकी जरूरत अपनी आदत और परिस्थितिके अनुसार अलग-अलग होती है । जो सामान साथ ले उसकी एक सूची रखें ।

एक सामी (नोकदार लोहा) लगी लाठी, अपने कानोतक लवी, पौन इचके लगभग मोटी, साथ रखनी चाहिए । लाठी न इतनी पतली रहे कि हमारा वोझ न सभाल सके, न इतनी मोटी कि उसके वोझसे हाथ दुख जाय । लाठिया हरिद्वारके वाजारमे अच्छी मिलती है, वहासे लेनी चाहिए ।

जूते मजबूत, पर मुलायम चाहिए । वाटाके जूते ठीक काम देते है, पर १५ दिनमे उनका हाल-वेहाल हो जाता है—चिथडे हो जाते है । जूते ऐसे हो जो काटे नही । काटनेवाले जूते यात्राका सारा मजा किरकिरा कर देते है ।

कोई कीमती घडी, जेवर वगैरह साथ न रखे, न जरूरत-से ज्यादा रुपया । नोट एक-एक रुपयेका नया ले तो अच्छा है ।

साथ लेनेवाले जरूरी सामानकी एक सूची

कपडे पहनने तथा ओढनेके—धोती २, कुरता २, वनियान २, लगोट २, रूमाल १, तौलिया छोटा १, पानी छाननेको छनना घन वुनावटका, चादर २—न मोटी न पतली, कवल

२—ओढनेका हल्का पर गरम हो, बिछानेका जरा मोटा, तकिया छोटा १, जूता १ जोडा किरमिचका, लोटा १ हल्का, कटोरी, फाउन्टेन कलम या पेन्सिल, चाकू, कापी, कुछ लिफाफे, कार्ड, घड़ी, बैटरी—कुछ अतिरिक्त सेलो सहित, छाता, लाठी, कुछ छोटी हर्रे, हजामतका सामान, कपडे धोनेका साबुन, लालटेन—अगर कई आदमी हो तो, सुई तागा—अगर दस-बीस सुई और तागेकी गोलिया ले ले तो अच्छा है, रास्तेमे पहाड़ी औरत-बच्चे अक्सर मागते है। बिस्तरे लम्बी रस्सीसे बाधे। रास्तेमे रस्सी और कामोमे भी आ सकती है। रबर क्लाथ ३ फुट लम्बा ६ फुट चौडा—इसमे सब बिस्तरे लपेट दे और रातको सोते समय इसे बिछा ले। दूसरे छोटे सामानोके लिए एक हल्का किरमिचका बैग। गीता, रामायण, यात्रापोथी। कुछ मसाले—नमक, हल्दी, पिसा जीरा, टिंचर।

सावधानी

मार्गमे यात्रियोके बहुत सावधान रहनेकी जरूरत है। बेमतलब किसीसे ज्यादा दोस्ती न जोड़े। अपरिचितके हाथकी वस्तु न खायं। इधर ठग आते कम है, पर बिल्कुल न आते हो, यह नही है।

रास्तेमे कुछ गरजमद यात्री मिलते है, जिनमे कुछ वास्तविक अर्थी होते है, कुछ ठग। उन्हे परखे रहना अच्छा है। मुह किसीको नही लगाना चाहिए। अपनेसे हो सके तो जरूरतमदकी जरूरत अवश्य पूरी करे, पर खुशामदमे रस न ले। दूसरेकी वास्तविक गरज पूरी करनेमे हित है। खुशामद

अच्छी सबको लगती है। कहा भी है, "खुशामदसे खुदा राजी", पर खुशामदमें पडकर हम प्राय गलत रास्तेपर पड जाते है। दुनियामें सही रास्ते जाना हो तो खुशामदसे परे रहना चाहिए— करने और कराने दोनोसे ।

इधरके आदमी प्राय सीधे होते है । दूकानदार भी हुज्जती नही होते । यात्रियोमे कुछ होते है जो बाहर ठगाये हुए होते है या मोल-मुलाईकी आदतवाले अथवा रुपएके मोलकी वस्तु-का अधेली देना चाहते है । यह गलत काम है ।

पहाडी सिपाही तथा अन्य कर्मचारी भी सीधे होते है। डाट-डपट या गाली-गलौजकी आदत उन्हे नही जान पडती ।

चट्टीपरके बनिये भाव प्राय ठीक लेते है। यात्रीको स्वार्थी नही होना चाहिए । किसीके बाकी दाम चुकाकर चले, जिसमे दूसरे यात्रीपर उसे अविश्वासका अवसर न मिले । तै किये हुए पैसोमे व्यर्थ नुक्स निकालकर झझट न फैलावे । अक्सर हम खुद झझट करते है और दोष दूसरेका देते है ।

घाट-बाटमे टट्टी-पेशाव न करे। यत्र-तत्र मलमूत्रका त्याग असभ्यताका लक्षण है। रास्तेसे दूर जगह आडकी देखनी चाहिए। चट्टी वगैरहकी सफाईका पूरा ध्यान रखे ।

चट्टीवालेको बर्तन वापस करते समय माजकर दे । उससे या धर्मशालावालेसे ली हुई चीजे उन्हे सभालकर दे ।

यात्रामे उत्साहकी बडी आवश्यकता है। उस दशामे तो और भी जब कि एक काफिला साथ हो। उसमे हर आदमीको स्वय उत्साहित रहना और दूसरोको रखना चाहिए।

खाना बनाकर खानेमे आलस्य न करे। समय बचाने

या थकानका बहाना करके बासी भोजन न करे।

यहा रास्तेमे किसी पेड, लता या फूलको छूना नही चाहिए, क्योकि कुछ पत्तिया जहरीली होती है, जिनके छूनेसे या लगनेसे थोडी देरतक जलन होती है। ये पत्तिया जगह-जगह बहुतायतसे है। इन्हे बिच्छू-पत्ती कहते है। अगर हम बिना जाने कुछ भी न छूए, न चखे तो हमारा कोई हर्ज न होगा। बेतलब कोई हरकत करते चलना, चचलता और मूर्खताका एक चिह्न ही है।

चलनेमे राजमार्ग (आमरास्ता) चुनना चाहिए। नजदीकके लालचमे कभी 'अबठे' रास्ते नही पडना चाहिए। निकट देखकर लोभ तो होता ही है, पर एक बारकी 'ऊक-चूक' मे सारी कसर निकल जाती है। मारवाडीमे कहा है. "चालबो रस्तको, चाए फेरइ हो, बैठबो भायाको चाए बैरइ हो।"

व्यवहार

रास्तेमे—जीवनमे भी—किसीसे वाद-विवाद या लडाई झगडेमे नही फँसना चाहिए। गभीर और सरल रहकर अपना मार्ग तै करना चाहिए।

रास्तेमे किसीसे बुरा व्यवहार नही करना चाहिए। यो भी नही करना चाहिए, पर रास्तेमे खास तौरसे इससे बचना चाहिए। जिससे काम पडे उससे व्यवहार नम्र और सभ्यतापूर्ण हो। यथाशक्ति जरूरतमंदोके लिए सहायक होना आवश्यक है। लेकिन परोपकारके जोशमें बेमतलब 'उथलधड़ा' या किसीके काममे दस्तदाजी नही करनी

चाहिए। व्यर्थके हस्तक्षेपसे कई वार हम अपने सिर ववाल मोल ले लेते है और सामनेवालेके काममे, वजाय सुविधाके असुविधा पैदा कर देते है। जरा सोच-समझकर देखनेके वाद धीर चित्तसे जो वने करना उचित है। उतावलीमे पडकर कुछ करनेमें लाभके वजाय हानि ही होती है। कहा है—"सहसा विदधीत न क्रियाम्" अथवा "सहसा करि पाछे पछिताही।"

रास्तेमे पडेकी कोई जरूरत नही होती और यमुनोत्री-गगोत्रीमे पहुचनेपर तो पडे मिल ही जाते है।

●

परिशिष्ट

: १ :

रास्तेकी चट्टियां और धर्मशालाए

हरिद्वार			कई धर्मशालाए
सत्यनारायण मदिर	६॥	मील	हरिद्वारसे मोटरवसमे ऋषिकेश जाते समय रास्तेमे यह मदिर देखा जा सकता है। यहा मोटरे रुकती है।
ऋषिकेश	६॥	,,	
टेहरी	४०	,,	अच्छा कस्वा है, मदिर, धर्मशालाए है। सव चीजे मिलती है। गगामे नहानेका सुभीता है।
पीपलचट्टी	५	,,	
भल्डियाना	६॥	,,	धर्मशाला। मसूरी होकर भी एक रास्ता यहातक आया है। हम लोग लौटते समय इसी रास्ते मसूरी गये। गंगा नीचे है।
छाम	५	,,	धर्मशाला
नगुन	५	,,	धर्मशाला, गगाजी चट्टीसे विल्कुल नजदीक है।

धरासू	५	मील	धर्मशाला। हम गये तब ऋषिकेशसे टेहरी तक मोटरबस थी, अब धरासू तक हो गई है। गंगा-स्नानका सुभीता है। अच्छी जगह है। यहींसे यमुनोत्रीको रास्ता अलग होता है।
कल्याणी	४	,,	
कुमराणा	५	,,	
सिलक्यारा	५	,,	धर्मशाला।
डडोल गांव	६	,,	यहां बाईं ओरका रास्ता शिमला गया है।
शिमली	१॥	,,	
गंगानी	२॥	,,	धर्मशाला यमुनाके किनारे।
यमुनाचट्टी	८	,,	
उजली	७	,,	धर्मशाला यमुनाके किनारे।
हनुमानचट्टी	६	,,	धर्मशाला यमुनाके किनारे।
खरसाली	४	,,	धर्मशाला यमुनाके किनारे, (पंडोंका गांव)
भैरवघाटी	२	,,	भैरवनाथकी मूर्ति।
यमुनोत्री	१॥	,,	दो धर्मशालाएं। ठंडक खूब है। धर्मशालामें कंबल मिल जाते हैं।

यमुनोत्रीसे वापस

गंगानी	२४	मील

शिमली	२॥ मील	
सिगोट	९ ,,	धर्मशाला ।
नकुरी	३ ,,	भागीरथीके किनारे धर्मशाला।
वरुणा-भागीरथी-सगम	४॥ ,,	
उत्तरकाशी	२ ,,	कई धर्मशालाए, क्षेत्र, डाकखाना अच्छा बाजार । बहुत मनोरम स्थान है ।
नगाणी	२॥ ,,	असि सगम
मनेरी	७॥ ,,	धर्मशाला
माल्ला	६ ,,	
भटवारी	२ ,,	यहा तीन धर्मशालाए है और यहीसे एक रास्ता बूढे केदार, त्रियुगीनारायण होकर केदारनाथ, बद्रीनाथ गया है ।
गगनानी	९ ,,	बडी धर्मशाला। ऋषिकुड (गर्म पानी)
लोहारी नाग	४ ,,	धर्मशाला
सुक्की	५ ,,	धर्मशाला
झाला	२ ,,	धर्मशाला
हरसिल	३ ,,	धर्मशाला। बहुत अच्छी जगह ।
धराली	२ ,,	दो धर्मशालाए ।
जेगला	३ ,,	यहासे डेढ मीलके बाद एक रास्ता भूटान, मानसरो-

वरको गया है।

भैरवघाटी	३ मील	
गंगोत्री	६ ,,	

गंगोत्रीसे वापस

भटिडयाना तक का रास्ता वही इसके बाद—

थालवार भटिडयानासे	५ मील	धर्मशाला। जलकष्ट।
ठा	३ ,,	जलकष्ट
काणाताल	२ ,,	धर्मशाला।
धनोल्टी	५ ,,	पानीकी सुविधा है। धर्मशाला है।
झालकी	८ ,,	जलकष्ट। धर्मशाला है।
मसूरी	६ ,,	कई धर्मशालाए और होटल है।

: २ :

स्वामी राम

बारहवे अध्यायम स्वामी रामका उल्लेख आया है। हिमालयसे उनका गहरा सबध था। उसीकी गोदमे उनकी मृत्यु हुई। यहा स्वामी राम और उनकी रचनाओकी कुछ जानकारी देना उचित जान पडता है।

पजाबके मुरारीवाला (जिला गुजरावाला) ग्राममे कार्तिक शुक्ला १ सवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) को रामका जन्म हुआ। सन् १८९५मे पजाब-यूनिवर्सिटीसे उन्होने गणितमे एम० ए० किया। लाहौरके फोरमैन कालेजमे दो साल गणितके अध्यापक रहे। उसी समय उनका विवाह हुआ। स्त्रीसे दो पुत्र, एक कन्या हुई। स्वामी राम बडे अध्ययनशील व्यक्ति थे। सस्कृत, फारसी और अग्रेजीमे दर्शनशास्त्रके प्राय सब बड़े-बडे ग्रथ पढ गये थे। दर्शनशास्त्र उनके जीवनमे उतर गया था। इसी समयके लगभग किसीने उनसे नौकरीके लिए कहा तो उसे जवाब मिला, "मैने फसल बेचनेके लिए नही, बाटनेके लिए बोई है।" वह अत्यन्त सरल स्वभाव, निरहकारी और मधुर प्रकृति थे। सदा मस्त रहते थे, उनके चेहरेपर हमेशा मुस्कराहट खेलती रहती थी।

शुद्ध आचार, शुद्ध व्यवहार और शुद्ध आहारकी वह साक्षात् मूर्ति थे। खूराकमे उन्हे दूध अधिक प्रिय था। अमरीका आदि देशोमे बहुत कष्ट होनेपर भी उन्होने कभी कोई अभक्ष्य

खा लेते। किसीके इसका कारण पूछनेपर जवाब देते, "रस और स्वाद चाहता तो घर क्यो छोडता।"

सदा सुबह चार बजे उठते थे। जमीन पर सोना पसद करते थे। पहनने, ओढने, बिछानेका सामान बहुत कम रखते थे। स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि अमरीकामे एक बार सिपाहियोके साथ तीस मीलकी पैदल दौडमे उनसे आगे बढ गये थे और इसी प्रकार समुद्रकी २० मीलकी तैराकीमे भी आगे रहे थे। वह सदा व्यायाम करते थे। दवा खाना उन्हे बिल्कुल नापसद था। कभी खाली न बैठते थे। शरीरको कभी शिथिल न होने देते थे।

उन्हे किसीने दुशाला दिया तो वह ओढ लिया और कंबल मिल गया तो उसीमे सतुष्ट रहे। किसीके कोई कीमती भेट देनेपर जरूरत न होती तो किसीको दे देते या फेक देते। एक कमडलके सिवा कुछ साथ न रखते थे और कभी-कभी उसे भी फेक देते थे। बडे एकातप्रिय थे। मान-अपमानका कोई ध्यान न था। पहाडो और जगलोमे बिचरना उन्हे बहुत पसंद था। एक बार उनके सामने पांच जगली भालू आ गये। पर उन्हे डर न लगा, क्योकि उनके मनमे देहाध्यास ही न था। उनके आख उठाकर देखते ही भालू भाग गये। काफी समयतक घोर जगलोमे रहनेपर भी कभी किसी जगली जीवने उन्हे नुक्सान नही पहुचाया।

वह सन् १९०२ मे जापान होकर अमरीका गये। वहा दो साल रहे। कैलीफोर्नियाके विद्वानोने उनके सामने स्वीकार किया कि "आपके तत्त्व साक्षात्कारके तेजके सामने हमारी

कार्तिक संवत् १९६२ में हरिद्वारसे स्वामी राम वशिष्ठा-श्रम[1] गये। वहां रहते समय उन्होंने जो लिखा था, वह संसारके लिए एक अनूठी देन है। एक स्थलपर वह कहते हैं, "प्रभो, अब मुझसे दो-दो बातें नहीं निभ सकतीं। खाने-पीने, कपड़े, कुटियाका भी ख्याल रखूं और दुलारेका मुख भी देखूं। चूल्हेमें पड़े पहनना, खाना, जीना, मरना, इनसे मेरा निबाह नहीं होता। मेरी तो मधुकरी हो तो तुम, कफनी हो तो तुम, औषधि हो तो तुम, शरीर हो तो तुम, आत्मा हो तो तुम। शरीरादिको पड़ा रखना चाहते हो तो पड़ा रहने दो, उठाना चाहते हो तो उठा लो।"

सन् १९०६ में स्वामी राम वशिष्ठाश्रमसे टिहरी आये और गंगातट पर सिमलासुमें रहे। कार्तिक कृष्णा १३ संवत् १९६३ को गंगास्नान करने गये और वहीं उन्होंने जल-समाधि ले ली।

---

[1]यह आश्रम टेहरीसे ५० मील दूर पर था।

: ३ :

स्वामी रामकी पद्य-रचनाके कुछ नमूने

स्वामी रामकी रचनामेंसे कुछ चुनी हुई कविताएं यहां दी जा रही हैं। इनमेंसे हरएकमें रामका रंग मौजूद है।

(१)

नदियाँ-दी[1] सरदार, गंगारानी !
छीटे जलदे[2] देन[3] वहार, गंगारानी !
सानू रख जिंदडी-दे नाल[4], गंगारानी !
कदे वार कदे पार[5], गंगारानी !
सौ सौ गोते गिन गिन मार, गंगारानी !
तेरियाँ लहरा राम अस्वार, गंगारानी !

(२)

मना ! तैंने राम न जानिया रे, राम न जानिया रे।
जैसे मोती ओसका रे, तैसे यह संसार,
देखत ही को झिलमिला रे. जात न लागी वार। मना ! तैंने
सोनेका गढ़ लंक बनाया, सोनेका दरबार,
रत्ती एक सोना न मिलिया रे, रावन मरती वार। मना ! तैंने.

---

[1] नदियोंकी। [2] जलके। [3] देते हैं। [4] मुझे अपने साथ रख।
[5] कभी इस पार, कभी उस पार।

(५)

गर न्यामत[1] खाता रहा, दौलतक दस्तरख्वान[2] पर,
मेवे, मिठाई, दूध, घी, हलवा, ओ तुर्शी[3] और शकर ॥
या बाध झोली भीखकी, टुकड़ेके ऊपर धर नजर,
होकर गदा[4] फिरने लगा, कूचा-बकूचा दर-बदर।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ, और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥१॥

था एक दिन वह धूमका, निकले था जब असवार हो,
हरदम पुकारे था नकीब[5], आगे बढो, पीछे हटो।
या एक दिन देखा उसे, तनहा पडा फिरता है वह,
पस क्या खुशी क्या नाखुशी, यकसा है सब ऐ दोस्तो !
गर यूं हुआ तो क्या हुआ और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥२॥

या इशरतों[6] के ठाठ थे, या ऐशके असबाब थे।
साकी, सुराही, गुलबदन[7], जाम[8] वो शराबेनाव[9] थे ॥
या बेकसीके दर्दसे, बेहाल थे बेताब थे।
कुछ रह नही जाता मिया ! आखिरको नक्शे आब[10] थे ॥
गर यूं हुआ तो क्या हुआ, और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥३॥

(६)

रहिए अब ऐसी जगह चलकर, जहा कोई न हो
दुश्मनें-जॉ[11] हो न कोई, मिहरबॉ[12] कोई न हो।

---

[1]बढिया चीजें [2]मेज [3]खट्टा [4]फकीर [5]चारण [6]सुख-भोग [7]परम सुन्दर [8]प्याला [9]भरा हुआ [10]पानीका बुलबुला [11]जानका दुश्मन [12]कृपालु ।

पड़िये गर बीमार, तो आकर कोई पूछे न बात,
और गर मर जाइये, तो नोहा-ख्वा[1] कोई न हो ॥

(७)

जीनेका न अंदोह[2], न मरनेका जरा गम।
यकसा है उन्हे, जिंदगी और मौतका आलम[3] ॥
वाकिफ न बरससे, न महीनेसे वह इकदम,
शबकी[4] न मुसीबत, न कही रोजका मातम[5] ।
दिनरात घडी पहर, मह्व[6] सालमे खुश है,
पूरे है वही मर्द, जो हर हालम खुश है ॥१॥
कुछ उनको तलब घरकी न बाहरसे उन्हे काम,
तकिया की न ख्वाहिश है, न बिस्तरसे उन्हे काम।
अस्थलकी हविस दिलमें न मदरसे उन्हे काम,
मफलिस[7]से न मतलब, न तवगरसे[8] उन्हे काम।
मैदानमे, बाजारमे, चौपडमे खुश है,
पूरे है वही मर्द, जो हर हालमें खुश है ॥२॥

(८)

न है कुछ तमन्ना[9] न जुस्तजू[10] है
कि वहदत[11] मे साकी[12] न सागर[13] न बू[14] है

---

[1]शोक करनेवाला [2]दुख [3]दशा [4]रातकी [5]शोक [6]मग्न [7]गरीबमें [8]धनीसे [9]कामना [10]तलाश [11]एकता [12]शराब पिलानेवाला [13]प्याला [14]गंध ।

मिले दिलमे आखे जभी मारफत[1] की
जिधर देखता हूं सनम[2] रूबरू[3] है।
गुलिस्तामे जाकर हर इक गुलको[4] देखा
तो मरी ही रगत है, मेरी ही बू है॥
मेरा तेरा उठा, हुए एक ही हम,
रही कुछ न हसरत[5] न कुछ आरजू[6] है॥

---

[1]ईश्वरी ज्ञान [2]प्यारा [3]सामने [4]फूलको [5]लालसा
[6]इच्छा